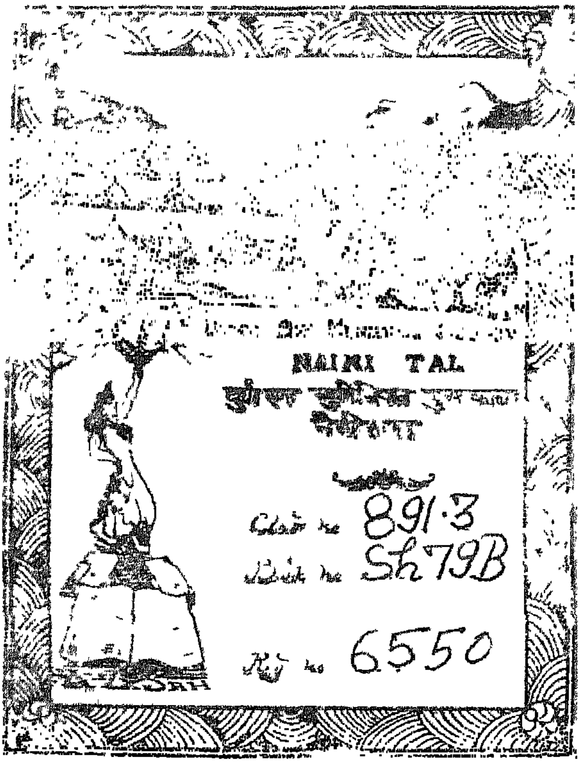


भाभी

लेखक

शौकत थानवी

अनुवादक

एन० ख़ानक़ाही

प्रकाशक—

ऊषा प्रकाशन

उर्दू बाजार, देहली

प्रकाशक :
ऊषा प्रकाशन
उर्दू बाजार, दिल्ली

प्रथम बार—१९६०

मूल्य—४.५० नए पैसे

मुद्रक :
राइजिंग सन प्रेस
बावड़ी बाजार, दिल्ली

BHABI SHAUKAT THANVI Rs. 4/50 N.

भूमिका

मरने के लिए कुछ सीखना नहीं पड़ता, हां, जीवित रहने के लिए बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता होती है। जीवित रहना वास्तव में एक बड़ी कला है, कठिन और परीक्षणात्मक कला। ठीक इसी प्रकार हंसने के लिए भी किसी योग्यता की आवश्यकता नहीं, हां, दूसरों को 'हंसाना' निःसंदेह एक कला है और महान कला। इसके लिए जिस परिश्रम, जिस योग्यता, जिस बुद्धि और जिस विवेक की आवश्यकता है वह हंसने के लिए नहीं। हंसना पूर्णतया सीधा साधा, सपाट और साधारण कार्य है जबकि 'हंसाने' के लिए एक विशेष प्रवीणता और शिल्प की आवश्यकता है। 'हंसना' मानव-प्रकृति की एक साधारण और नैसर्गिक अभिव्यक्ति है। किन्तु, 'हंसाना' एक कला है; एक महत्वपूर्ण कला। यही कारण है कि हम सब हंसते हैं परन्तु हंसाने की कला नहीं जानते। कम ही लोग ऐसे होते हैं जो न केवल हंसाने की कला से परिचित होते है, वरन् इस कला मे प्रवीण भी होते हैं। तनिक सोचिए कि यदि हंसना मानव की प्रकृति न होती और हंसाना एक कला का रूप ग्रहण न कर गया होता तो दुखों से दग्ध इस जीवन में क्षण भर की प्रसन्नता भी कैसे प्राप्त हो पाती। यही कारण है कि हंसने और हंसाने का काम मानव के आदि जीवन से अब तक किसी न किसी रूप में जारी रहा हैं। जीवन, प्रकृति और समाज की अन्यायी शक्तियों के सन्मुख मानव साहस पूर्वक हंसता और मुस्कराता रहा है। और उसे हंसाने वाले पैदा होते रहे हैं। शताब्दियों के हेर फेर में मानव ने अपने श्रम, अपने विवेक, अपनी सभ्यता तथा संस्कृति और अपने साहित्य की विकास में गति के साथ इस 'हंसने और हंसाने' के कार्य

को एक कला का रूप प्रदान किया। और यह कला प्रगति करते करते साहित्य में 'व्यंग्य विनोद' के नाम से एक भिन्न शैली का रूप ग्रहण कर गई। वस्तुतः एक युग वह था जब चार व्यक्ति मिल कर एक दूसरे से हंसी, मजाक, और ठिठोली करते थे, हंसते और हसाते थे। यह आदि तथा व्यक्तिगत रूप था, इस हास्य का, जिसने बाद में एक कला और फिर एक सामाजिक कला का रूप ग्रहण किया. यहां पहुंच कर इस कला के दो पहलू सामने आ जाते हैं। एक पहलू है निजी और व्यक्तिगत जिसमें आम तौर पर लोग हंसते ही रहते हैं। दूसरा पहलू है सामाजिक और साहित्यिक। यह वह पहलू है जहां हंसने हंसाने का कार्य एक महान कला का रूप ग्रहण कर लेता है। और आज हमें इसी कला के बारे में कुछ बातें कहनी हैं।

विश्व के एक महान दार्शनिक ने 'व्यंग्य तथा विनोद' की परिभाषा देते हुए लिखा था कि इस कला को मधुमक्खी की भांति होना चाहिए। अर्थात मधु जैसा मधुर, मक्खी जैसा नन्हा आकार और तड़पा देने वाला डंक, यह तीन अंग हैं एक अच्छे व्यंग्य के, तभी उसे एक महान कला का पद दिया जा सकता है।

जिस प्रकार हम निजी और व्यक्तिगत जीवन में अपने वातावरण, अपने पड़ोस, अपने मित्रों और आस पास के लोगों के बेढंगे तौर तरीकों, चेहरों मोहरों, बातों और रस्मों पर हंसा करते हैं। बिल्कुल इसी तरह जब हम समाज के घिनावने और हास्यास्पद पहलुओं पर हंसते हैं और इस उद्देश्य से हंसते हैं कि इन पहलुओं का घिनौनापन दूर हो जाए, तो 'हास्य' एक कला का रूप ग्रहण कर लेता है। परन्तु परोक्ष रूप में यह काम जितना आसान है, क्रियात्मक रूप में उतना ही कठिन। यह एक दीवाने की तलवार है जो शत्रुओं की सैन्यपंक्तियों पर वार न करके कभी कभी अपने को भी घायल कर सकता है। यही कारण

है कि 'व्यंग्य तथा हास्य' को एक कला के रूप में बरतने में बड़ी योग्यता तथा दक्षता की आवश्यकता होती है। और कम ही लोग ऐसे हैं जो इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं।

उर्दू गद्य में हास्य लेखन का इतिहास यों तो काफी पुराना है। गालिब के पत्र भी उत्तम हास्य से परिपूर्ण हैं, वे रोचक भी है और ऊंचे साहित्य के नमूने भी। गालिब की भांति उस युग के कुछ लोग और भी ऐसे मिलेंगे जिनके यहां बाकायदा नहीं तो अस्त व्यस्त ही सही हास्य तथा व्यंग्य की झलकियां नजर आयेंगी। किन्तु इन सबका स्तर सामाजिक नहीं निजी और व्यक्तिगत है। गालिब अपने पत्रों में जब व्यंग्य के वार करते हैं या हास्यपूर्ण शैली में लिखते हैं तो उनका रूख प्रायः अपने व्यक्तित्व अथवा उनके अपने मित्र, शत्रु होते है। उनके यहां कला की सामाजिकता का प्रभाव नहीं मिलता। यही दशा उस युग के अन्य व्यक्तियों की भी है। परन्तु यह कोई आश्चर्य अथवा विस्मय की बात नहीं है। इसलिए कि हम जिस युग के कलाकारों की बात कर रहे हैं उसकी सामाजिक तथा ऐतिहासिक दशा ही ऐसी थी। और इससे आगे पग बढाना सम्भव ही न था। यह बात भी कुछ कम नहीं कि उन लोगों ने व्यंग्य तथा हास्य को साहित्य जगत में एक स्थाई कला का रूप दे दिया और इसकी प्रारम्भिक रूप रेखा अंकित की। वह हमारे साहित्य की बहुमूल्य निधि है और इसी के द्वारा यह सम्भव हुआ है कि हम इस कला की धार को अधिक तेज और तीखा करें।

अस्तु ! व्यंग्य तथा हास्य को उर्दू साहित्य में जब एक कला का आसन दिया गया तो वह युग था भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना का। पश्चिम की साहित्यिक प्रवृत्तियों ने हमारे साहित्य पर गहरे प्रभाव डाले है। और नई नई राहों से परिचित कराया है। हास्य साहित्य का

प्रथम दौर वास्तव में 'अवध पंज' वाले मुंशी सज्जाद हुसैन से आरम्भ होता है। यही वह युग है जब हास्य-साहित्य में एक बड़ी क्रांति हुई और इस कला को सामाजिक दोषों और गन्दगियों के निषेद्ध का साधन बनाया गया साहित्य में एक दूसरे के विरुद्ध फब्तियां कसने की अपेक्षा अब इस कला को प्रयोग किया जाने लगा, समाज, राजनीति, अर्थ-व्यवस्था और जीवन के हास्यास्पद अंगों के विरुद्ध। यहीं से हमारे सामने वे नाम आने लगते हैं जिन्होंने उर्दू के हास्य-साहित्य में महान कार्य प्रतिपादित किए हैं और इसे एक जीवित और गतिवान कला का स्वरूप प्रदान किया।

इन्हीं नामों में से एक नाम 'शौकत थानवी' का है। जिनका यह रोचक उपन्यास 'भाभी' आपके सामने है। शौकत थानवी विभाजन के उपरान्त पाकिस्तानी हो गए हैं परन्तु साहित्य के भूगोल में विभाजन नाम का कोई परिच्छेद नहीं है। वे जितने पाकिस्तान में लोकप्रिय हैं इतने ही भारत में भी। उनका नाम उर्दू के हास्य लेखकों की प्रथम पंक्ति में है। उनकी सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उर्दू पढ़ने लिखने वालों के वर्ग में जितना उन्हें पढ़ा जाता है किसी अन्य हास्य लेखक को उतना नहीं पढ़ा जाता। और जिस प्रकार वे उर्दू पाठकों में बहुत अच्छी तरह विख्यात हैं इसी प्रकार हिन्दी पाठकों में भी अप-रचित नहीं हैं। उनकी बहुत सी कहानियां, निबन्ध और उपन्यास हिन्दी में अनुवाद होकर लोगों तक पहुँच चुके हैं और उर्दू वालों की भांति हिन्दी में भी उन्हें इसी उत्साह के साथ पढ़ा जाता है। उनकी कला का महानता का रहस्य यह है कि वे मसखरे पन और ठठोल बाज़ी जैसे ओछे अस्त्रों से पाटकों को हंसने पर मजबूर नहीं करते, न ही वे यह प्रयत्न करते हैं कि बात से बात पैदा करके वाक्य प्रहारों के द्वारा या शब्दों से गुदगुदी पैदा करके पाठकों को ठहाका लगाने पर मजबूर

करें। वे अपने उपन्यासों में ऐसे पात्रों को पेश करते हैं जो सामाजिक आधार पर बे ढंगे, बे तुके और हास्यास्पद हैं। शौकत थानवी एक दक्ष शिल्पी की भांति उनके इन बे तुके पहलुओं को इस सुन्दरता के साथ उजागर करते हैं कि पढ़ने वालों को ऐसा अनुभव होता है जैसे वे हंसने पर मजबूर नहीं किए जा रहे। वरन् स्वयं ही हंसने पर मजबूर हैं। वे विशेषतया अपने उपन्यासों में ऐसा वातावरण पैदा करने में दक्ष हैं जो रोचक और आनन्दपूर्ण होता है और एक साधारण पाठक अपने को इस वातारण में अकेला और अपरिचित अनुभव नहीं करता। बड़ी बात यह होती है कि वे भद्दे, भौंडे, और मसखरे टाइप के पात्र प्रस्तुत करके हास्य-उत्पन्न करने का प्रयत्न नहीं करते। वरन् वे पात्रों की उस चाल ढाल, उन आदतों और तौर तरीक़ों को प्रस्तुत करते हैं जिनसे वे भली प्रकार परिचित होते हैं और जो व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों रूपों में हास्यास्पद होते हैं। शौकत का कमाल यह है कि वे इनके चरित्र को बड़ी सचाई और और सफ़ाई के साथ पेश करने की योग्यता रखते हैं। वे केवल हंसाते ही नहीं वरन् हंसी हंसी में उन बातों पर सोचने को बध्य कर देते हैं जिनकी हम साधारणतया अपेक्षा कर जाते हैं और यही उनकी कला की महानता एवं उच्चता है।

शौकत प्रायः अपने पात्रों को मध्यमवर्ग से चुनते हैं और यह उचित भी है, क्योंकि वे स्वयं भी मध्यमवर्ग के ही व्यक्ति हैं। वे अपने वर्ग की हर ऊंच नीच, हर बुराई भलाई और प्रत्येक दांव पेंच से भली प्रकार परिचित हैं। वे अपने ही जैसे व्यक्तियों की आत्मा में उतर जाने की योग्यता रखते हैं। इसीलिए उन्हें वे समस्त तथ्य प्रगट रहते हैं जिन्हें लोग कई कई आवरणों के नीचे दबाए रखते हैं।

'भाभी' उनका एक नवीन तथा उत्तम उपन्यास है। इसके सम्बन्ध में अधिक कुछ कहना आवश्यक नहीं, इसलिए कि शौकत के साहित्य को

सम्बन्ध में जो आवश्यक बातें थीं वे व्यक्त की जा चुकी हैं। अब पाठकों पर यह बात आधारित है कि वे यह देखें कि शौकत का यह उपन्यास कला की इस कसौटी पर कहा तक पूरा उतरता है! हमें विश्वास है कि इस उपन्यास में पाठकों को वे समस्त बातें मिलेंगी जिनकी वे शौकत से आशा करते हैं और यह उपन्यास उर्दू की भांति हिन्दी पाठकों में भी पूर्णतया पसन्द किया जायेगा।

—एन० खानक़ाही

"जिये मेरा भाई गली-गली भौजाई ।"

यह कहावत तो न जाने कब से सुनते आ रहे हैं, मगर रियाज भाई ने इसको सच कर दिखाया। जब कभी उनसे मिले एक नई स्त्री के साथ मिले और हर बार इस नई स्त्री से यह कहकर परिचय कराया कि—"आप से मिलये यह आप की भाभी हैं।"

इस प्रकार यह शायद आठवी भाभी थीं—जी नहीं, आठवी तो वह थीं जिनसे पिछले साल कोह मरी में मिलाया था और जो इस परिचय पर ऐसी बिगड़ी थीं कि रियाज भाई को लेने के देने पड़ गए थे। किस्सा दरअसल यह था कि वह भाभी उस समय तक केवल पचास प्रतिशत भाभी थीं, अर्थात् यह कि रियाज भाई तय कर चुके थे कि उनके साथ शादी करेंगे। हाँ स्वयं उन श्रीमतीजी का सहमत होना और बाकी था। आप मारे अपनायत के आत्म-विश्वास से काम लेकर परिचय करा बैठे—"इन से मिलये यह आपकी भाभी हैं।"

और इनसे पहले कि मैं अपनी प्रसन्नता प्रकट करूँ, श्रीमती जी बारूद के गोले की तरह फट पड़ीं, "क्या मतलब, आप तो हद से बढ़े जा रहे हैं?"

रियाज भाई ने सचमुच गड़बड़ाकर कहा—"ओ ! मेरा मतलब यह था कि........."

उन साहबा ने बदस्तूर कड़े तेवरों से कहा—"आपका मतलब गया जहन्नुम में, आपको हक क्या था मेरी इस तरह तौहीन करने का। मुझे

उम्मीद न थी कि जरा-सा मुँह लगाना आपको इस तरह बेकाबू कर देगा।"

यह कह कर वह एक फुंकारती हुई नागिन की तरह पगडंडियों पर लहराती हुई तेजी से आगे बढ़ी। रियाज भाई को सच-मुच जैसे साँप ही तो सूँघ गया। श्रीमती जी के आँखों से ओझल हो जाने के बाद वह खिसियानी हँसी-हँसकर बोले—"अच्छा ही हुआ, ऐसी तेज मिजाज लड़की से तो एक दिन भी निर्वाह होना कठिन था।"

अल्लाह जाने इसके बाद रियाज भाई ने उन साहबा को मनाया या वही उनके इस आठवे रोमान का ड्रापसीन था।

हाँ, तो इस हिसाब से यह आठवीं नहीं बल्कि नवीं भाभी थीं, और रियाज भाई अब इसका अधिकार रखते थे कि उन्हें कई सारी स्त्रियों का पति होने के नाते नौशेरवाँ कहा जाए। परिचय तो उन्होंने करा दिया कि—"आपसे मिलये यह आपकी भाभी हैं।" परन्तु मैं अभी सिमटा हुआ इस प्रतीक्षा में खड़ा था कि कहीं वह श्रीमतीजी भी इस परिचय पर पहली की भाँति बिगड़ न पड़ें, पर उन्होंने बिगड़ने की बजाए कुछ मुस्कराकर और कुछ लजाकर अपने दुपट्टे के आँचल से खेलना शुरू कर दिया। यह देखकर मुझे उनके भाभी होने का विश्वास हो गया, और मैंने उनसे वही बात कही जो कोह मरी वाली न हो सकने वाली भाभी से कहते-कहते रुक गया था—"बड़ी प्रसन्नता हुई आपको देख कर।"

रियाज भाई ने कहा—"अभी कहाँ हुई है प्रसन्नता, वह तो तब होगी जब यह तुम्हें अपना महमान बनाकर तुम्हारे सत्कार आदि का सिलसिला आरम्भ करेंगी।"

और तुरन्त उन भाभी से सम्बोधित होकर बोले—"नाहिद यह मेरे इस भरी दुनिया में तनहा मित्र हैं। बचपन के साथी। हम दोनों साथ खेले, साथ पढ़े और सदा एक-दूसरे के दुःख-दर्द में शरीक रहे। मगर अब यह दिन देखने को मैं जिंदा रह गया था कि इन्हें पता था कि मैं कराची में हूँ और

लाहौर से आकर स्थान किया होटल में—शर्म भी नहीं आई तुम को शहाब !"

नाहीद भाभी ने कहा—"वाकई यह तो बड़ी ज्यादती है आपकी शहाब भाई।"

मैंने कहा—"भाभी मुझे मालूम तो था कि यह हजरत कराची में हैं पर यह ठहरे सैलानी किसम के आदमी। छलावे का-सा जीवन है इन का। आज यहाँ तो कल वहाँ। अतः मैंने यही निश्चय किया कि होटल में ठहर कर पहले इस बात का पता लगाऊँगा कि यह हजरत हैं भी क़राची में।"

रियाज भाई ने कहा—"टेलिफोन करके जब मालूम कर लिया तो भी नशराफ लाए हैं बिना सामान के।"

नाहीद भाभी ने कहा—"हम लोग चलकर अभी सामान उठा लाएँगे।"

रियाज भाई बोले—"नहीं साहब कौन जाने क्या उद्देश्य है इनका। मुमकिन है होटल में ही ठहरना चाहते हों।"

मैंने बजाए रियाज भाई के नाहीद भाभी से कहा—"अब यहाँ आकर मैंने देख लिया है कि आपके घर में मेरी खपत हो सकती है अब मैं स्वयं अपना सामान उठाए लाता हूँ।"

रियाज भाई बोले—"अगर कभी को घर छोटा होता तो इनको बरामदे में ठहराना पड़ता, इनका सामान इनकी चारपाई के नीचे रखना पड़ता, तो यह हजरत होटल ही में रहते।"

मैंने नाहीद भाभी से कहा—"भाभी इनको समझाइये कि गुंजायश सिर्फ घर ही में नहीं दिल में भी देखी जाती है। साफ बात यह है कि मैंने कभी आपको देखा नहीं था, मुझे कुछ पता न था कि किस रंग-ढंग की स्त्री हैं, पति के मित्रों से लिल्लाही बुग्ज रखने वाली है या ऐसी हँसमुख और नम्र भाव की जैसी आप इस समय दिखाई देती हैं। यदि मैं सामान से लदा-

फंदा मुंह उठाए चला आता और मेरा स्वागत करने के बाद आप दोनों मियाँ-बीवी में चोरी-छुपे जूता चल जाता कि क्या हमारा ही घर हर आस्मानी बला के लिए रह गया है, जिसे देखो चला आ रहा है हमारी शामत बनकर तो बताइये कितना अनुचित होता मेरा यहाँ ठहरना।"

रियाज भाई इस बात से कुछ घबरा-से गए और नाहीद भाभी से मुझे अपनी ओर खींचते हुए बोले—"नाहीद! इनके लिए वह मेरे कमरे से मिला हुआ कमरा ठीक करा दो। मैं अभी आया इनका सामान लेकर।"

और मुझे बाहर लाकर कार स्टार्ट करके बोले—"हो बड़े मन के काले -- अब तक भूले नहीं शेहनाज की उस बदतमीजी को!"

अब उनके याद दिलाने से वह घटना मुझे याद आई वर्ना मैंने तो योंही बात-बात में एक बात कह दी थी। रियाज भाई ने जो घटना याद दिलाई वह यह थी कि पाकिस्तान की स्थापना से पहले जब वह लखनऊ में रहते थे और युग था इनकी पत्नी नम्बर चार शेहनाज का। उस वक्त मैं भोपाल से आकर उनके यहाँ ठहर गया था और मुझे अपने घर ठहरा कर यह बेचारे ऐसी मुसीबत में ग्रस्त हुए थे कि कुछ न पूछिये। शेहराज ने उनका नाक में दम कर दिया था। जहाँ वह अन्दर गए घर वाली ने उनकी टाँग ली। यह कहाँ के मुफ्तखोरे, खुदाई फौजदार, मान-न-मान मैं तेरा मह्मान बनकर आ जाया करते हैं, और जब श्रीमती जी से यह फटकारें सुनकर बाहर आते तो मुझ से यही कहते थे—"तुम्हारी भाभी पूछ रही थी कि शहाब भाई को कोई तकलीफ तो नहीं है।"

मगर एक दिन यह झगड़ा ज्यादा बढ़ गया और रियाजभाई और उनकी बेगम दोनों के चीखने की ऐसी आवाज आई कि जब मैंने सुना तो पता चला कि भाभी साहबा जो कसीदा पढ़ रही थी उसका प्रशंसित मैं ही हूँ। आखिर रियाजभाई ने भी आकर इसकी तस्दीक कर दी, बोले—इस औरत ने नाक में दम कर दिया है। मेरे यार-दोस्त और मेरे सारे सम्बन्धियों से जल...

है। अब तुम आए हो तो अंगारों पर लोट रही है। खैर उससे तो मैं समझ लूँगा, चाहता यह हूँ कि तुम मेरे इस विरोध में शरीक हो जाओ कि होटल में जाकर ठहरो। होटल में भी तुम मेरे ही महमान रहोगे। अत: मैं उसी वक्त होटल में आ ठहरा। रियाजभाई यह समझे थे कि मैं इस घटना की याद दिलाना चाहता हूँ, जब कि यह बात तो उनके याद दिलाने से मुझे अब याद आई है। मैंने तो योंही एक बात कह दी थी। रियाजभाई ने बड़ी ताकीद के साथ कहा—"मैं तो डर गया था कि तुम कहीं वही किस्सा न छेड़ बैठो। नाहीद के सामने पिछली कोई बात न कहना और न आँकड़े गिनवाने बैठ जाना। एक बात जरूर है यार! कि जीवन का आनन्द आया है तो अब आया है। जिस जीवन साथी के लिए सारी जिंदगी भागता रहा और जिसकी खोज में भटकता फिरा वह दरअसल अब मुझे मिली है।"

मैंने कहा—"मगर सुरैया भाभी के बारे में भी जनाब की राय यही थी।"

रियाज भाई ने बेपरवाही से जवाब दिया—"वह बकवास थी मेरी। ऐसी खतरनाक औरत तो देखी न सुनी, यही अच्छा हुआ कि जिन्दा छोड़ दिया मुझे!"

मैंने कहा—"और वह कहाँ है यास्मीन भाभी जिन्हें आप विश्व-निर्वाचन कहा करते थे।"

रियाज भाई ने तुरन्त उत्तर दिया—"वाहियात, बिलकुल वाहियात। गलत औरत थी वह भी, उसने जानबूझ कर मुझे हाथों से खोया और ढूँढती फिरती है चौखट-चौखट। मगर छोड़ो यह बेहूदा किस्से! मुझे मेरी खोज का फल मिल गया। मैं प्रशंसा नहीं कर सकता तुम्हारी इन भाभी की। सूरत तो तुम देख ही चुके हो, स्वभाव मुझ से पूछो। सच कहता हूँ कि मैं कबका मर चुका होता अगर यह नया जीवन लेकर न आ जातीं। लखपति माँ-बाप की इकलौती बेटी हैं।"

सौ बातों की एक बात तो अब कही रियाज भाई ने। वास्तव में वह सदा ही व्यापारी दृष्टिकोण से शादियाँ करते रहे हैं और न जाने कितने खाते-पीते घरानों की लड़कियों को खा-पीकर चट कर गए हैं। यह कोठी, यह मोटर, यह ठाठ-बाट सब इसी व्यापार का कारण है कि वह हर दूसरे-तीसरे साल एक नई शादी कर लेते हैं और जब इस सोने की खान को खाली कर चुकते हैं तो दूसरा घर देखते हैं।

मगर अल्लाह जाने क्या जादू आता है इस शख्स को और कौन-सी मोहनी है इसकी आँख में कि जब कभी एक के बाद दूसरा घर बसाने की चिंता हुई तो वह जीविकदाता अदृष्ट रूप से ऐसा प्रबन्ध कर देता कि बैठे बिठाए एक से एक लाजवाब लड़की जिसे वास्तव में लक्ष्मी कहना चाहिये, हाथ लग जाती। पहली ही शादी ऐसी हुई थी कि शादी से पहले यह हजरत ससुराल की ओर से विदेश भेज दिये गए थे। तीन-चार साल खराब करके जब बिना सनद लिए वापस आए तो भी ससुराल वालों ने उन्हें नालायक न समझा बल्कि विदेश वालों को पक्षपात का इलजाम दिया, और कहा कि ऐसे काबिल आदमी को न बैरिस्ट्री की डिग्री दी और न पत्रकला का डिप्लोमा। परन्तु विदेश से वापस आकर रियाज भाई ने ऐसा रोब जमाया कि अगर डिग्री-विग्री लेकर आते तो अल्लाह जाने क्या हाल करते। सूट-बूट, विदेशी कलचर, मुँह टेढ़ा करके पाइप पीने की अदाएँ, चेमरशीयन भाषा बोलने की रीति, कुत्ते पालने का शौक, मुख्तसिर यह कि बहुत कुछ सीख कर आए थे और कई साल तक घर वालों का नाक में दम किये रखा था। यहाँ तक की होने वाली ससुराल में एक तूफान सा आया हुआ था कि किसी तरह लड़की को इस काबिल बना दिया जाए की वह इस लन्दन पलट लड़के की हैसियत के अनुसार बन सके। चुनाँचे इस बेचारी को उस्तानियाँ रख-रखकर अंग्रेजी पढ़ाई गई। छुरी-कांटे से खाना खिलाने का अभ्यास कराया गया, प्यानो बजाना और नाचना सिखाया गया। अत्यन्त कठिनाई से वह इस योग्य हो सकी कि उचित ढंग से उसकी पत्नी कहला सके। शादी के दो-तीन महीने

बाद ही यह चर्चा हुई कि यह हजरत तो विदेश में भी एक घर बसा आए हैं जहाँ एक बच्चे-वाली स्त्री बैठी उनका इन्तजार कर रही है कि कब यह हजरत अपनी पूँजीपती बीवी को ठिकाने लगाकर उसे अपने पास बुलाते हैं। बस भेद खुल जाने पर जाहिर है कि ससुराल से उनका सम्बन्ध खराब हो गया। मगर इतने ही दिनो में यह हजरत अपनी जड इतनी मजबूत कर चुके थे कि उस बीवी को तलाक देने के बावजूद भी हर प्रकार फायदे में रहे और अपनी अंग्रेज बीवी को बुलाकर उसके द्वारा एक अंग्रेज कम्पनी में ठाठ की सर्विस भी हासिल करली, मगर वह गरीब भी दूसरे ही साल अपने भाग का रोना रोती हुई वापस चली गई और इनके लिए रास्ता साफ कर गई कि यह नई शादी कर सकें—एक नई लक्ष्मी आकर इनके घर में खुशहाली और धन-दौलत का मेह बरसाए।

मुख्तसिर यह कि इस तरह इन हजरत की किस्मत में एक के बाद दूसरे दरवाजे खुलते गए और अब यह नई भाभी भी उनके कहने के अनुसार लख-पती घराने की बेटी थी। अजीब मुकद्दर पाया है इस शख्स ने भी।

होटल में पहुँच कर मैने अपना सामान लिया। रियाज भाई ने बिल चुकाया और मै उनके साथ रियाज मंजिल आ गया।

रियाज मंजिल में रहने और नाहीद भाभी को करीब से देखने के बाद मैंने उनके बारे में यही राय कायम की कि या तो उन बेचारी को अपने पतिदेव के सम्बन्ध में कोई जानकारी है ही नहीं, वह नहीं जानती कि यह हजरत किस ढंग के आदमी हैं, या यह साहबा जितनी सुन्दर, कोमल और रूपवती हैं उससे अधिक भोली-भाली मूर्ख दिखाई देती हैं। वर्ना वह ऐसे हरजाई पति के घर में अपनी सहेलियों के जमघटे कभी नहीं रखतीं, आज आइसक्रीम पार्टी है और उनकी एक-से-एक खूबसूरत सहेली मौजूद है, आज पिकनिक है और समुद्र के किनारे उनके साथ आया हुआ रंग-रूप का तूफान उमड़ रहा है, नुकरई कहकहे खनक रहे हैं, इन्द्र धनुष के नित-नए रंग साहिल पे लहरा रहे हैं, एक-दूसरे पर रेत के गोले उछाले जा रहे हैं, धमाचौकड़ी मची हुई है। रियाज को तो खैर और चाहिये ही क्या था, मगर जिस हद तक मैं रियाज भाई को जानता हूँ उसकी बिना पर कह सकता हूँ कि नाहीद भाभी इस तरह अपने हक में काँटे बो रही हैं और अगर यह सिलसिला जारी रहा तो किसी-न-किसी दिन उनका यह पति जो आजकल इन परिस्तानों में राजा इन्द्र बना नजर आता है, खुद मुझे इन ही में से किसी लड़की से यह कह कर मिलायेगा—"इनसे मिलये यह आपकी भाभी हैं।"

मुझे नाहीद भाभी के इस अनुभाविक भविष्य का ध्यान करके उनसे हमदर्दी जरूर थी, मगर मैं अपनी इस हमदर्दी का इजहार भी नहीं कर

सकता था और न मुझे कोई अधिकार ही था कि नाहीद भाभी को—जो अपने बे-एतबार पति पर पूरा विश्वास रखती थीं—खाह-मखाह भड़काने बैठ जाऊँ। मेरी हैसियत तो एक खामोश दर्शक की सी थी, हाँ रियाज भाई अगर कभी एकांत में मिल जाते थे और मेरे सामने असली रंग में आ जाते थे तो मैं उनसे जरूर उलझ लिया करता था। जैसे आज ही जबकि मैं बिस्तर की चाय और अखबार से एक साथ शग्ल कर रहा था, वह हजरत फट पड़े मुझ पर आकर—"लाहोल विलाकूवत, नहूसत की हद कर दी, अभी तक बिस्तर ही पे पड़े हैं हुजूर। कुछ खबर भी है आज का प्रोग्राम कितना खास है। बस फौरन नहा-धोकर तैयार हो जाओ वर्ना सैंडपिट पहुँचने में देर हो जायगी।"

मैंने अखबार एक तरफ रखकर उठते हुए कहा—"सैंडपिट !"

कहने लगे—"हाँ, हाँ, सैंडपिट। तय यह हुआ कि वहाँ दिन भर साहिल पर जश्नरहेगा और चूँकि आज चौधवीं की रात है इसलिए वहाँ दो हटों का प्रबन्ध कर लिया गया है ताकि रात भी वहीं गुजारी जाए। पूरा लशकर जा रहा है, वह जा रही है तुम्हारी शगुफ्ता ?"

मैंने चौंक कर पूछा—"शगुफ्ता, क्या मतलब ? और है कौन यह शगुफ्ता ?"

रियाज भाई ने कमर पर हाथ रखकर आँखों में आँखें डालते हुए कहा—"अच्छा अब मेरी आँखों में भी धूल झोंकोगे। मियाँ, तुमने उड़ाई हमने भून-भून खाई, तुम डाल-डाल हो तो हम पात-पात हैं। अब आप गोया पुराने नियाजमंदों से भी बनने की कोशिश कर रहे हैं।"

मैंने सच्चाई के साथ कहा—"मैं बखुदा बन नहीं रहा हूँ, कम-से-कम मुझे यह बता दो कि वह कौन शगुफ्ता है जिन्हें तुम बिला वजह मेरे सिर मढ रहे हो।"

रियाज भाई ने कुछ निराश होकर कहा—"अगर सचमुच तुम इतने ही

मूर्ख हो, तो खुदा रहम करे तुम पर। साहब मैं उसी लड़की का जिक्र कर रहा हूँ जो परसों हाक्सबे पर बहाने ढूँढ़-ढूँढ़ कर तुम्हारे आगे-पीछे फिर रही थी, कि शहाब भाई यह लीजिये सैंडविचेज और शहाब साहब मैं छीलूँ आपके लिए सेब—नहीं समझे? अरे भई वही गोरी-गोरी सी लड़की पोनी-टेल चोटी के कारण हम लोग लिली-घोड़ी कह रहे थे, वह जो फालसई रंग की साड़ी और सुनहरी ब्लाउज में थी।"

मैंने कहा—"वह तो नहीं जिसने हारमोनियम पर गजल सुनाई थी

"जवानी का आलम है सरशारियाँ हैं।"

रियाजभाई ने आँखें निकालकर कहा—"खबरदार जो उसका जिक्र किया—गोली मार दूँगा। वह तो शीरीं है। उसकी ओर आँख उठाकर भी न देखियेगा। कोई जवाब है उसका। सुन्दरता की सारी कहावतें उसके साँचे में ढल गई हैं। उसको तो काम देवता भी अगर देख ले तो अपने बाण से आप घायल हो जाए। मगर शुक्र है कि वह अंधा है। वास्तव में यह सारी करामात तो उसी के दम की है कि आज यह पार्टी है और कल वह प्रोग्राम है। तुम तो अपनी शगुफ्ता का जिक्र करो।"

मैंने कहा—"फिर वही अपनी शगुफ्ता! शगुफता के बारे में तो मैं बाद में विचार करूँगा, पहले मैं यह पूछना चाहता हूँ कि तुम कभी किसी के होकर रहोगे भी। इतनी अच्छी पत्नी के मिल जाने के बाद भी नियत डाँवाडोल है। अब शीरीं के फरहाद बने हुए हो। अगर नाहीद भाभी को थोड़ी शंका हो जाए तो कितना दुःख होगा उन्हें।"

रियाज भाई ने कहा—"भैया, मैंने कच्ची गोलियाँ नहीं खेलीं। अगर कभी को यह सम्बन्ध बहुत आगे बढ़ गया और शीरीं ने मुझे मजबूर किया कि मेरे लिए कोई रास्ता न रहे तो फिर शक-शुबह क्या यानी जो कुछ नाहीद के भाग में लिखा है वह अवश्य पूरा होकर रहेगा—"

मैंने पूछा—"आखिर यह है किस घराने की लड़की शीरीं।"

रियाजभाई ने चंचलता से उत्तर दिया —"होगी किसी घराने की लड़की तुम्हें इससे क्या वास्ता ? तुम क्यों चतु:सीमा मालूम कर रहे हो ?"

मैंने कहा—"नहीं भाई, बताओ तो सही किस की बेटी है, बाप क्या करते हैं उसके, कुछ पता भी तो चले—"

रियाजभाई ने कहा —"भई यह तुम्हारी भाभी की क्लासफैलो है। बाप इसके हैडमास्टर हैं एक हाई स्कूल के। अपने व्यक्तिगत मेल-जोल के कारण बनी-ठनी रहती है, वर्ना एक हैडमास्टर जिसकी तीन-चार बेटियाँ हों जिस गुरबत में जीवन बसर कर सकता है जाहिर है।"

मैंने कहा—"बस तो अब इतमिनान हो गया, यह बेल मुंढे नहीं चढ़ सकेगी।"

रियाजभाई ने कुछ न समझते हुए कहा—"मैं समझा नहीं आपके इत-मिनान का मतलब।"

मैंने कहा—"यानी यह तय हो गया कि सिर्फ जुबानी जमा-खर्च है, तुम उस लड़की से शादी नहीं कर सकोगे, चाहे तुम्हारी जगह वह खुद ही तुम पर आशिक हो जाए।"

रियाजभाई ने एक ठंडी आह खेंचते हुए कहा—"हमारी ऐसी किस्मत कहाँ कि उसे हमसे दिलचस्पी हो जाए। इस परिणाम पर आप केवल दिल बहलाने के लिए पहुँचे हैं या कोई और कारण है ?"

मैंने गम्भीरता से कहा—"मजाक नहीं, मैं बिलकुल सच-सच कह रहा हूं तुम उस लड़की से शादी तो कर ही नहीं सकते, इसलिए कि तुम्हारे लिए शादी करने का आनन्द वहाँ हो सकता है जहाँ लड़की चाहे बदसूरत ही हो मगर उसकी आर्थिक दशा ऊँची हो।"

रियाजभाई ने बात पूरी होने से पहले ही एक घूंसा मेरी पीठ पर जड़ते हुए कहा—"हो बड़े बदमाश—तो क्या मैं कारोबारी दृष्टिकोण से शादियाँ करता हूँ, खबीस कहीं के······"

उसी समय नाहीद भाभी ने तेजी से आकर डाँटना शुरू कर दिया—"कमाल करते हैं आप लोग भी मेज पर नाश्ता पड़ा फुँक रहा है और यहाँ बातें बन रही हैं। तशरीफ ले जाइये शहाब भाई गुसलखाने में और बस दस मिनट दिये जाते हैं आपको। एकदम तैयार होकर मेज पर आ जाइये और आप आइये मेरे साथ—"

भाभी तो रियाजभाई को अपने साथ घसीट ले गईं और मैंने दस मिनट में तो नहीं, जितनी जल्दी हो सका अपने को तैयार कर लिया। जिस समय मैं खाने की मेज पर पहुँचा हूँ वहाँ अच्छी खासी भीड़ लग चुकी थी। नाहीद भाभी की तमाम सहेलियाँ मौजूद थीं सिर्फ शीरीं का इन्तजार था। मुझे देखते ही नाहीद भाभी ने कहा—"शुक्र है आप आ तो गए, मगर वह लाट साहब की बच्ची शीरीं अब तक गायब है।"

रियाज भाई बोले—"अरे भई नाहीद इनसे कहो शहाब से—यह समझ लेंगे उन हजरत से......"

नाहीद भाभी ने हँसकर कहा—"हाँ यह ठीक है, शहाब भाई मेरी सहेली शीरीं जो अभी आने वाली हैं उनके साथ एक साहबजादे और भी आ रहे हैं जो रिश्ते में शीरीं के चचेरे भाई हैं और आजकल शीरीं की जान के गाहक बने हुए हैं।"

मैंने स्पष्टीकरण चाहा—"यानी भाई के सम्बन्ध को समाप्त करना चाहते हैं ?"

नाहीद भाभी ने जवाब दिया—"जी हाँ ! अब जरा इनसे पूछ लीजिये शगुफ्ता से कि वह क्या चीज हैं और आपके किस व्यवहार के लायक हैं।"

शगुफ्ता ने, जिसको अब मैंने शगुफ्ता की हैसियत से पहचाना था, सहसा हँसकर कहा—"उनकी तारीफ सिर्फ यह है शहाब भाई कि—"

"तारीफ उस खुदा की जिसने उन्हें बनाया।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तोबा है ! तुम तो शायरी करने लगीं, जल्दी से जरा उनका परिचय दो नही तो वह आने ही वाले है।"

शगुफ्ता ने कहा—"शहाब भाई इतने ही इशारे से सब कुछ समझ गए होंगे, बस यह और बताना है कि खुद शीरीं उनकी इस आरज़ू को सुनकर उनका मुँह देखा करती हैं।"

मैंने कहा—"जैसे वह कह रही हों—

"इस आरज़ू को देखिये और उनको देखिये।"

नाहीद भाभी बोलीं—"कमाल है, आप दोनों एक-दूसरे की बात कितनी जल्दी समझ लेते हैं।"

शगुफ्ता ने गम्भीरता से उत्तर दिया—"जी हाँ कारण यह है कि हम दोनों की मातृभाषा उर्दू है।"

उसी समय रियाज भाई अख्खाह कहकर उठे। सब ही की नजर उस तरफ उठ गई, जिधर से शीरीं एक व्यक्ति के साथ चली आ रही थी और वह उसकी आड़ में लुके-छुपे कदम बढ़ा रहे थे। नाहीद भाभी ने व्यंग्य करते हुए कहा—"अब आँख खुली होगी बन्नो की।"

शीरी ने करीब आकर मुझे और रियाजभाई को सलाम किया और एक कुर्सी पर बैठते हुए बोली—"मैं तो कब की तैयार थी, मगर मुझे ही आना तो न था कि चली आती, जब अट्ठाईसवें साबुन से नहाने के बाद मुराद भाई गुसलखाने से बाहर निकले, खुदा-खुदा करके और कई लिबास पहन-पहन कर उतारने के बाद इस आखिरी लिबास को पहन कर तैयार हो सके हैं तो मैं आई हूँ।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मुराद साहब का परिचय तो करा दो सबसे······"

शीरीं बोली—"छोटा मुँह बड़ी बात—यह आप अपना परिचय हैं इससे अधिक और क्या ? मुश्क वह है जो खुद महक उठे न कि अत्तार कहे।"

मैंने शीरीं से कहा—"इस प्रकार तो आप ने अपना भी परिचय करा दिया— आप अत्तार हुईं ?"

शगुफ्ता ने कहा—"जी हाँ, अगर मुराद साहब मुश्क हैं तो यह अत्तार हैं।"

शीरीं ने कहा—"फिर बोलीं तुम शगुफ्ता, अच्छी बात है याद रखना—साहब यह हैं मुझ नामुराद के चचेरे भाई मुराद अहमद साहब "मुराद"।"

मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा—"अच्छा तो गोया आप शायर भी हैं ?"

शीरीं ने कहा—"गोया को गवैया कर दिया जाए तो उचित होगा। इसलिए कि यह बड़ी मीठी गुंजार से कविता सुनाते हैं। बड़ी ही रसीली आवाज पाई है इन्होंने। अभी-अभी कालेज छोड़कर आए हैं। बी० ए० की डिग्री लेना आत्म-सम्मान के विरुद्ध जानकर पढ़ तो लिया बी० ए० तक, परन्तु डिग्री लेने से साफ इन्कार कर दिया। अब अगर किसी विभाग में आपकी महान् सेवाओं की आवश्यकता हुई तो नौकरी कर लेंगे, वर्ना अल्लाह का दिया घर में सब-कुछ है। चैन से जिंदगी बसर हो रही है।"

मैंने कहा—"मुझे तो केवल यही सुनकर मुँह माँगी मुराद मिल गई कि......"

शीरीं ने टोककर कहा—"जी नहीं यह मर्द हैं मुँह माँगा मुराद मिल गया है कहिये !"

मुराद साहब ने ताली बजाकर हँसते हुए कहा—"खूब-खूब ! बहुत खूब।"

शीरीं ने बड़े शायराना अन्दाज से हाथ जोड़कर कहा—"कृपादृष्टि है आपकी।"

मैंने अपनी बात जारी रखा—"मैं अर्ज कर रहा था कि जब से यहाँ आया हूँ, शेरो-शायरी से ऐसा अलग-वलग होकर रह गया हूँ कि जैसे एक सन्नाटा-सा छा गया हो। न साहित्य के चर्चे हैं। न शेरो-शायरी। अब इंशाअल्लाह जीवन का यह मैदान भी आपके कारण हरा-भरा दिखाई देगा। गजल से शौक फरमाते हैं आप या नज्म वगैरा से ?"

मुराद साहब ने अपनी टाई की बत्ती बनाते हुए कहा—"कुछ योंही-सा बक लेता हूँ गजल वगैरा की शक्ल में।"

शीरीं ने आँखें निकाल कर कहा—"अब ऐसी भी खाकसारी क्या ? आपने मुझे बदनाम करना शुरू कर दिया, जो सुनेगा यही कहेगा कि शेर कहते नहीं बल्कि बकते हैं, जबकि आपको आल-रावलपिंडी मुशायरे में तमगा मिल चुका है।"

मुराद साहब ने कहा—"जी हाँ, वह मिल गया था, इससे पहले भी दो तमगे मिल चुके हैं।

शीरीं मुझ से बोली—"अब आप ही इन से पूछिये कि आखिर लगाते क्यों नहीं वह तमगे ?—भई रोज न सही, कभी कभार शादी -विवाह के अवसर पर या कहीं आने-जाने के समय तो लगाना ही चाहिये वह तमगे। मगर यह तो सितम करते हैं कि अभी पिछले मुशायरे में बगैर तमगा लगाए चले गए थे, नतीजा यह हुआ कि हूटिंग हो गई।"

मुराद ने कहा—"खैर वह हूटिंग तो इसलिए हो गई थी कि किसी ने बिल्ली की बोली बोल दी थी जब मैं गजल पढ़ रहा था।"

मैंने कहा—"खैर हूटिंग तो बड़े-बड़ों पर भी हो जाती है, मारे प्रशंसा के—बहरहाल अगर तकलीफ न हो तो कुछ प्रसाद के तौर पर ही कृपा कीजिगे।"

नाहीद भाभी एकदम चीख उठीं—"वाह क्या अच्छा अवसर ढूँढ़ा है शेर सुनने का, धूप चढ़ती जा रही है, नौकर वहाँ बैठे टाप रहे होंगे, यहाँ शायरी हो रही है। तशरीफ ले चलिये, फिर चाहे वहाँ शायरी कीजियेगा चाहे जमनास्टिक।"

अन्ततः हम सब विभिन्न गाड़ियों में बैठ कर सैंडपिट की ओर रवाना हो गए।

सैंडपिट पर जिस वक्त यह काफला पहुँचा है, रियाज भाई के नौकरों ने बराबर-बराबर दो हटों को साफ करके बड़ी सुरीति से सुसज्जित कर दिया था। दोनों हटों में कालीन के फर्श थे और कुशन कायदे से लगे हुए थे। छतरियाँ लगाकर उनके नीचे छोटी-छोटी मेजों के चतुर्दिक कुर्सियाँ लगा दी गई थीं। हद यह है कि इन हटों की खिड़कियों और दरवाजों के पर्दे तक यह मुलाजिम साथ लाए थे। मालूम यह होता था कि जैसे अब यह सब जीवनभर इन्हीं हटों में निवास करने आए हैं। इस आयोजन के बावजूद भी जाहीद भाभी ने वहाँ पहुँचते ही आक्षेप किया—"यह अलग-अलग दो हटें क्यों हैं ?"

रियाज भाई बोले—"इसलिए कि मैं जल्दी में एक ही इतनी बड़ी हट न बनवा सका जिसमें हम सब आराम के साथ आज का दिन और रात बसर कर सकते।"

जाहीद भाभी ने कहा—"मेरा मतलब यही है कि आप विशेष-रूप से कोई ऐसी हट बनवाते। क्या कोई ऐसी हट भी न थी जो जरा बड़ी होती।"

रियाज भाई ने कहा—"अव्वल तो कोई ऐसी हट मिल न सकी, दूसरे इन दो में भी क्या नुकसान हैं। पास-पास तो है ही दोनों, फिर यह कि दिन भर और रात को भी जब तक कोई महोदय दुराचार से काम लेकर

सोना न चाहें, सब एक ही जगह रहेंगे और ज्यादा समय हटों से बाहर ही साहिल के रेत पर गुजारेंगे, हाँ यदि कोई व्यक्ति सोना चाहे तो इनमें से एक हट महिलाओं के लिए निश्चित कर दी जाएगी और दूसरी पुरुषों के लिए।"

मैंने इस विवाद से ऊब कर कहा—"ठीक है भई बड़ा उचित प्रबंध है। दरअसल यह हट का झगड़ा नहीं है, भाभी की त्रियाहठ है।"

मुराद साहब बोल उठे—"क्या कहना है साहब—सुबहान अल्लाह ! हट और त्रियाहठ।"

शीरीं के लिए अब बोलना अत्यन्त आवश्यक था उसने तुरन्त कहा—"अब कहीं आप बालहट न शुरू कर दीजियेगा।"

नाहीद भाभी बोलीं—"चलो छुट्टी हुई, शुरू हो गई इन दोनों की लाग डांट। मुराद साहब आप इसकी बातों पर ध्यान न दिया कीजिये।"

मुराद ने प्रसन्नता के साथ कहा—"जी हाँ, मैं कब परवाह करता हूँ इनकी बा……।"

शीरीं बोली—"क्या मतलब ? अल्लाह की शान ! अब आप मेरी भी परवाह नहीं करते। यही दिन देखने के लिए मैं जिंदा रह गई थी कि आप नामे-खुदा परवान चढ़ेंगे तो मेरी परवाह तक न करेंगे।"

यह बात उसने ऐसी बड़ी-बूढ़ियों के अन्दाज से कही कि सब ही ठट्ठा मार कर हँस पड़े। मगर इस हँसी में मुराद की शान सब से जुदा थी, वह मुँह खोले हुए एक ऐसी हँसी हँस रहे थे मानो सब का साथ दे तो रहे हों परन्तु पल्ले कुछ न पड़ रहा हो कि आखिर यह सब हँस क्यों रहे हैं। होते-होते आखिर हँसी का तूफान थमा तो रियाज ने सब को अपनी ओर प्रवृत्त करते हुए कहा—"अच्छा उपस्थित साहबान ! अब आप इन हटों को निःसंकोच रूप से अपना घर समझें और पैराकी के कपड़े पहन कर आ जाएँ—मैं खुद भी कपड़े बदलने जा रहा हूँ।"

रियाज के साथ मैंने भी हट के एक कोने में जाकर कपड़े उतारे और

पैराकी का लिबास पहन कर बाहर आ गया। इसलिए कि यहाँ आने का मक्सद ही एक था कि जरा लहरों से खेलें, जरा रेत पर लोट लगायें, कुछ नहाएँ, कुछ गोते खाए, जाहिर है कि नाहीद भाभी और उनकी सहेलियाँ अब तक इतनी एडवांस न हुई थीं कि वह भी इस हम्माम में सब के साथ पैराकी के अध-नंगे लिबास में तट पर उछल-कूद शुरू कर देतीं। अगर सच पूछिये तो मुझे भी झिझक-सी महसूस हो रही थी कि महिलाओं के सम्मुख अध-खुले शरीर लिए हम लोग इस ढिठाई के साथ खड़े थे। मगर उसी समय साहिल पर यह दृश्य भी हमारे सामने था कि खुदा जाने कितनी टोलियों में इसी प्रकार पिकनिक मनाने वाले यहाँ आए हुए थे और न जाने कितनी माताएँ और बहनें पैराकी के लज्जाहीन कपड़ों में पुरुषों के साथ उछल-कूद में मसरूफ थी। हमारे साथ की औरतें ज्यादा-से-ज्याद यह कर पाई थीं कि साहिल पर जाने के लिए अपनी शलवारों के पाँयचे जरा ऊपर चढ़ा लिए थे, हाँ, यह देख कर हमें सख्त हैरत हुई कि मुराद साहब पूरे सूट में ज्यों के त्यों टाई बाँधे खड़े थे। चुनाँचे उनको देखते ही रियाज भाई ने कहा—"क्या मतलब ? यानी आप टाई बाँधे-बाँधे स्नान करेंगे।"

मुराद साहब बोले—"जी नहीं। आप शौक फरमाइये, मैं सिर्फ देखूँगा।"

शीरीं ने कहा—"यह शौक तो आपने अक्सर सिनेमा में भी पूरा किया होगा। सवाल यह है कि आपको एतराज क्या है नहाने में ? क्या डरते हैं आप ?"

मुराद बोला—" डरने की बात ही है, खुदा बचाए इन चंचल मौजों से, यह अपनी भेट तो लेकर ही रहती हैं। अल्लाह जाने कोई घड़याल टॉग पकड़ कर घसीट ले या कोई तूफानी मौज ही बहा ले जाए।"

रियाज भाई ने कहा—"लाहौल विलाकुवत ! क्या कायरपन की बातें करते हैं आप—आप से अच्छी तो हम औरतें हैं, जरा देखिये उस औरत को कैसी कमल के फूल की तरह तैर रही है।"

शीरीं ने कहा—"मुराद साहब शायद आपको तो एहसास भी न हो मगर इस वक्त मैं मारे लज्जा के तट पर ही डूबी जा रही हूँ। जो देखेगा यही कहेगा कि एक साहब साहिल पर पिकनिक मनाने आए थे और सारा दिन सूट पहने, टाई बाँधे होलडाल बने टहलते रहे। आखिर मालूम भी तो हो, क्या बात है।"

मुराद ने गम्भीरता से कहा—"अब आप पूछ रही हैं तो बताए देता हूँ कि मेरे बारे में हाथ देख कर बताया जा चुका है कि मेरी मौत पानी से होगी।"

मैंने हँसकर कहा—"अरे! अरे—दूर पार—आपके दुश्मन मरें। फिर तो भई गलत है आप से जिद करना, बल्कि मेरी तो राय यह है कि आपको बचाव के लिए खुश्की पर ही लाइफ-बैलट बाँधे रखना चाहिये। हाँ, हाँ भई खुदा बुरे वक्त से बचाए।"

शीरीं ने कहा—"जनाबे-आली! अगर यह तय है कि आपकी मौत पानी से होगी तो आप चाहे समुद्र में नहाए या न नहाए, चल्लू भर पानी में डूब सकते हैं।"

अब तो शगुफ्ता से भी न रहा गया। उसने गम्भीरता से कहा—"जब एक वहम इनके दिल में बैठा हुआ है, तो तुम क्यों पीछे पड़ गई हो। बल्कि मैं तो यह कहती हूँ कि मुराद साहब को नहाने और पानी पीने में भी सावधान रहना चाहिये।"

मुराद ने संजीदगी के साथ कहा—"जी नहीं, हाथ देखने वाले ने बताया है कि दरियाई सफर और दरियाई या समुद्री स्नान से बचना आवश्यक है।"

नाहीद भाभी इस बहस से उलझ कर पहले ही हम सब से अलग हो चुकीं थीं। उन्होंने रेत का एक बड़ा सा गोला बनाकर शीरीं को अपना निशाना बनाने की कोशिश की, मगर वह ऐसी सच्ची निशानाबाज कब थीं कि निशाना सिरे से चूकता ही न हो। रेत का गोला शीरीं के सिर से गुज-

रता हुआ ऐसा भरपूर मुराद के चेहरे पर पड़ा कि वह न केवल चुँधियाकर रह गए, बल्कि इस तरह गिरने के लिए लड़खड़ाए कि जैसे सचमुच बम का गोला ही तो था। नाहीद भाभी की इस हरकत पर सबसे ज्यादा रियाज भाई को हैरत हुई। वह तो जानते थे कि नाहीद भाभी इतनी जल्दी किसी से निःसंकोच नहीं होतीं। आखिर यह उन्हें सूझी क्या? मगर इससे पहले कि हम सब अपनी हँसी पर काबू पाते और रियाज भाई उनसे पूछ-ताछ करते वह खुद ही माफी मांगने के लिए लपकीं।

"अरे माफ कीजियेगा मुराद साहब! सचमुच, यह मजाक मैंने आप के साथन किया था, बल्कि गोला शीरीं के मारा था जो अचानक आपके जा लगा। वाकई माफ कर दीजिये।"

शीरीं बुरा मान कर बोली—"अच्छी रही आपकी माफी, जवान की जान से दौरान की जान पर बन आती तो क्या होता, एक तो यों ही इनका दिल कमजोर है, दूसरे, भला गजब खुदा का, इतना बड़ा गोला।"

मुराद साहब ने बड़ी सरलता से उत्तर दिया—"नहीं, खैर कोई बात नहीं। मुझे चोट थोड़ी लगी है। खाह-मखाह बात को बढ़ावा दे रही हो।"

इस चोट न लगने वाली बात पर यों ही क्या कम हँसी आ रही थी कि शीरीं ने और भी कयामत खड़ी कर दी—"चोट न लगने की भी एक कही, तकल्लुफ हो तो ऐसा हो, इतना बड़ा गोला ठाएँ से आ पड़ा है और आप कहते हैं कि चोट ही नहीं लगी है। देख लेना मुँह सूज कर रह जाएगा।"

मुराद ने चेहरे पर हाथ फेरते हुए कहा—"मैं सच कहता हूँ मुझे तो जरा भी चोट नहीं महसूस हुई।"

और अब जो हँसी का तूफान आया है तो शगुफ्ता तो सचमुच हँसते-हँसते लोट-लोट गई। नाहीद भाभी की हँसी इस कदर बेकाबू तो नहीं थी मगर वह दुपट्टे का आँचल मुँह में ठूँस कर रह गई, मगर कमाल हासिल है शीरीं को कि वह वैसे ही गम्भीर बनी रही और उसने इन सब की हँसी पर

दिखावे का बुरा मान कर मुराद का बाजू थामते हुए कहा—"इतनी चोट खाने के बाद भी बिला वजह अकड़ में खड़े हुए हो चलकर थोड़ी देर आराम कुर्सी पर बैठकर अपना मुँह सहला लो।"

और वह सचमुच उन्हें पकड़ कर हट की तरफ ले गई तो रियाज भाई ने कहा—"कमाल है बखुदा।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मुझे तो रहम आता है इस गरीब पर।"

शगुफ्ता बोली—"रहम के काबिल बात तो यह है कि यह तो है जनाब का चरित्र और उम्मीदवार हैं जनाबे-वाला शीरीं के।"

मैंने कहा—"मेरा ख्याल है कि यह शख्स इतना मूर्ख नहीं है जितना शीरीं की चतुरता के आगे दिखाई देता है। भूमिका में चूँकि शीरीं हैं इसलिए जनाब की मूर्खता और ज्यादा प्रकट हो गई है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"जी नहीं, अगर भूमिका में शीरीं की जगह शगुफ्ता होती तो भी………"

शगुफ्ता ने बिजली की तरह तड़प कर बात काट दी—"कौन मैं? खुदा न करे……खुदा के लिए बहन ऐसी बददुआ तो न दो। यह शीरीं ही का दिल-गुर्दा है कि वह इन हजरत से यह खूबसूरत मजाक भी कर लेती है। अल्लाह न करे मैं होती तो सिर पीट कर अपने पागल होने का एलान कर चुकी होती।"

रियाज और मैं दोनों आगे बढ़ गए ताकि समुद्र की उन मौजों की ओर ध्यान दे सकें जो देर से हमारा स्वागत कर रही थीं। इधर हमने जरा फासले मे जाकर देखा शीरीं भी अपने बीमार को कुर्सी पर लिटाने के अन्दाज में बिठाकर नाहीद भाभी और शगुफ्ता के पास आ चुकी थी और अब यह तीनों हँस-हँसकर दोहरी हुई जा रही थी। महिलाओं के और हमारे बीच अब जो दूरी पैदा हो चुकी थी उससे फायदा उठाकर रियाज भाई ने कहा—"देख रहे

हो शहाब तुम शीरीं को, किस कदर तेज लड़की है, जितनी सुन्दर है उतनी ही चतुर भी है।"

मैंने कहा—"है तो सही मगर जनाब को क्या मतलब ?"

रियाज भाई बोले—"तो क्या जिससे कोई मतलब नहीं उसकी तारीफ करने का भी किसी को हक नहीं है ?"

"हक तो है"—मैंने कहा—"लेकिन जब यह तारीफ सिर्फ तारीफ ही हो। मैं ठहरा जनाब का पुराना लँगोटिया यार। मैं जानता हूँ कि यह तारीफ बेलाग नहीं हो सकती। अतः आपकी इन निगाहों को मैं उसके लिए बहुत खतरनाक समझता हूँ।"

रियाज भाई बोले—"हाँ, मैं झूठ नहीं बोलता, मुझे सचमुच शीरीं बहुत पसन्द है और एक बात मैं तुम्हें यह भी बता दूँ कि खुद शीरीं भी……"

मैं चलते-चलते ठहरकर उनकी बात पूरी करने लगा—"खुद शीरीं भी आपसे इश्क करती है।"

रियाज भाई बोले—"खैर इश्क-विश्क को तो मैं जानता नहीं। हाँ वह मुझे पसन्द जरूर करती है। तुम देख रहे थे कि वह किस तरह नाहीद से नजर बचाकर मुझे देखने की कोशिश कर रही थी।"

मैंने हँसकर कहा—"बखुदा, यह दिल बहलावा है, फरेब है, ऐसी मूर्खता तो अच्छे खासे आदमी को नामाकूल बनाकर रख देती है। पागल आदमी! शर्म आनी चाहिये तुम को—ऐसी अच्छी बीवी के होते हुए क्या तुम्हें शैतान ने घेर रखा है।"

मैं उन्हें लगातार लान-तान करता रहा और वह बेशर्मी की हँसी हँसते रहे, नहाते रहे, गोते बजाते और तैरते रहे, यहाँ तक कि एक नौकर ने करीब आकर कहा—"बेगम साहबा बुला रही हैं आपको लंच तैयार है। हम दोनों जिस समय वहाँ पहुँचे हैं, यह तीनों स्त्रियाँ मुराद साहब को घेरे बैठी थीं और वह न जाने किस ध्यान में अपनी कमीज के पल्लू से खेल रहे थे। हम दोनों

को देखकर नाहीद भाभी ने कहा—"शहाब भाई, इस वक्त सवाल यह है कि मुराद साहब, खुदा को हाजिर-नाजिर जान कर कहदें कि अब तक जितने शेर उन्होंने कहे हैं वह अपनी किसी प्रेमिका के बारे में कहे हैं।"

मैंने कहा—"यह बात कोई भी कुँवारा लड़का अपने मुँह से नहीं कह सकता, ठीकरे बरसने लगते हैं मुँह से।"

शगुफ्ता को यह बात सुनकर हँसी का दौरा पड़ गया और खुदा-खुदा करके जब यह तूफान थमा तो नौकर खाना लेकर आगए थे। हम सब ने इन्हीं छतरियों के नीचे अपनी-अपनी प्लेट सभाल ली और छीन-झपट कर खाना खाते रहे। सच बात है कि पिकनिक और यहाँ के वातावरण को देखकर रियाज के समझदार कुक ने लंच ऐसा तैयार किया था कि स्वादिष्ट होने के अतिरिक्त अवसर के अनुसार भी था। खाना खाकर हम सब मुराद साहब को घेरकर बैठ गए और उनसे उनका निहायत ही वाहियात और पोच किस्म का कलाम सुनते रहे। इस कलाम में थोड़ा बहुत आनन्द इसलिए पैदा हो गया था कि शीरी की आलोचना साथ-साथ चल रही थी। कभी-कभी शगुफ्ता कोई शगूफा छोड़ देती थी, मगर नाहीद भाभी ने थोड़ी ही देर के बाद बोर हो कर कहा—"मुराद साहब आप बेशक पानी के पास न जाएँ बल्कि इस कुर्सी ही से न उठे। मगर खुदा के लिए यह सूट तो उतार दीजिये, दम उलट गया है आप को इस तरह "सील-मोहर" देखकर।"

आखिर खुदा-खुदा करके मुराद ने सूट उतार कर कुरता पाजामा-पहना। वह सचमुच दिन भर और फिर आधी रात तक पानी से दूर-दूर ही रहे और आधी रात के बाद तो हम सब ही से दूर हो गए। इसलिए कि उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि—"मेरा असूल यह है कि मैं किसी भी दिलचस्पी के लिए नींद कुरबान नहीं कर सकता।"

अतः उन्हें सोने की आज्ञा देकर बाकी सब लोग रात भर धमा-चौकड़ी मचाते रहे।

मनोरंजन की यह चहल-पहल तो जारी थी ही, मगर मैं अपनी जगह पर एक बड़ी उलझन में ग्रस्त हो गया था। सोचता था कि मैं कराची एक-दो दिन के लिए तो आया नहीं जो रियाज भाई का मेहमान बन कर रह लेता। मेरा तो यहाँ मुस्तकिल तौर पर तबादला हो चुका था और अब मुझे न जाने कब तक कराची में रहना था। सवाल यह था कि मैं कब तक रियाज भाई और नाहीद भाभी को इस प्रकार कष्ट देता रहूँगा। और कब तक खुद अपने घर का प्रबन्ध न करूँगा। संदेह नहीं कि कराची में मकान की समस्या बड़ी कठिन प्राब्लम बन गई है, परन्तु मेरे लिए समस्या यह नहीं थी, मुझे तो विभाग की ओर से मकान मिल ही रहा था। सोचने की बात यह थी कि रियाज भाई और नाहीद भाभी जैसे मेजबानों से छुटकारा कैसे हासिल करूँ। कई हफ्ते तक तो मैं यही इन्तजार करता रहा कि शायद खुद ही यह लोग मुझे अपने मकान से निकाल दें। इसलिए अब तक तो मैं खामोश रहा। अब अगर मैंने इस बात का और ज्यादा इन्तजार किया तो वह मकान भी हाथ से निकल जाएगा जो विभाग की ओर से मिलने वाला है। बात तो यह सीधी-सी थी, मगर मैं जानता था कि रियाज भाई और उनसे ज्यादा उनकी बेगम साहबा इस मामले में बहुत ही टेढ़ी वाके हुई हैं। वह सचमुच एक तूफान खड़ा कर देंगी। और सच्ची बात यह है कि मैं इसी बात से डरता रहा था अब तक, और अब पानी सिर से ऊँचा होने लगा था। सरकारी

टेलिफोन लगवाने की भी जल्दी थी। इसलिए मैंने आज सुबह की चाय पर ही हिम्मत करके यह सवाल उठाया।

"भई रियाज ! मुझे तुमसे जरा उस घर के बारे में कुछ राय लेनी है, जो मुझे सरकारी तौर पर मिला है।"

रियाज से पहले ही नाहीद भाभी बोल उठीं—"क्या मतलब आपका ? तो जैसे आपको इस घर के अतिरिक्त भी कोई घर मिला है। मिल गया है तो अच्छा है, उठा दीजिये उसे किराए पर।"

मैंने कहा—"फिर तो मुझे न इस घर की जरूरत रहेगी और न उस घर की बल्कि एक बहुत बड़े घर में सरकारी मेहमान बनकर रहूँगा और चक्की पीसा करूँगा।"

रियाज ने कहा—"तो आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ? अगर तुम इस भुलावे में हो कि किसी और मकान में जाकर रहोगे तो बस···"

मैंने उनकी बात काटकर कहा—"आदमियों की तरह बात सुनो। वह सरकारी मकान है, उसमें सरकारी टेलिफोन लग रहा है···"

रियाज ने कहा—"यह सब मुझे मालूम है। तुम लिख सकते हो कि मुझे मकान की जरूरत नहीं। मेरे पास अपना मकान मौजूद है। कभी-कभी सरकार के साथ नमकहलाली करने में भी कोई मुजायका नहीं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"सौ बातों की एक बात यह है कि आप हमसे अलग नहीं रह सकते। कान खोलकर सुनकर लीजिये, भला बताइये तो अकेली जान के लिए पूरी घरदारी लेकर बैठेंगे, नौकर रखेंगे, बावरची रखेंगे, नोन, तेल, लकड़ी के तोते पालेंगे। आखिर आपको इस तूमार की जरूरत ही क्या है ?"

मैंने कहा—"भाभी, आपके पति तो हैं मूर्ख आप तो माशाअल्लाह औरत हैं······"

रियाज भाई ने बात काटकर कहा—"जो शायद मूर्ख होती ही नहीं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"माफ कीजियेगा इस मामले में तो आप ही मूर्ख होने का सबूत दे रहे हैं शहाब भाई। आपको यह कहते हुए जरा भी झिझक पैदा न हुई।

रियाज भाई ने मुँह बनाकर कहा—"अजी यह तो सदा का ही बेहया वाके हुआ है। मैं तो इससे यह भी नहीं कह सकता कि यहाँ तुम्हें कोई तकलीफ है इसलिए कि मैं जानता हूँ कि इसे सिवाए इस एहसास के कि कोई कब तक किसके घर मेहमान बना रहे कोई तकलीफ है ही नहीं।"

नाहीद भाभी ने चौंककर कहा—"अरे भई, कमाल करते हैं आप भी।"

रियाज भाई उनको खामोश रखने के लिए हाथ उठाकर बोले—"यह मैं नही कह रहा हूँ और न खुदा करे ऐसी थर्ड क्लास बात मेरे मुँह मे निकले, यह तो भई मैं इनके मन का भेद खोल रहा हूँ।"

इसी समय शीरीं पर्दा उठाकर कमरे में दाखिल हुई और कहने लगी—"लो भई यहाँ तो अभी तक नाश्ता हो रहा है। हद हो गई नेस्ती की भी। यह इस वक्त दस बजे नाश्ता कैसा?"

नाहीद भाभी ने कहा—"नाश्ता तो कब का हो चुका। अब तो कचहरी हो रही है और शहाब भाई का मुकद्दमा प्रस्तुत है। अच्छा हुआ तुम भी आ गईं।"

शीरीं ने कहा—"सिर्फ मैं ही नहीं आई हूँ, वह नामुराद और बामुराद दोनों भी हैं। अब यह मुकद्दमा फुल बैंच के सामने होगा। मगर याद रखिये कि चीफ जस्टिस का ओहदा मैं अपने सिवाए किसी और को नहीं दे सकती। इसलिए कि जितना मुझे अपने इन्साफ पर विश्वास है और किसी पर नहीं है।"

आगे-आगे शगुफ्ता और उसके पीछे-पीछे भाभी आ पहुँचे। नाहीद भाभी कहने लगी—"भाई खुदा के लिए अब इस मेज की जान बख्श दी जाए।"

रियाज ने कहा—"अब गोल कमरे में सुपरीमकोर्ट का इजलास होना चाहिये।"

मुराद ने पूछा—"यह सुपरीमकोर्ट क्या चीज है ?"

शीरीं बोली—"होती है एक चीज, आप अदालत की तौहीन न करें ?"

और यह सब उठकर जब गोल कमरे में गए, तो शीरीं ने एक अलग सोफे पर बैठकर एक छोटी-सी मेज अपने सामाने सरकाई और गरदन में एक अकड़ पैदा करके कहा—"मुकदमे का विवरण बयान किया जाए।"

नाहीद भाभी बोली—"भई यह मजाक नहीं है। बड़ी संजीदा बात है। शहाब भाई इस मकान से उठकर अपने जाती मकान में जाना चाहते हैं।"

शीरीं ने कहा—"जाती मकान कैसा ? मुबारक हो, मगर है वह कौन सा मकान ?"

रियाज बोले—"यही तो हम इनसे पूछ रहे हैं कि अकेले तो आप हैं, न जोरू न जाता, अल्लामियाँ से नाता। आपको आखिर अलग मकान लेने की जरूरत ही क्या है ?"

नहीद भाभी ने कहा—"और भई अगर जरूरत है तो साफ-साफ कहदें। मुमकिन है कोई ऐसा महमान हो जिस को यहाँ न बुला सकते हों ?"

मैंने कहा—"भाभी ! अब याद रखिये कि आपने छेड़छाड़ की शुरूआत कर दी है।"

रियाज ने मसखरेपन से कहा—"भाई, मैं तो इन जैसे जवान कुँवारे बच्चे का मकान में अकेले रहना ठीक समझता नहीं। वैसे माशाल्लाह यह खूब समझदार हैं।"

शीरीं ने बड़े सन्देहजनक स्वर में पूछा—"आप बताइये शहाब साहब, आखिर वहाँ जाने में मस्लहत क्या है ?"

मैंने उत्तर दिया—"साहब मस्लहत यह है कि वह मकान मुझे सरकारी

तौर पर मिल रहा है। इसमें सरकारी टेलिफोन लगेगा। मेरे ग्राफिस के साथी ग्राते-जाते रहेंगे। सरकारी कर्मचारियों को बहुत सरकारी बखेड़े घर ही पर तय करना होते हैं।"

रियाज ने कहा—"यह सब ठीक है, मगर इसके लिए किसी ग्रलग घर की क्या ग्रावश्यकता है ? इस कोठी का एक भाग उनके लिए ठीक कराए देता हूँ, उसमें एक बैडरूम है, एक ड्राइंगरूम है, एक खाने का कमरा है एक छोटा-सा कमरा दफ्तर का कमरा बन सकता है। उसमें टेलिफोन लगवा लें। वह ग्रलग-का-ग्रलग है ग्रौर इस तरह तुम पास के पास भी रहोगे।"

शगुफ्ता ने कहा—"वाकई यह राय बिल्कुल उचित है, कोठी का वह भाग खुद एक छोटा-सा बंगला है ग्रौर इसके सामने का बागीचा तो मुझे बहुत ही पसन्द है।"

शीरीं बोली—"बस तो शहाब साहब का किस्सा तो रहा बीच में, ग्रब तुम खुद ही ग्राजाग्रो कोठी के इस भाग में।"

ग्रब नाहीद भाभी ने मुझसे पूछा—"क्यों जनाब ! इस तजवीज पर ग्राप क्या कहते हैं ?"

मुराद साहब बोले—"मेरे ख्याल में तो ग्रब कहने-सुनने की गुंजायश रही नहीं।"

शीरीं ने कहा—"भई कहने-सुनने की नहीं, बल्कि यहाँ रहने की गुंजायश का जिक्र है।"

जिस उलझन में इस वक्त मैं ग्रस्त था उसके बावजूद इस बात पर मुझे हँसी ग्रागई ग्रौर मैंने झगड़ा समाप्त करने के लिए कह दिया—"ग्रच्छा साहब, ग्रच्छा, जब ग्राप सब ही एक तरफ हो गए ग्रौर मैं ग्रकेला रह गया तो ग्रब सिवाए ग्रापकी बात स्वीकार कर लेने के ग्रौर चारा ही क्या है ? मैं लिखे देता हूँ कि टेलिफोन इसी ग्रंकसी में लगा दिया जाए।"

रियाज ने उटते हुए कहा—"बात जरा देर में समझ में आती है मगर शुक्र है कि आ तो-जाती है। नाहीद ! मैं कोठी के उस भाग की सफाई और कलई आदि के लिए कहे देता हूँ, रहा उसे ठीक-ठाक करना, सजाना-बनाना, और जरूरत का सामान वहाँ पहुँचाना, यह तुम्हारा काम है।"

नाहीद भाभी बोली—"जो काम आपने अपने जिम्मे लिया है, वह भी मैं कर दूँगी। बस आप तशरीफ रखिये, जिस काम में आप का हाथ लगेगा वह जरूर चौपट हो जाएगा।"

शीरीं ने कहा—"तो अब हथेली पर सरसों क्यों जमाने लगे, टेलीफोन लगने के बाद ही यह सब कुछ कीजियेगा। इस वक्त तो हजरत मुराद मुरादाबादी की ताजा गजल सुन लीजिये। यह सिर्फ मुझी को सुनाना चाहते थे, परन्तु मैं ने कहा यह पब्लिक प्रापर्टी है, सुना है रात को चुपके से हो गई यह गजल।"

मुराद ने मुस्कराते हुए पूछा—"यह मुरादाबादी मुझे किस सिलसिले में कहा गया है ?"

शीरीं ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया—"भई किसी तरह हो जाइये ना मुरादाबादी, ताकि मुराद नाम आप पर सज जाए।"

मैंने कहा—"खैर वतन तो तय होता ही रहेगा, मगर गजल सुनने का शौक बढ़ गया है।"

रियाज ने कहा—"हाँ साहब हो जाए गजल, बिस्मिल्लाह !"

मुराद ने लजाते हुए कहा—"रात को लिखी थी गजल—"

शीरीं ने टोका—"गजल लिखी नहीं कही जाती है, आगे को याद रखियेगा, इरशाद—

मुराद ने कहा—"मतला अर्ज है।"

"जिसकी जुल्फे-दोता ने मारा है।
जिंदगी का वही सहारा है।"

मेरा यह पहला अवसर था इन हजरत के इस घटिया और पोच कलाम को सुनने का। यों तो अक्सर अपना कलाम सुनाते रहे। परन्तु आज जब मैंने सचमुच गम्भीरता से सुनना चाहा तो कलाम यह निकला—जी चाहा कि लाहोलबलाकुबत कह दूँ मगर कहना पड़ा सुबहान अल्लाह।

शीरी ने कहा—"यह खूबी देखिये कि "मारा है" के साथ "दोता" इस तरह कहा गया है मानों दुलत्ती मारी गई है, क्या कहना है इस कलाकारी का·········अच्छा यह बताइये शहाब साहब कि शेर ज्यादा अच्छा है या गाना ·······

रियाज बीच में टोककर बोले—"अब बाज आओ इस शरारत से, हाँ मुराद साहब इरशाद—"

मुराद ने बड़ी सहमी दृष्टि से शीरीं की ओर देखा और कहा—"शेर हुआ है :

> **राज जो लब तक आ नहीं सकता,**
> **वह निगाहों से आशकारा है।"**

नाहीद भाभी के मुँह से निकल गया—"भई यह तो अच्छा खासा शेर कह गए हैं।"

शीरीं बोली—"आप तो इस तरह कह रही हैं जैसे गलती से कह गए हैं अच्छा शेर। यह बात नहीं है कभी-कभी अच्छे शायरों की तरह भी अच्छा शेर कह लेते हैं।"

इस "कह लेते हैं" पर एक जोर का कहकहा पड़ा और मुराद साहब झेंपकर बोले—"मैं समझ गया कि इस वक्त शेर सुनने का मूड नहीं है।"

फिर सब ने लाख-लाख कहा, पर मुराद ने शेर न सुनाने थे न सुनाए।

मैं भी अब एक घर का मालिक हो चुका था। रियाज मंजिल का यह भाग न सिर्फ मेरी जरूरत के लिए काफी था, बल्कि विभिन्न प्रकार की आवश्यकताएँ बढ़ा लेने के बाद भी यह स्थान जरूरत से कुछ ज्यादा ही दिखाई दे रही थी। जैसे इस भाग में दो गुसलखाने थे। अब बताइये कि मैं अकेला आदमी इसके अधिकारों को कैसे पूरा कर सकता था। इसमें एक किचन भी था, जबकि मुझे चूल्हा, हाँडी अलग करने की इजाजत नहीं थी। इसलिए मैंने अपने चपरासी अब्दुलकरीम को 'दम-पुख्त' करने के लिए इस में ठहरा दिया था। ड्राइंग रूम सुरीति के साथ सजा हुआ था। वैसे रियाज मंजिल के ड्राइंग रूम ही से कब छुटकारा पाता था कि इस बेचारे ड्राइंग रूम को इस्तेमाल कर सकता। खाने का कमरा पूरे ढंग के साथ सजा दिया गया था, मगर मैं चूँकि रियाज भाई और नाहीद भाभी के साथ खाता था, इसलिए खाने के इस कमरे को मैंने गैरकानूनी तौर पर अपना व्यायामघर बना लिया था। सुबह इसी में डंड पेलता और बैठकें लगाता था। मेरा तरीका यह था कि प्रतिदिन तीसरे पहर को दफ्तर से आकर सीधा इसी कमरे में जा पहुँचता। नाहीद भाभी और रियाज मेरी ताक में बैठे रहते, जहाँ मुझे जाता देखा' शोर मचाना शुरू कर दिया—

"इधर-इधर······ए जनाब तशरीफ लाइये, चाय ठण्डी हो रही है" या—"शरबत गर्म हुआ जाता है" या "आइसक्रीम घुली जाती है।' नतीजा

यह कि मैं अब्दुलकरीम को आवाज देता हुआ इन्हीं दोनों के पास आ जाता और अब्दुलकरीम स्लीपर, कपड़े आदि वहीं लेकर आ जाता और कोट, जूता, मौजे वगैरा लेकर वापस चला जाता। मगर आज जब आफिस से वापस आया और अपने कमरे की ओर जाने लगा तो किसी ने मुझे न टोका, कोई आवाज न आई, किसी ने मुझे न बुलाया। आज शायद मैं पहली बार दफ्तर से सीधा अपने कमरे में आया था। मैंने इतमीनान से लिबास तब्दील किया, हाथ-मुँह धोया और अब खोज पैदा हुई कि आखिर इस सन्नाटे का कारण क्या हो सकता है। टहलता हुआ रियाज मंजिल जो पहुँचा हूँ तो क्या देखता हूँ कि नाहीद भाभी और शीरीं सिर जोड़े कुछ कानाफूसी कर रही हैं, और रियाज आराम से कुर्सी पर लेटे सिगरेट के धूएँ से छल्ले बना रहे हैं। जैसे किसी गहरी चिन्ता में ग्रस्त हैं। मुझे देखकर नाहीद भाभी ने बड़े बुझे हुए स्वर में कहा—"आ गए आप शहाब भाई ?"

रियाज ने भी बजाए चहकने या चहचहाने के उदासीन लहजे में कहा—"आओ इधर मेरे करीब।"

और सच्ची बात यह है कि मैं कुछ सहम-सा गया कि खुदा खैर करे रंग कुछ बेढब-सा मालूम होता है। पहला ख्याल तो यह आया कि शायद मियाँ-बीवी में आज ठन गई है, मगर फिर सोचा कि यदि मियाँ-बीवी में ठन जाती तो शीरीं यों उदास-उदास क्यों बैठी होती। कहीं ऐसा तो नहीं है कि इस अहमक रियाज ने कोई ऐसी बात कर दी हो कि शीरीं को नाहीद भाभी से शिकायत करनी पड़ी हो। मगर यह बात ऐसी थी कि खुले-खजाने इनमें से किसी से पूछी भी न जा सकती थी। खैर! पहले तो मैंने उन सबका हाल-चाल मालूम किया। इसके बाद उन दोनों के जितने सगे-सम्बन्धी मेरी जानकारी में थे सब की खैरियत एक-एक करके पूछी। फिर नाहीद भाभी की आसामी बिल्ली का हाल मालूम किया। फिर रियाज भाई के अलसेशियन कुत्ते का मिजाज पूछा और जब सबके बारे में यह मालूम हो गया कि सब ठीक-ठाक हैं तो आखिर उलझ कर मैंने नाहीद भाभी से पूछा—

"भई तो फिर यह सोग किस बात का किया जा रहा है ? कुछ बताइये तो सही आखिर बात क्या है। खुदा ना ख्वास्ता आप दोनों में कुछ अनबन तो नहीं हो गई ?,'

रियाज ऊब कर बोले—"वह एक और ही किस्सा है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तो फिर इनसे क्या चोरी है, बेचारे बैठे पहेलियाँ बूझ रहे हैं। शहाब भाई, यह बेचारी शीरीं एक चक्कर में फँस गई हैं।"

मैंने गौर से शीरीं को देखकर कहा—"चक्कर में ! यह फँस गई है ? वह कैसे ?"

शीरीं ने नाहीद भाभी से कहा—"बता क्यों नहीं देतीं आप सारी बात शहाब भाई को ? इन्हें भी न बताओगी तो किसे बताओगी।"

नाहीद भाभी बोली—"लो भला तुम्हारी इजाजत के बिना कैसे बता देती ! शहाब भाई, वह जो आपका खिलोना है ना, कम्बख्त मुराद ; वह इनके लिए मौत का फरिश्ता बनता जा रहा है।"

मैंने पूछा—"मुराद ? क्या मुराद के सम्बन्ध में भी कोई ऐसी बात हो सकती हैं जिस पर आप सब लोग इतने गम्भीर हो जाएँ। मैं बिना सारी बात सुनते ही पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि उस ने जो कुछ भी किया होगा अपनी मूर्खता के कारण किया होगा।"

शीरीं ने अत्यन्त गम्भीर उदासीनता से कहा—"जी नहीं शहाब साहब। मुराद नहीं उनके पिता जी महोदय मेरी मौत का सामान कर रहे हैं।"

मैंने कहा—"बहुत खूब ! मैं तो सिर्फ उस अहमक जिक्र कर रहा था, अब पता चला कि किस्सा है अहमक के बाप का—"

नाहीद भाभी बोलीं—"शहाब भाई वह नरामुराद तो जैसा है सो है ही, आप अच्छी तरह जानते हैं और यह भी आप को मालूम है कि वह हजरत इस गरीब की जान के गाहक बने हुए हैं। इस वक्त तशरीफ लाने का

मतलब यह है कि इनके ताया यानी उस नामुराद के पिता जी उसे लेकर आए हैं कि इन के बाप पर किसी न किसी तरह दबाव डालकर निकाह पढ़वाएँ। अब तक यह ख्याल था कि शीरीं के बाप चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए इस रिश्ते से हरगिज़ सहमत न होंगे, मगर अल्लाह जाने इन बड़े मियाँ ने कौन सा जादू पढ़कर फूँक दिया है और छोटे भाई को राम कर लिया है कि अब वह सहमत हैं और निकाह की तारीख ठहरने का मामला तय होने को है।"

शीरी ने कहा—"मैं अपनी जान दे सकती हूँ मगर यह घटना बरदाश्त नहीं कर सकती।"

और यह कह कर उस हँसमुख लड़की ने दुपट्टे के आँचल में मुँह छुपाकर सिसकियाँ लेना शुरू कर दिया। यह दृश्य मेरे लिए न जाने क्यों इतना भयंकर था कि मैं कुर्सी से बड़ी बैचेनी के साथ उठा और थोड़े फासले पर जाकर टहलने लगा। नाहीद भाभी शीरी को लगातार समझा रही थीं कि वह इस तरह रो-रोकर हलकान न हो। और हम सब को सकून से विचार करने का अवसर दे। शायद कोई ऐसी बात समझ में आ जाए जिससे यह बला टल जाए। रियाज ने मुझे आवाज देकर कहा—"शहाब मेरी राय है कि हम लोगों को अब कोई निश्चित कदम उठाना चाहिये।"

मैंने पूछा—"जैसे···? आखिर क्या करना चाहते हैं आप?"

रियाज बोले—"मैं चाहता हूँ कि खुद जाकर इनके पिता जी से मिलूँ और उनको बताऊँ कि वह अपनी निर्दोष बेटी के खून में हाथ रंग रहे हैं।"

मेरे दिल ने कहा—"ऐसा हो ही नहीं सकता।" मैं इस वातावरण में जिस प्रकार डूब सा गया था, उसी प्रकार अचानक उभर आया। यहाँ तक कि एक बार तो ठट्ठा मार कर हँस पड़ा और जोर-जोर से ताली बजाई। दूर बैठे हुए यह लोग भी चौंक पड़े कि यह आखिर मुझे सूझी क्या है? इसके बाद वह और हैरान हुए जब मैं हँसता हुआ उनके पास आ पहुँचा और नाहीद

भाभी से कहा—"वही मामला है कि तिल ओट पहाड़—तनिक सी बात को आपने इतनी विशेषता दे दी है और एक पहेली की भांति उलझाकर रख दिया है। कोई है कि गंगा-जमुना बहाए देता है रो-रोकर और कोई महाशय हैं कि युद्ध पर जाने को तैयार बैठे हैं। चलिये अब मैं जिम्मा लेता हूँ कि साँप भी मर जाएगा और लाठी भी न टूटेगी। इस वक्त तो आप चाय मँगाइये। बड़ी ही आवश्यकता अनुभूत हो रही है इस समय चाय की, थका हुआ शरीर है ना……।"

नाहीद भाभी ने कहा—"हाँ, सच तो है इस गड़बड़ में चाय भी याद न रही……।"

शीरीं बड़ी गम्भीरता से मेरी ओर देख रही थी और रियाज भी सवालिया चिन्ह बने बैठे थे। आखिर उनसे रहा न गया—"कुछ पता तो चले कि तुम ने क्या निर्णय किया है? कौन सा उपाय समझ में आ गया है जो मारे विश्वास के फूले न समाते हो।"

मैंने कहा—"अभी मैं सब कुछ बताए देता हूँ। कह जो दिया कि अब मेरा जिम्मा है………इस समय तो मुझे चाय पी लेने दो।

नाहीद भाभी ने उठते हुए कहा—"अभी लीजिए चाय, मगर जब तक मैं न आऊँ आप बात बताना शुरू न कीजियेगा।"

नाहीद भाभी के जाने के बाद शीरीं ने कहा—"इतना तो मुझे विश्वास है कि आपकी समझ में जो कुछ आया होगा वह इस पहेली का कोई-न-कोई बेहतरीन हल होगा। मगर काश! आपको यह भी मालूम होता कि मेरे वालिद किस ढंग के बजुर्ग हैं और उन पर अपने बड़े भाई का कितना असर है।"

मैंने उत्तर दिया—"ठहर जाइये साहब! नाहीद भाभी आ रही हैं। उसके बाद आप मुझसे इस पहेली का हल सुनकर स्वयं विश्वास कर लेंगी कि जो कुछ मैंने सोचा है उसका सम्बन्ध आपके बजुर्गों से नहीं है।"

रियाज भाई ने नाहीद भाभी को देखकर अधीरता से कहा—"भई खुदा के लिए आ जाइये ना ताकि जल्द-से-जल्द हम इन हजरत से सुन तो लें कि यह कौन-सी दूर की कौड़ी लाए हैं।"

मैंने कहा—"दूर की कौड़ी नहीं, बिल्कुल पास की और अब मेरा जिम्मा है कि यदि खुदा ने चाहा तो यह घटना उत्पन्न ही न होगी। मैं खुद मुराद से इनकार करा दूँगा कि उसे यह शादी स्वीकार नहीं है।"

शीरीं कहने लगी—"यह क्या कर रहे हैं आप ! वह तो सिर्फ इसी आशा पर जी रहा है।"

मैंने कहा—"मैं यह आशा उसके लिए मौत की भांति भयंकर बना दूँगा। मैं आज एकान्त में उसे मिलता हूँ और ऐसी उलटी-पुलटी उसे पढ़ाता हूँ कि नाम बदल दीजियेगा मेरा यदि वह भूल कर भी इस शादी का नाम ले। वह खुद ही अपने बाप से साफ इंकार न करदे तो जो चोर का हाल सो मेरा हाल।"

रियाज बोले—"भई वह कौन सा जादू पढ़ोगे तुम, कुछ पता भी तो चले······?"

मैंने कहा—"मैं उसे बड़ी नम्रता और संवेदना से समझाऊँगा कि शीरीं से शादी करके तुम केवल उसके एक खानसामा बनकर रह जाओगे। मैं उसे विश्वास दिलाऊँगा कि शीरीं तुम से कभी प्रेम न कर सकेगी। तुम्हारा कुछ भी आदर न करेगी और सदा ही तुम्हें आत्महीनता से ग्रस्त रखेगी। और यह सब कुछ इसलिए होगा कि वह तुम से किसी भी दृष्टिकोण से प्रेम नहीं करती और न ही तुम्हें शादी के लिए उचित समझती है। तुम शीरीं के लिए तो मरे जा रहे हो पर उस बेजुबान लड़की की भावनाओं और इच्छाओं की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते जो तुम्हें देख-देख जी रही है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मगर वह कौन है शहाब भाई ?"

मैने उत्तर दिया—"मैं शगुफ्ता के बारे में उसे विश्वास दिलाऊंगा और खुद शगुफ्ता को ट्रेनिंग दूँगा कि वह अपनी प्यारी सहेली को इस संकट से बचाने के लिए यह नाटक खेले और·········"

शीरीं बोली—"तरकीब तो बहुत अच्छी है। मुराद तो एकदम मार खा जाएगा, मगर मुझे शगुफ्ता से आशा नहीं कि वह यह नाटक पूरी तरह खेल पाएगी या नहीं। वह बड़ी ठस स्वभाव की है।"

मैंने कहा—"चिन्ता न कीजिये भाभी, ऐसा डायरेक्शन दूँगा कि तमाश-बीन भी हैरान रह जायेंगे।"

इस बात-चीत ने वातावरण ऐसा बदल दिया कि अब शीरीं के होठों पर भी दुखद आहों की जगह मुस्कान खेल रही थी।

◈

मुराद को तो शीरीं घर में कैद कर आई थी और उससे कह दिया था कि मुझे और मेरी सहेलियां को एक विशेष ढंग की "नारी सभी" में शिरकत करने के लिए जाना है। आप घर ही पर रहें। यदि मेरी और कोई सहेली आ जाए तो आप भली भाँति उसकी आवभगत कर सकें। यह कह कर स्वयं शीरीं शगुफ्ता के साथ रियाज मंजिल पहुँच गई। वहाँ नाहीद भाभी उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। शीरीं और शगुफ्ता के पहुँचते ही मुझे बुलाया गया और मैं सरकारी फाइल अधूरे छोड़कर उनके सम्मुख उपस्थित हो गया। रियाज ने मुझे देखते ही कहा—लीजिये जनाब डायरेक्टर साहब! कम्पनी की हीरोइन तशरीफ ले आई हैं।"

और यह कह कर शगुफ्ता की तरफ जो हँसकर देखा तो उसने हैरान होकर एक-एक का मुँह देखने के बाद कहा—खुदा—खैर करे यह आज मुझे हीरोइन का खिताब क्यों दिया जा रहा है और यह शहाब साहब डायरेक्टर कहाँ से और किस चीज के बन गए?"

शीरीं बोली—"दम क्यों निकला जा रहा है आपका—अभी सब कुछ बताया जाता है, मगर यह तय है कि तुम्हें मेरी मदद करनी पड़ेगी।"

मैंने शगुफ्ता को समझाने के अन्दाज से कहा—"मैं आपको सब कुछ बताए देता हूँ। वक्त से पहले परेशान होने की जरूरत नहीं। चिन्ता किसी

बात की न करो। सिर्फ एक मामूली सा खेल हमको खेलना है जिसमें आपको एक महत्वपूर्ण रोल अदा करना पड़ेगा।"

शीरीं ने कहा—"हाँ-हां यह अदा कर लेंगी वह रोल, कालेज के नाटकों में कई बार भाग ले चुकी हैं।"

नाहीद भाभी बोली—"शमसा का पार्ट तो ऐसा अदा किया था कि कप भी मिला था इसे।"

रियाज ने कहा—"हम भी कप देने को तैयार हैं और इनकी अदाकारी की पूरी-पूरी प्रशंसा हमारी ओर से भी होगी।"

मैंने इस वातावरण को थोड़ा गम्भीर बनाकर शीरीं और मुराद का पूरा किस्सा शगुफ्ता का सुनाया और उसे बताया कि स्थिति सहसा इतनी भयंकर हो चुकी है कि अब इसका कुछ न कुछ प्रबन्ध करना ही होगा। शीरीं मुसीबत के भवँर में ग्रस्त हो चुकी है और उसे इस भवँर से निकालने के लिए हमें आपकी सहायता की आवश्यकता है। अपनी प्यारी सहेली को इस आपत्ति से बचाने के लिए मुझे पूरी-पूरी आशा है कि आप हमारी सहायता करेंगी।"

नाहीद भाभी ने कहा—"अगर आप यह काम मुझे सौंपते तो विश्वास कीजिये कि मुझे भी कोई एतराज न होता।"

शगुफ्ता बोली—"तो मुझे ही कब एतराज है ? मगर पता तो चले कि मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ।"

अब मैंने पूरे सन्तोष से शगुफ्ता को अपना प्लाट सुनाया और बताया कि मुराद से शीरीं को मुक्त कराने के लिए यह बात अत्यन्त आवश्यक है कि उसका ध्यान किसी दूसरी ओर फेर दिया जाए। सोचा यह गया है कि मैं मुराद को यह विश्वास दिलाऊँगा कि तुम जिस शीरीं के फरहाद बने हुए हो वह तुम से कोई दिलचस्पी नहीं रखती, बल्कि बड़ी हद तक घृणा करती है। यदि उससे तुम्हारी शादी हो गई तो वह तुम्हें जीवन-भर ठुकराती और

तुच्छ समझती रहेगी। तुम शीरीं के प्रेम में एक दूसरी लड़की की भावनाओं का खून कर रहे हो। वह लड़की जो तुम से चुपचाप मुहब्बत कर रही है और दिल ही दिल में घुट-घुटकर मौत की ओर बढ़ रही है—जानते हो कौन है वह—शगुफ्ता।" शगुफ्ता ने उछलकर कान बन्द करते हुए कहा—"खुदा के लिए बख्शिये मुझे। मेरे दुश्मन घुटें उस नामुराद के इश्क में। वाह-वाह यह भी अच्छा मजाक सूझा है आपको!"

रियाज बोले—"जवाब नहीं है बखुदा आपकी सरलता का—आप इसे मजाक समझ रही हैं।"

नाहीद भाभी ने बड़ी संजीदगी से समझाया—"यह समझ लो कि यदि यह तीर भी निशाने पर न बैठा तो तुम्हें एक अच्छी सहेली से हाथ धोने पड़ेंगे। शीरीं फिर जिन्दा नहीं रह सकती। घुल-घुल कर खत्म हो जाएगी बेचारी।"

शीरीं बड़ी उत्सुकता से बोली—"घुलने और सिसकने की नौबत ही न आएगी। मेरे साथ यह अत्याचार किया गया तो घर से डोली की जगह जनाजा ही निकलेगा। मैं यह अपमान निग्रह नहीं कर सकती—कभी नहीं…"

शगुफ्ता गहरी उलझन में पड़ गई"—बोली—तो भई मुझ से कैसे हो सकता है कि मैं खाह-मखाह उस मूर्ख के लिये व्याकुल होना आरम्भ कर दूँ।"

मैंने कहा—"आप शायद समझ नहीं रही हैं। खुदा न खास्ता हम यह थोड़ी चाहते हैं कि शीरीं की जगह आप भेंट चढ़ जाए। आप तो सिर्फ उसे बेवकूफ बनाएगी। नाटक खेलेंगी उसके साथ। मतलब तो सिर्फ यह है कि डूबते को तिनके का सहारा मिल जाए और वह शीरीं की ओर से निराश होकर कुछ समय के लिये आपकी ओर खिंच आए, अपने बजुर्गों से इनकार कर दे कि मैं शीरीं से शादी नहीं करना चाहता। जब यह सब कुछ हो जाए तो आप भी साफ झंडा दिखा दीजिये कि यह मुँह और मसूर की दाल—"

नाहीद भाभी ने कहा—"भला खबर कैसे उड़ेगी। हम लोगों के अलावा और मालूम किसे होगा ?"

शगुफ्ता बोली—'आप लोगों का जिक्र नहीं है। इतना याद रखिये कि पाला पड़ा है एक बेवकूफ से, अगर उसी कम्बख्त ने ढोल पीटना शुरू कर दिया तो… ?"

मैंने कहा—"मजाल है वह ढोल पीटे—पीटकर रख दूँगा उसे। वह तो इस मामले में मेरे मशवरों पर चलेगा ना—मैं आपका डायरेक्टर होने के अलावा उस गधे का भी तो चरवाहा हूँ। वह मेरी मर्जी के खिलाफ एक कदम भी नहीं उठा सकेगा। क्या आपका ख्याल है कि इन सब बातों पर मैंने खुद गौर न किया होगा। मैं इस प्लाट के एक-एक कोने पर काफी सोच-विचार कर चुका हूँ और पूरी जिम्मेदारी के साथ आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप पर जर्रा बराबर भी आँच न आएगी।"

शगुफ्ता ने कहा—"आप जिम्मेदारी लेते हैं तो मैं तैयार हूँ।" यह सुनते ही शीरीं ने उसे दबोच लिया और नाहीद भाभी ने भी प्रसन्नता के साथ कहा—"शाबाश ! लीजिये शहाब भाई मुबारक हो। हीरोइन से तो कण्ट्रैक्ट हो गया।"

मैंने कहा—"बस अब मैं अपना चक्कर चलाता हूँ और आज या कल मुराद को कहीं-न-कहीं गिरफ्तार करके इस नाटक का पहला सीन शुरू करता हूँ। दरअसल तो इस पहले सीन में मुझे अपनी अदाकारी के जौहर दिखाने हैं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"काश ! यह पहला सीन हम भी देख सकते।"

मैंने जवाब दिया—"यह गलत है। हमारी पहली मुलाकात तो बिलकुल एकान्त में होगी। हाँ इसके बाद ऐसे बहुत से सीन आएँगे कि आप लोग उनसे लुत्फ ले सकें। मैं उससे मिलने के बाद शगुफ्ता साहबा को आदेश दूँगा

कि उन्हें अपने प्रेम का इजहार शुरू-शुरू में किस प्रकार करना होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि शगुफ्ता साहबा के सहयोग से मैं शीघ्र ही यह बेल मँढ़े चढ़ा दूँगा।"

यह सब निश्चित हो जाने के बाद शीरीं इतनी प्रसन्न मालूम होती थी कि उसने नाहीद भाभी से कह-सुन कर एक बहतरीन किस्म की चाय-पार्टी का इन्तजाम करना शुरू कर दिया।"

ठीक उस वक्त जब रियाज-मंजिल में सबके सब मुराद साहब को घेरे बैठे थे और वह चाँदमारी का तख्ता बने हर एक का निशाना अपने सीने पर ले रहे थे, मैं भी जा पहुँचा और मैंने देखा कि मुराद साहब खिसियानी हँसी हँसकर शर्मिन्दगी का पसीना पोंछने में मशगूल हैं। मुझे देखते ही रियाज ने ठट्ठा मारते हुये कहा—"लीजिये मुराद साहब वह आ गए। जिनसे आप इस प्रकार के अवसरों पर ढाल का काम लिया करते हैं। भई शहाब किस्सा यह है कि मुराद साहब को अपनी सही उम्र नहीं मालूम—कहते हैं कि अंग्रेजी के हिसाब से मैं ३६ वर्ष का होता हूँ और चाँद के हिसाब से उम्र कुछ और हो जाती है।"

मैंने कहा—"मगर सवाल तो यह है कि किसी से उसकी प्राइवेट बात पूछी ही क्यों जाती है। उम्र का मामला हर शख्स का जाती मामला होता है। मुराद साहब आपने बता तो नहीं दी अपनी उम्र।"

मुराद ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"मैं सचमुच बता देता मगर वाकई ठीक-ठीक तारीख पैदायश मुझे याद नहीं है।"

मैंने कहा—"और पैदायश कोई याद रखने की चीज है? हमारे बड़े-बड़े हमसे सिर्फ यह कहा करते थे कि मौत को याद करते रहो। किसी ने यह नहीं कहा कि पैदायश भी याद रखो। दूसरे यह कि जिस वक्त आदमी

पैदा होता है, वह न जन्त्री देखने के काबिल होता है न कलेण्डर पढ़ सकता है। कई साल गुजर जाने के बाद उसे बताया जाता है कि तुम फलाँ तारीख को पैदा हुए थे। भला ऐसी सुनी-सुनाई बातों का क्या ऐतबार।"

शीरीं बोली—"तो फिर इस पर भी ऐतबार न करना चाहिये कि पैदा हुए थे।"

मुराद ने तुरन्त जवाब दिया—"अपनी पैदायश का जीता-जागता सबूत तो मैं मौजूद हूँ।"

मैंने दाद दी—"शाबाश ! क्या नपा-तुला जवाब पकड़ाया है—जी खुश कर दिया इस वक्त तो। आइये, अब मेरे साथ आइये, मुझे आपसे एक बहुत जरूरी काम है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"चले कहाँ भई ? आप चाय तो पी लीजिये।"

मैंने कहा—"रहने दीजिये अपनी चाय-वाय, मेरी और मुराद भाई की आज एक जगह टी-पार्टी है। मैं चुपचाप चला भी जाता, मगर इनको लेने आना ही पड़ा। आइये मुराद साहब, जल्दी कीजिये, वैसे भी बहुत देर हो चुकी है।"

इससे पहले कि यह लोग कुछ और कहते मैंने मुराद का हाथ पकड़कर उठाते हुए साथ लिया और कार में बिठाकर चल दिया। कुछ देर तक तो मुराद चुपचाप बैठे रहे जैसे उन्हें इस पार्टी की पहले ही से खबर थी, फिर घर से कुछ दूर निकलने के बाद एकदम से चौंके—"मगर वह साहब मुझे कैसे जानते हैं ?"

मैंने हैरत से पूछा—" कौन साहब ?"

कहने लगे—"वही जिनके यहाँ मुझे चाय पर बुलाया गया है।"

मैंने कहा—"वह साहब आपको अच्छी तरह जानते हैं और आप भी उनसे परिचित हैं।"

कहने लगे—"नाम क्या है उनका ?"

मैंने बेपरवाही से कहा—"शहाब।"

दिमाग पर जोर डालते हुए बोले—"मैं तो आपके अतिरिक्त किसी और शहाब से परिचित नहीं हूँ।"

मैंने कहा—"तो फिर मुझ शहाब ही को आपका मेजबान होना पड़ेगा।"

रेस्तोराँ के पास आकर मैंने गाड़ी एक तरफ रोकी और मुराद साहब को लेकर रेस्तोराँ की एक खामोश केबिन में बैठ कर चाय का आर्डर दिया और उनसे कहा—"सच बात यह है मुराद भाई, कि मैं एकान्त में आपसे कुछ बातें करना चाहता था। मालूम नहीं क्या बात है कि मुझे आपसे कुछ खसूसियत पैदा हो गई है। क्यों पैदा हो गई है इसका जवाब न मेरे पास है और न मैं इसके जवाब की कोई जरूरत ही समझता हूँ। यह तो आपने खुद अनुभव किया होगा कि मुझे आपसे एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध जिसे मित्रता कहना चाहिये, पैदा हो गया है।"

मुराद बोले—"बखुदा मुझे इस बात पर गर्व है कि आप वाकई मेरे सच्चे मित्र हैं और हमेशा मेरा साथ देते हैं।"

मैंने गम्भीरता से उत्तर दिया—"साथ मैं नहीं देता, बल्कि देना पड़ता है, अब जैसे मैं आपको इस समय वहाँ से सिर्फ इसलिए उठा लाया हूँ कि मेरे लिए यह बात निश्चित रूप से अस्वीकार्य थी कि सब के सब एक ओर होकर आप पर फब्तियाँ कसते रहें और मैं बैठा रहूँ। न जाने इन लोगों ने समझ क्या रखा है अपने आपको। अपने को सभा का चौधरी समझते हैं। मसखरा समझा है आपको या क्या बात है जिसे देखो वह आप ही पर चोट कर रहा है। सच जानो मैं तो इस वक्त रियाज से लड़ पड़ता, अगर वह जरा भी कुछ और कहता।"

मुराद ने कहा—"जी हाँ अपने आपको बहुत चतुर समझते है।"

मैंने थोड़ी अप्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—"भई, दोष जो कुछ है शीरीं का है।"

मुराद मेरी बात काट कर बोला—"जी नहीं, वह तो बात ही कुछ और है।"

मैंने आँखें दिखाकर डाटा—"बस रहने भी दीजिये। आपकी इस मूर्खता पर रोना आता है। वह आपको लगातार ठुकराए जा रही है, बात-बात पर जलील करती है, और आप हैं कि मरे जा रहे हैं उसी पर।"

कहने लगे—"खैर उनको तो हक है इन बातों का।"

मैंने फिर घूरकर कहा—"हक है उनको ? क्या मतलब ? चूँकि आप उनके उम्मीदवार है इसलिए उसको हक है कि वह बात-बात पर इस तरह आपको जलील करती रहे। सच कहता हूँ कि अगर मेरी मंगेतर का मेरे साथ यह सलूक होता और इस तरह मुझे तुच्छ समझती कि मुझे यह अनुभव हो जाता जैसे वह कह रही है—ए शख्स ! मैं तुझे जूती की नोक पर मारती हूँ और ए मेरे अहमक उम्मीदवार मेरी नजरों में तेरी कोई कीमत नहीं है तो बखुदा मैं कभी उधर का रुख भी न करता। मैं जानता हूँ कि आपको उससे मुहब्बत है मगर उसको ?"

कहने लगे—"होनी तो चाहिये उसको भी।"

मैंने कहा—"मैं पक्के कागज पर लिखकर दिये देता हूँ कि उसे न सिर्फ यह कि आपसे मुहब्बत नहीं है बल्कि वह आपसे नफरत करती है। आपको जलील और तुच्छ समझती है। याद रखिये कि अगर यह शादी उसकी मरजी के खिलाफ और आपकी हिमाकत से हो भी गई तो वह जिन्दगी भर आपको अपना खानसामाँ समझेगी।"

वह हजरत ताली बजाकर हँसे—"खानसामा की भी एक ही रहा······"

मैंने कहा—"यानी हँस भी रहे हैं आप ! बखुदा गोली मार देने को जी चाहता है, अगर आपसे दिली दोस्ती न होती तो न जाने क्या हो गया

होगा ? मेरी बला से आपका जो हक भी हो मगर खलूस में इस वक्त मेरा जी चाहता है कि सचमुच आपके गोली मार दूँ ।"

अपनी हँसी को काबू में लाकर बोले—"वह तो मुझे मालूम है कि यह सब कुछ आप मेरी ही भलाई के लिए कह रहे हैं । मगर मेरा ख्याल है कि शीरीं मुझे अपना समझकर यह सब कुछ करती है ।"

मैंने उसे चिढ़ाने के स्वर में कहा—"लाहोल विलकुवत अब आप मुझ से साफ सुनना चाहते हैं तो सुनिये कि परसों इसी किस्म की बातें आपकी गैर-मौजूदगी में हो रही थीं कि शीरीं आपको बोर, डबल बोर, अक्ल का बेलामिया और न जाने क्या-क्या कह रही थी, यहाँ तक कि शगुफ्ता से उसकी लड़ाई तक भी हो गई ।"

मुराद ने हैरत से कहा—"शगुफ्ता से लड़ाई हो गई ? मेरी समझ में नहीं आता कि शगुफ्ता से क्यों लड़ाई हुई ।"

मैंने बड़ी सरलता से कहा—"नहीं सुन सकी वह बेचारी आपकी अपनी बुराई—जब शीरीं ने यह कहा कि मैं उस मुराद बल्कि नामुराद को कैसे समझाऊँ कि मैं उससे शादी करना और एक गधा पाल लेना बराबर समझती हूँ तो शगुफ्ता भी आग बबूला हो गई और उसने भी खरी-खरी सुनाईं । बोली, तुम अपने को क्या समझती हो । बिला वजह जब देखो मुराद बेचारे को ईंधन की तरह जलाती रहती हो । जबकि वह बेचारा शरीफ और संजीदा किस्म का आदमी है । मुझे तो उसमें कोई बुराई नजर नहीं आती ।"

मुराद ने बड़े इसरार से पूछा—"मगर वह क्यों खाहमुखाह उलझ पड़ी—और उसे यह बातें बुरी क्यों लगीं ।"

मैंने कहा—"तुम्हारी इन बातों से खून खोलने लगता है यार और अन्दाजा होता है कि शीरीं जो कुछ कहती है ठीक ही कहती है । अब या तो तुम बन रहे हो मेरे सामने या अगर वाकई तुम्हें शगुफ्ता के बारे में बिल्कुल

पता नहीं कि वह शीरीं से क्यों लड़ पड़ी तो भई खुदा वाकई तुम पर रहम करे।"

मुराद ने बड़ी मित्रता से मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर कहा—"आपके सिर की कसम मुझे कुछ नहीं मालूम।"

मैंने कहा—"और मालूम भी क्योंकर हो, जनाब को शीरीं ही से फुर्सत नहीं मिलती। उस मुहब्बत के बारे में आप क्या जान सकते हैं जिसे आप शीरीं में ढूँढ रहे हैं। उस मुहब्बत को कोई और अपने दिल में छुपाए चुप-चाप कभी न बुझने वाली आग में जल रहा है।"

मुराद ने सम्भल कर बैठते हुए और टाई को ठीक करते हुए, कुछ घबरा-घबरा कर पूछा—"यानी आपका मतलब है शगुफ्ता ?"

मैंने कहा—"तुम्हारे चेहरे पर यह जो दो आंखें लगी हैं, अगर वाकई इन में रोशनी है तो तुम्हें वह सब कुछ नजर आ जाना चाहिए जो तुम पूछना चाहते हो। वहाँ तो शगुफ्ता को सब तुम्हारा नाम ले-लेकर छेड़ते तक हैं और शीरीं तो यहाँ तक कह चुकी है कि अगर मेरी इस मौत को तुम कबूल करलो तो मैं जिन्दगी भर तुम्हारा एहसान न भूलूँगी।"

मुराद ने कहा—"तो गोया मैं शीरीं साहबा के लिए मौत की हैसियत रखता हूँ।"

मैंने कहा—"बल्कि हराम मौत—और तुम्हें उस गरीब की भावनाओं का एहसास तक नहीं। वह सचमुच आपके लिए मरी जा रही है।"

मुराद ने कुछ सोचते हुए कहा—"एक बार मुझे कुछ थोड़ा सा शक हुआ था, मगर मैं उसे अपनी निगाहों का धोखा समझ कर टाल गया। अभी कल ही की बात है कि उसने मुझ से मेरी गजल की नकल माँगी थी।"

मैंने कहा—"भला बताइये आज तक किसी और ने भी आपसे गजल की नकल माँगी। मैंने तो कई बार उसे आपके शेर गुनगुनाते हुए भी सुना है।

शीरीं ऐसे मौके पर उसका मजाक उड़ाया करती है कि क्या बाजारी शेर गुनगुनाया करती हो।"

मुराद कुछ सन्नाटे में आकर रह गया। मैं उसे इसी सन्नाटे में छोड़कर रेस्तोराँ का बिल अदा करने काउंटर पर चला आया। और जब वापस आया हूँ तो वह हजरत रेस्तोराँ से जाने के लिए मेरे साथ हो लिये, और रास्ते भर कुरेद-कुरेद कर शगुफ्ता की बातें करते रहे और मैं महसूस करता रहा कि तीर निशाने पर बैठा है।

रियाज मंजिल में सब-के-सब बेचैन थे कि अब मैं अपनी और रियाज की बात-चीत का हाल बयान करूँ। मगर मुझे शीरीं का इंतजार था। इसलिए कि वह अब तक न पहुँची थी और जाहिर है कि उसके बिना न मैं रिपोर्ट सुना सकता था और न मुझे ऐसा करना ही चाहिये था। क्योंकि जिनके लिये यह सब कुछ किया जा रहा था वही मौजूद न थी तो किसी और को यह बात-चीत सुनने का क्या हक हो सकता था। मगर शगुफ्ता का यह दावा था कि वह शीरीं की तरह इस तफसील को सुनने का हक रखती है और शगुफ्ता के इस दावे को गलत तो नहीं कहा जा सकता था मगर सवाल यह था कि नाहीद भाभी आखिर इतनी बेकरार क्यों थीं और उन को क्यों रह-रह कर शीरीं पर गुस्सा आ रहा था कि वह अब तक आई क्यों नहीं ?" शीरीं पर गुस्सा करते-करते उनको एक और बात सूझी, बोलीं—"और हाँ जनाब ! शीरीं के सामने तो यह किस्सा शायद ही सुना सकें, इसलिए कि उसके साथ तो वह नामुराद भी जरूर होगा।"

मैंने कहा—"जी हाँ ! यह बात मुझे भी खटक रही थी और मैं उसकी तरकीब पहले ही सोच चुका हूँ। उन हजरत के तशरीफ लाते ही मैं उन्हें चुपके से एकान्त में ले जाकर क्लिफटन रवाना कर दूँगा, और कहूँगा कि वहाँ शगुफ्ता तुम्हारा इंतजार कर रही है।"

शगुफ्ता ने कहा—"और माशाल्लाह ! आपने अब तक मुझे बताया ही

नहीं कि मैं यहाँ से उठकर किसी दूसरे कमरे में जा छुपूँ। यह तरकीब आप के दिमाग में थी नही, अभी आई है।"

और इसी वक्त शीरीं को आता देखकर शगुफ्ता फुर्ती से उठकर अन्दर जा छुपी। मगर हम सब ने शीरीं को तनहा देखकर पहले तो मुराद का इन्तजार किया, मगर जब शीरीं आ कर बैठ गई और वह हजरत नजर न आए तो खुद नाहीद भाभी ने आश्चर्य से पूछा—"वह कहाँ है मौत का फरिश्ता ?"

शीरीं ने कहा—"लो और सुनो, इस वक्त उन्हें कैसे साथ ला सकती थी। उसकी मौजूदगी में शहाब साहब से बात कैसे हो सकती थी ? मैंने उसे एक ऐसी दवा लिखकर दी है जिसकी तलाश में वह इंशाअल्ला एक-एक दुकान छानता फिरेगा, सारे शहर में, और इसके बाद भी खाली हाथ लौट कर आएगा। इतनी देर में हम शहाब साहब से सब कुछ सुन चुके होंगे।"

मैंने ऊँचे स्वर में शगुफ्ता को बुलाते हुए कहा—"आ जाइये शगुफ्ता साहबा, कोई खतरा नही है।"

और फिर शीरीं को सब ने इस चालाकी की दाद दी कि उसकी इस तरकीब ने एक बड़ी उलझन से बचा लिया, वर्ना उस नामुराद गरीब को भेजना पड़ता क्लिफटन की सैर करने और यह हमारे प्लाट का बहुत ही कमजोर हिस्सा होता और बाद में मुझे यह ही कहना पड़ता कि वह तुम्हारा इन्तजार करते-करते थक गई और आखिर खुद ही रियाज मंजिल आ गई थी। मगर शुक्र है कि गड़बड़ करने की जरूरत पेश न आई और आपकी इस तरकीब ने यह मुश्किल आसान कर दी। शीरीं ने इस प्रशंसा का शुक्रिया अदा करते हुए कहा—"आपकी इस तारीफ का बेहद शुक्रिया, मगर आप विश्वास करें कि आपके अतिरिक्त मेरे अपने पास भी थोड़ी-बहुत जाली अक्ल मौजूद है। अच्छा अब आप अपना दिलचस्प मुलाकात का हाल सुनाइये।"

मैंने मुराद से रेस्तोराँ में जो बात-चीत की थी उसे सुनाने से पहले कहा—"वह सारा किस्सा तो मैं सुना ही दूँगा, मगर मैं यह बताने के लिए खुद भी बेचैन हूँ कि मुझे अपने प्लाट की सफलता का पूरा विश्वास हो चुका है। उस से पहली ही मुलाकात में यह मक्सद तो बड़ी हद तक पूरा हो ही गया कि अब शगुफ्ता की एक-एक बात याद करके उसे वह प्रेम का वही रंग देना शुरू कर देंगे जो मैं चाहता था। और मैंने उसे इस बात का भी विश्वास दिला दिया है कि जिस शीरीं के लिए आप फरहाद बने फिर रहे हैं उसे अपनाने में यदि आप कामयाब हो भी गए तो अपने तेशे से आप अपना सिर फोड़ें या न फोड़ें वह आपके तेशे से आपका ही यह महत्वपूर्ण सिर अवश्य फोड़ देगी और जिंदगी भर आप अपना सिर पकड़ कर रोयेंगे।"

नाहीद भाभी ने उत्सुकता से कहा—"भई यह गलत है। हमें तो आप एक-एक बात पूरी तफसील के साथ सुनाइये। यह तो हम जानते ही हैं कि जैसा आप चाहेंगे, होगा वही, और वह अहमक अब आपके चंगुल से निकल कर जा न सकेगा। मगर हुआ क्या ? बात आपने शुरू कैसे की और उसने क्या-क्या जवाब दिया ?"

अब मैंने एक-एक बात, जो मेरे और मुराद के बीच हुई थी, सुनाना शुरू की। थोड़ी ही देर बाद शीरीं ने हँसी से बेचैन होकर कहा—"कमाल तो यह है कि मुराद की बात-चीत में मुराद का कैरेक्टर भी आप इतनी कामयाब अदाकारी के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि अपने चहरे पर भी वही भरपूर हिमाकत पैदा कर लेते हैं जो मुराद के सिवा किसी में नहीं। ऐसी फटी-फटी आँखें जैसे सचमुच मुराद के अक्ल से दीवालिया दीदे।"

रियाज ने हँसते हुए कहा—"अरे······इनका जवाब थोड़ा है नक्काली में। अपनी मिट्टी खराब कर रहा है यह तो सरकारी नौकरी करके। अगर फिल्मएक्टर बन जाए तो लाखों से खेले और सारे फिल्मी सितारों को लजा कर रख दे। एक्टर यह है, डायरेक्टर यह है, स्टोरी राइटर यह है—हाँ तो फिर क्या हुआ ?"

मैंने फिर से बात का सिलसिला जोड़ते हुए जब आगे की कहानी सुनाई और बताया कि मुराद साहब ने अत्यन्त आश्चर्य से पूछा था—"तो क्या मैं शीरीं साहबा के लिए मौत की हैसियत रखता हूँ ?" तो मैंने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया था—"न सिर्फ मौत की बल्कि हराम मौत की—" यह सुन-कर सब हँसी के मारे लोट-पोट हो गए और मेरे लिए बात आगे बढ़ाना कठिन हो गया। अन्त में मैंने इन सबको बताया कि मुराद ने शगुफ्ता की खास अपनायत का इकरार करते हुए यह भी कहा कि शगुफ्ता ने उससे किसी गजल की नकल भी माँगी थी—

शगुफ्ता घबराकर जल्दी से बोली—"जी हाँ वह तो मैंने इसलिए माँगी थी कि मेरे दरवाजे पर हर सुबह जो साईं आते हैं वह मेरे बचपन से एक ही गजल गा-गा कर भीख माँगा करते हैं—"या मिरा ताज गदा या ना बनाया होता।" या अल्लाह जाने क्या है। उस गजल की जगह मैं यह गजल याद करा देती उन्हें। भीख माँगने के लिए बहुत अच्छी गजल है वह।"

शगुफ्ता की इस सादा मगर दिलचस्प बात ने हँसाते-हँसाते पेट में दर्द कर दिया। अभी हँसी का यह तूफान जारी ही था कि मुराद साहब चोरों की तरह दबे पाँव आते दिखाई दिए और रियाज ने उन्हें देखते हुए नारा बुलन्द किया—"अखाह—आइये···आइये···"

"सब आ चुके हैं सिर्फ तिरा इन्तजार है।"

शीरीं ने कहा—"शेर की वह लाइन तो पढ़िये—

बड़ी देर की महरबाँ आते-आते"

मुराद ने इसी शेर की आड़ लेकर कहना शुरू किया—"देर की वजह यह हुई कि···"

रियाज ने फिर बात काट दी। जी हाँ देर की वजह तो जाहिर है कुछ न कुछ जरूर हुई होगी :

"हुई ताखीर तो कुछ बाइसे-ताखीर भी था।"

शीरीं ने बड़ी संजीदगी से पूछा—"क्यों साहब ? सच-सच बताइये कौन था अनांगीर[1]।

मुराद ने घबराकर कहा—"जी अनांगीर ? वह तो मैं जानता नहीं। मगर कराँची के किसी दवाखाने में यह दवाई मौजूद नही।"

शीरी बोली—"वह तो मैं पहले ही जानती थी कि अगर दवा हुई भी तो आपकी सूरत देखकर शायद ही कोई आपको दवा दे। वह दवा है जरा जहरीली और आप दिखाई देते हैं ऐसे जैसे जा रहे हों आत्म हत्या करने।"

शगुफ्ता ने तनिक कड़वाहट के साथ कहा—"मुराद साहब जरा मुझे दिखाइये यह पर्चा।"

शीरीं ने शगुफ्ता की आँखों में आँखें डालकर कहा—"जनाब क्या करेंगी यह पर्चा देखकर ; जिस पर सिवाए दवा के और कुछ नही लिखा है।"

शगुफ्ता बोली—"मैं दवा का नाम देखकर यह बताने की कोशिश करूँगी कि अनगिनत दवाएँ ऐसी हैं जो आउट आफ डेट होकर अप्राप्य हो चुकी हैं।"

मुराद ने गिड़गिड़ाकर कहा—"मैने बखुदा बहुत कोशिश की।"

शगुफ्ता बोली—"तो कौन-सा पाप हो गया जो नही मिली दवा, आप बिला वजह सेहमे क्यों जाते हैं।"

शीरीं ने तीखी चितवनों के साथ कहा—"अल्लाह-अल्लाह बड़ी हमदर्द होती जा रही हैं आप मुराद साहब की।"

शगुफ्ता ने उसी तरह कड़वाहट से जवाब दिया—"जी हाँ, एक मजबूर इन्सान से हमदर्दी हो ही जाती है। जिसका इस क्रूरता से अपमान किया जा रहा हो, तौहीन करके बात-बात में जलील करने..."

१. बाधक

शीरीं ने बीच में टोककर व्यंग्य किया—"मगर यह दुःख आप को क्यों हो रहा है।"

मुराद ने शगुफ्ता से कहा—"भला, आप मेरे लिए क्यों बुराई मोल लेती हैं।"

शीरीं ने डाँटकर पूछा—"क्या मतलब ? अल्लाह ने यह दिन दिया कि आप भी बोले।"

शगुफ्ता ने मुँह बनाकर कहा—"खाक बोले हैं यह, न हुई इनकी जगह मैं, चखा देती इस अपमान का मजा।"

शीरीं ने जलकर कहा—"देखिये शगुफ्ता साहबा—अगर आपको सच-मुच इनसे हमदर्दी है तो रहिये अपनी हद में, मुझसे उलझने की कोशिश न कीजिएगा—मैं भी पठान की बेटी हूँ।"

मैंने इस झगड़े को इसी हद तक काफी समझकर बीच-बिचाव कर दिया और शगुफ्ता को चुप करने की कोशिश की। शीरीं और मुराद को भी वहाँ से उठाकर अपने कमरे में ले आया। ताकि मुराद से पूछ सकूँ कि अब उनका क्या ख्याल है, मगर वह सिर से पैर तक काँप रहे थे और बात करने के काबिल ही न थे। खुदा जाने शीरीं का खौफ था या शगुफ्ता की भावनाओं का असर।

आज शगुफ्ता ने सब को चाय पर बुला रखा था। निश्चित समय तो पाँच बजे का था, किन्तु शीरीं तीन ही बजे घर से निकल खड़ी हुई और रियाज मंजिल से हम सब को भी वक्त से पहले ही साथ-साथ लेती हुई शगुफ्ता के यहाँ जा पहुँची। वह बेचारी भी देखकर हैरान रह गई कि आखिर यह लोग पार्टी में सम्मिलित होने के लिए इतने असंतोष क्यों हैं कि पाँच बजे आने के बजाए तीन ही बजे, भरे दोपहर में आ खड़े हुए। वह इस समय किसी का स्वागत करने को तैयार न थी। और मुँह भाड़, सिर फाड़ बिलकुल उजड़ी हुई-सी फिर रही थी। हम सब को देखा तो हक्का-बक्का रह गई कि न जाने क्या किस्सा है। आश्चर्यचकित होकर पूछा—"खैरियत तो है इतनी जल्दी तो आप सबके आने की आशा न थी। मैं तो समझ रही थी कि पाँच बजे का समय दिया है, आते-आते छ: साढ़े छ: तो बज ही जाएँगे और विशेषकर शीरीं साहबा तो निकलेंगी ही देर से ·····"

शीरीं ने कहा—"मगर आप देख लीजिए कि मैं किस कदर पेशगी वाके हुई हूँ। अब तो आपको कोई शिकायत नहीं ?"

शगुफ्ता बोली—"हो-न-हो कोई-न-कोई बात है जरूर। वर्ना तुम इतनी जल्दी घर से निकलने वाली हो नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम चाय को लँच समझ कर नित्यानुसार देर से आई हो।"

मैंने कहा—"साहब किस्सा यह है कि इस नाटक का लेखक और डायरेक्टर तो मैं हूँ पर यह शीरीं साहबा जब चाहती हैं फ्री एक्टिंग शुरू कर देती हैं और वह भी ऐसी कि प्लाट कुछ का कुछ होकर रह जाए। मिसाल के तौर पर आज जो सीन यह पेश करना चाहती हैं, वह मेरे नाटक में सिरे से था ही नहीं।"

रियाजभाई बोले—"मगर है यह सीन दिलचस्प !"

शीरीं ने कहा—"और नहीं तो क्या ! इसके बिना वह पूरी तरह खुल न सकेगा। आप सब को पूरी तरह मेरा विरोध करना चाहिये।"

हम लोग यह बातें कर ही रहे थे कि शगुफ्ता के नौकर ने आकर मुराद के आने की सूचना दी। शीरीं लपक कर बराबर वाले कमरे में जा पहुँची और शगुफ्ता को भी उसके साथ ही जाना पड़ा। इसलिये कि वह बेचारी खुद भी तैयार न थी। उसने जाते-जाते मुराद के स्वागत की जिम्मेदारी मुझे सौंप दी। अतएव मैं खुद बाहर गया और मुराद को लेकर उस जगह आ गया जहाँ रियाज और नाहीद भाभी ने उसका शानदार स्वागत किया और अकेले आने पर आश्चर्य से पूछा—"यह आप अकेले कैसे मुराद साहब ? शीरीं कहाँ है ?"

मुराद ने कुछ झिझकते हुए कहा—"अब मैं क्या बताऊँ आप से ?"

मैंने कहा—"मैं खुद इनसे यही पूछता आ रहा हूँ, मुझे भी कोई बात साफ नहीं बताते।"

नाहीद भाभी बोलीं—"आखिर आप बताते क्यों नहीं मुराद साहब ! वह अच्छी तो है कुछ तबियत-वबियत तो खराब नहीं।"

मुराद ने कहा—"जी नहीं—तबियत तो ठीक है, ऐसी कोई बात नहीं ...... बल्कि......बस अब क्या अर्ज करूँ ?"

रियाजभाई ने उलझ कर कहा—"अजीब चीज मालूम होते हैं आप भी —क्या अर्ज करूँ, क्या अर्ज करूँ लगा रखी है। आप वही अर्ज कीजिए जो सही बात हो। पूछा सिर्फ यह जा रहा है कि शीरीं क्यों नहीं आई। आपके साथ आना उचित न समझा या बाद में आएँगी, कोई और मजबूरी सामने आ गई है ? आखिर आप बताते क्यों नहीं ?"

ठीक इसी समय शगुफ्ता भी मेक-अप करके और कपड़े-वपड़े बदलकर आ गई और आते ही पहला सवाल उस ने यह किया—"भई ! वह कहाँ हैं शीरीं साहबा ?"

नाहीद भाभी बोली—"न जाने यह मुराद साहब कहाँ छोड़ आए हैं उसे और अब वह कह रहे हैं—क्या अर्ज करूँ।

मुराद ने जान पर खेल कर कहना शुरू किया—"क्या अर्ज करूँ इसलिए कह रहा हूँ कि अच्छे दिल बुरे करना नहीं चाहता। अब आप सब ही जिद कर रही हैं तो बताए देता हूँ कि वह शगुफ्ता बेगम से नाराज हैं।"

शगुफ्ता ने तेवरी पर बल डालकर कहा—"क्यों मैंने कौन-सी उनकी जायदाद मार ली है कि मुझ से नाराज हैं।"

रियाज बोले—"दिमाग खराब है उनका—शहाब चलो हम दोनों चल कर उन्हें पकड़ लाएँ।"

मुराद ने कहा—"कहाँ से पकड़ लाएँगे आप—आप लोगों की तरफ से पहले ही खतरा था और इसी लिए घर से न जाने कहाँ जा चुकी हैं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"यह क्या होता जा रहा है शीरीं को । पहले तो उसका स्वभाव ऐसा न था।"

शगुफ्ता ने कड़वाहट के साथ कहा—"जी माफ कीजिएगा, दिमाग तो उनका सदा ही से आसमान पर रहा है, आप सब ही ने उनकी तारीफ़ कर-

करके उनके मिजाज को बाँस पर चढ़ा-चढ़ाकर उनका दिमाग खराब कर दिया है। उस दिन जो उनसे जरा नोंक-झोंके हो गई थी उसकी गिरह डाल ली होगी दिल में। नहीं आए तो न आएँ यहाँ भी कोई उनके बिना मरा नहीं जाता। वह एक बार मिलना नहीं चाहती तो मुझे सत्तर बार इन्कार है।"

मैंने बड़ी उदासीनता से कहा—"मगर यह बात है बड़ी दुखदायक।"

मुराद बोले—"साहब सबसे ज्यादा नाजुक पोजीशन मेरी है।"

शगुफ्ता ने व्यंग्य किया—"इसमें सन्देह नहीं, आपकी तो दुनिया ही अंधेरी होकर रह जाएगी अगर उन्होंने आँखें फेर लीं। परन्तु सवाल यह है कि आपके अतिरिक्त किसी और की जूती को क्या गरज पड़ी है कि उनकी चापलूसी करे। मैं तो इसी दिन जब्त से काम ले गई वर्ना मिजाज दुरुस्त कर देती।"

नाहीद भाभी ने कहा—"शगुफ्ता! तुम दोष हमें दे रही हो कि हमने उसका दिमाग बिगाड़ा है जब कि दोषी कोई और है—जानती हो कौन? मुराद साहब! यह इतने चापलूस बने कि सचमुच उसका दिमाग आसमान पर चढ़ गया।"

रियाजभाई न जाने कैसे आज एक समय का शेर पढ़ डाला—

हुस्ने-बेपरवा को खुदबीनो[1]-खुदारा[2] कर दिया।
क्या किया मैंने कि इजहारे-तमन्ना कर दिया।

मुराद ने कहा—"जी हाँ, आप जो कुछ कह रहे हैं वह ठीक है, मैं अपनी सजा को पहुँच ही चुका हूँ।"

शगुफ्ता बोली—"आज्ञा हो तो एक शेर मैं भी पढ़ सुनाऊँ।"

इब्तदा-ए-इश्क है रोता है क्या।
आगे-आगे देखिये होता है क्या।

---

१. अहंकारी २. आत्म प्रदर्शक

नाहीद भाभी बोली— "मुराद साहब ! वाकई आपको तो जीवन भर निबाह करना है।"

मुराद ने कानों पर हाथ रखकर कहा—"अजी तोबा कीजिए, मेरी तोबा, मेरे बाप-दादा की तोबा— मौत थोड़ी आई है जो मैं जिंदगी भर का दुःख मोल लूं।"

शगुफ्ता ने कहा—"क्या मतलब ? इतनी बड़ी बात और इस बेपरवाही से आप कह गए।"

तर्के-उल्फ़त[1] बजा सही नासेह !
लेकिन उस तक अगर यह बात गई।

रियाज ने तुरन्त उत्तर दिया—"वह इंशाअल्ला दोनों कानों के बीच में सिर कर दे देगी भाई मियाँ का।"

मुराद ने व्यंग्य करते हुए कहा-

"इज्जो-न्याज[2] इधर तो उधर था गरूरो-नाज[3] !"

नाहीद भाभी ने आशंका प्रकट करते हुए कहा—"सचमुच शीरी ने आदर नहीं किया आपका, ऐसा आज्ञाकारी पति तो उसे जीवन भर नहीं मिल सकता।"

मुराद बोले— "नहीं साहब—बख्शो बी बिल्ली, चूहा लण्डूरा ही भला ! सच कहता हूँ बेमौत ही मारा जाता, यदि यह अनुभव जो अब हुआ है कुछ समय बाद होता।"

रियाज भाई ने कहा—"मैं फिर कहता हूं बड़ा बोल न बोलो, बड़े बोल का सिर, जिस पर सेहरा बँधा होगा, नीचा होगा। आपके पिता जी अब मानने वाले नहीं हैं।"

---

१. प्रेम-का त्याग २. विवशता ३. गर्व

मुराद बोले—"जी नहीं, अब मैं निर्णय कर चुका हूं कि चाहे मुझे सूली पर चढ़ा दिया जाए मगर मैं ऐसी बद-दिमाग लड़की से विवाह करने पर तैयार नहीं हूँ। मैं अपने माता-पिता और दूसरे सम्बन्धियों से साफ-साफ बात करने वाला हूँ और उनसे कह दूँगा कि यदि वह इस बेजोड़ शादी पर तुले रहे तो मैं सदा के लिए आपना मुँह काला कर जाऊँगा।"

नाहीद भाभी ने दुष्टतापूर्ण गम्भीरता से कहा—"मेरा विचार अब भी यही है कि वह आपको अपना सच्चा प्रेमी समझकर यह नखरे कर रही है।"

शगुफ्ता बोली—"कैसी बातें कर रही हो नाहीद ! वह साफ-साफ कह चुकी है कि मैं इन महाशय को एक मिनट के लिए भी सहन नहीं कर सकती। उसकी मूर्खता का रोग संक्रामक है और मुझे भय है कि इसके जरासीम मुझ तक न पहुँच जाएँ।"

मुराद ने बड़ी सरलता से कहा—"जी हाँ, मैं जानता हूँ कि वह मुझे अत्यन्त मूर्ख समझती है। सच कहता हूँ कि अब मैं उसके मनोरथ और उसकी इच्छा से पूरी तरह मुक्त हो चुका हूँ, और अब देखना यह है मुझे कि वह कौन-सा चतुर और महाज्ञानी व्यक्ति मिलता है उसे विवाह के लिए, जो उसके साथ जीवन बिताने के लिए आत्महत्या करेगा।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मुझे दुख है इस बात पर, परन्तु अब यही उचित समझती हूँ कि मुराद साहब उसका ध्यान छोड़ दें।"

रियाज ने बहुत ढंग की बात कही—"और यदि उसका ध्यान छोड़ न सकें, तो अपना ध्यान छोड़ दें।"

अब मैं इस बात-चीत से ऊब चुका था, अतएव मैं ने चाय का तकाजा करके सब को भूली-बिसरी चाय याद दिलाई और चाय के बाद महफिल मुराद को टालने के लिए छिन्न-भिन्न हो गई। जब मुराद चला गया तो हम सब फिर इकट्ठे हो गए, ताकि यह देख सकें कि शीरीं पर इस नाटक का क्या

प्रभाव पड़ा है । देखा तो शीरीं बहुत प्रसन्न और संतुष्ट दिखाई देती थी । कभी शगुफ्ता की अदाकारी की प्रशंसा करती, कभी नाहीद भाभी और रियाज के करतब को सराहती और मैं इनमें मे हर तारीफ का खुद को ही हकदार समझता था, इसलिए कि यह मेरी ही बेल मँढे चढ़ रही थी और मेरा ही नाटक कामयाब हो रहा था ।

आज आफिस में छुट्टी थी। मैं थका हारा सा बिस्तर पर लेटा एक पुस्तक देख रहा था। न दाढ़ी बनाई, न स्नान किया और न कपड़े बदले। मेरे लिए छुट्टी का दिन मनाने की सर्वोत्तम रीति यही थी कि प्रति-दिन के निश्चित कार्यक्रम को अपने ऊपर नियुक्त न किया जाए और समय का दास बनने की बजाए यह उचित है कि समय को अपना दास बनाया जाए। घड़ी याद दिलाए कि यह स्नान का समय है और हम अंगड़ाइयों में डूबे हुए इस प्रकार पड़े रहें जैसे आज हुकूमत ही अपनी है। आज अपनी [illegible] के हम स्वयं ही प्रतिनिधि हैं। आज हम से कोई किसी की गुलामी नहीं करा सकता। विशेष-कर जाड़े में तो छुट्टी मनाने का बहतरीन स्थान गुदगुदा बिस्तर और लिहाफ ही होता है। जी भर कर लेटने की इच्छा पूरी करने को जी चाहता है, अतएव हम इसी प्रकार शेव बढ़ाए, बाल उलझाए, कपड़े फाड़े—किताब पढ़ रहे थे कि रियाज भी आ मौजूद हुए, बोले—"यह क्या नहूसत है कि पड़े हुए ऐंड रहे हैं जनाब बिस्तर पर।"

मैंने कहा—"खुदा-खुदा करके आज जरा अवसर मिला है इस फरागत, और इस नहूसत का आप हैं कि नजर लगाए दे रहे हैं। सवाल यह है कि आप क्यों कील-कांटे से लैस सोलह-सिंगार किए तैयार नजर आ रहे हैं। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि—

"ए जाने-जहाँ तेरा इरादा किधर का है?"

कहने लगे—"कहीं जाने के लिए ही आदमी तैयार नहीं होता, यह भी हो सकता है कि कोई आने वाला हो। वह किस्सा कि एक साहब तहमद बाँधे और सिर पर तुर्की टोपी रखे, बाकी बिलकुल नंग-धड़ंग अपनी मेज पर काम कर रहे थे उनके एक उपकर्मचारी ने पूछा कि आप आज इस प्रकार काम करने बैठ गए, तो बोले—"जी हाँ, आज छुट्टी का दिन है, आज कौन मिलने आ सकता है। वह साहब बोले—मगर यह तुर्की टोपी क्यों पहन रखी है। कहने लगे—इस ख्याल से कि शायद कोई आ ही जाय।"

मैंने यह लतीफा सुनकर कहा—"जी हाँ, यह लतीफा एक सरदार जी से सम्बन्धित है, आपने इसे भी मुसलमान कर डाला।"

रियाज बोले—"भई बात यह है कि मैं साम्प्रदायिक ढंग के लतीफे गढ़ने का कायल नहीं हूँ।"

मैंने उन्हें शुभ कामनाएँ भेंट करते हुए कहा—"आपकी उदार-हृदयता और रवादारी प्रशंसा के योग्य है, परन्तु प्रश्न यह है कि इस समय आपको प्रतीक्षा किस की है।"

रियाज ने मुस्कराकर कहा—"जान-बूझ कर शरारत कर रहे हो। भली-भाँति जानते हो कि मुझे किस की प्रतीक्षा हो सकती है?"

मैंने समझते हुए जानबूझ कर अनजान बनकर कहा—"मैं इतना लाल बुझक्कड़ आपके ख्याल में कब से हो गया कि बिना आपके बताए हुए आपके दिल का भेद मालूम कर सकूँ।

रियाज ने कहा—"खैर यह भेद तो मैं तुम पर कई बार स्वयं ही खोल चुका हूँ और शायद तुम अकेले आदमी हो जिसे पूरी तरह यह अंदाजा है कि शीरीं मुझ पर किस बुरी तरह छा चुकी है।"

मैंने आज इस सम्बन्ध में उसे खरी-खरी सुनाने का निर्णय कर लिया था। अतएव सम्भल कर बैठते हुए कहा—"शीरीं के तुम पर छा जाने का तो खैर मुझे कोई अनुभव नहीं, हाँ मैं यह देख रहा हूँ कि आपका दुर्भाग्य

अवश्य आपके सिर पर सवार है। आप यह बेहूदा मजाक अपने चरित्र के लिए उचित समझते हैं तो कोई बात नहीं और यदि गम्भीरता से आप इस बारे में सोच रहे हैं तो वाकई आपको लज्जा आनी चाहिए। मैं आपके रंग-ढंग से अच्छी तरह परिचित हूँ और गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में मैंने कई तमाशे आपकी कलाबाजियों के देखे हैं। विवाहित जीवन से पूर्व भी आप जिस तरह इस मामले में डाँवाडोल रह चुके हैं मैं इससे भी नावाकिफ नहीं हूँ। मगर नाहीद भाभी जैसी बीवी मिल जाने के बाद अगर वाकई तुम वही हो, जो इस शादी से पहले थे, तो इससे ज्यादा दुख की बात मेरे लिए कोई और नहीं हो सकती।'

रियाज ने उलझ कर कहा—"वाह ! तुम तो लगातार उपदेश झाड़ कर बोर करने पर तुल गये हो। मैं जनाब की सेवा में यह शिक्षा प्राप्त करने नहीं आया हूँ बल्कि यह कहने आया हूँ कि शीरीं मेरे लिए एक प्राब्लम बनती जा रही है और मैं अब उस जगह पहुँच चुका हूँ जहाँ इस प्रकार के छिछले और ओछे उपदेश मेरे लिए कोई विशेषता नहीं रखते—

मायूस हो चले हैं मलामत-गराने-इश्क,
वह वक्त है कि बात समझता नहीं हूँ मैं।

मैंने अपने को काबू में रखते हुए कहा—"क्या आपको विश्वास है कि शीरीं भी आपकी तरह इस जिल्लत पर उतर आएगी।"

रियाज भाई बोले—"जिल्लत विल्लत की बात तो आप छोड़िये, आप यह बतलाइये कि शीरीं को यह कैसे बताया जाए कि वह मुझे इस हद तक अपना चुकी है। इतना तो खैर मुझे अन्दाजा है कि कम-से-कम वह मुझे नापसन्द तो नहीं करती।"

मैंने कहा—"नापसन्द नहीं बल्कि वह आपको बहुत पसन्द करती है, मगर नाहीद के प्रति की हैसियत से। यदि उसके दिल में भूल कर भी यह बात

आ जाए कि आप खुद उसके गाहक बन चुके हैं तो वह आपको बरदाश्त नहीं कर सकती।"

रियाज ने व्यंग्य करते हुए कहा—"खैर यह आपकी भूल है और सच बात यह है कि आपको अन्दाजा ही नहीं कि उसकी निगाहों में मेरे लिए कितना प्रेम है। वह मन ही मन में इस बात से अच्छी तरह सूचित हो चुकी है कि मैं उसके कितने करीब आ चुका हूँ। मैं समझता हूँ कि अब वह समय आ पहुँचा है जब निगाहों की बात होठों पर आ जानी चाहिए।"

अल्लाह जाने मैं इस बात का कितना सख्त जवाब देता और बात कितनी बढ़ जाती कि उसी समय अचानक नाहीद भाभी और शीरीं दोनों इस कड़वे-कसैले वातावरण में अपनी मुस्कराहटों के फूल बरसाती और बल खाती आ मौजूद हुईं। नाहीद भाभी ने आते ही बरसना शुरू किया—

"किस इत्मीनान से आप लोग यहाँ बैठे हुए गपबाजी कर रहे हैं और वहाँ वह गरीब अपने को सूली पर चढ़ा चुका है।"

मैंने पूरी तरह ध्यान देते हुए पूछा—"कौन मुराद ? आ गया वह युद्ध के मैदान में, मैं जानता था कि वह सिर से कफन बाँध चुका है और बस आने ही वाला है जान देने···मगर हुआ क्या ?"

नाहीद भाभी ने कहा—"अरे बड़े तमाशे हो रहे हैं वहाँ ! इनसे पूछिए शीरीं से।"

शीरीं ने अपनी हँसी पर काबू पाकर कहा—"आपके बनाए हुए इस सैनिक ने पहले तो पिता जी महोदय को अल्टीमेटम दिया जिसने हमारे घर में एटम बम का सा समा पैदा कर दिया। अब्बाजान बुलाए गए, बड़ी अम्मा और माता जी बुलाई गईं। बड़े अब्बा चीखे-पीटे, चिल्लाए, रोए इस नालायक बेटे को गोली मार देने लिए बन्दूक उठाई। त्याग-पत्र लिखने को कागज कलम माँगा और एक अच्छी-खासी कयामत बरपा करके रख दी। वह अल्टीमेटम बारी-बारी सबने पढ़ा और अन्त में अब्बाजान ने वह पत्र लेकर इस

असावधानी से अपने पास रख लिया कि मैं आप लोगों को दिखाने के लिए लेती आई हूँ।"

नाहीद भाभी ने उछलकर कहा—"अच्छा यह बात मुझे बताई भी नहीं! लाओ मुझे दो यह खत।"

रियाज ने कहा—"नहीं, नहीं, शहाब को दो, यह पढ़कर सुना देंगे।"

मैंने खत लेकर सब को सुनाना शुरू कर दिया।

"माननीय पिताजी !

हाथ जोड़कर आप से यह निवेदन करने की आज्ञा चाहता हूँ कि आज इस पत्र द्वारा मैं आप से वह सब कुछ कह दूँ जो जुबान नहीं कह सकती।

क्या कहूँ कुछ कहा नहीं जाता,
बिन कहे भी रहा नहीं जाता।"

नाहीद भाभी ने कहा—"शैर ! यानी बाप को शैर भी लिखा है इस नामुराद ने।"

शीरीं बोली—"इस शैर की वजह से ही तो यह यकीन आ गया कि यह खत शहाब साहब ने नहीं लिखवाया उसने खुद ही लिखा है।"

"लाहौल वलाकुवत ! साहब खुदा के लिए खत सुन लेने दीजिए। यह छान-फटक बाद में कर लीजियेगा।"

मैंने फिर खत पढ़ना शुरू किया—

"सुयोग्यता की बात तो यह है कि मैं आप लोगों के सम्मुख अपना सिर झुका दूँ और जो कुछ आप मेरे लिए कर रहे हैं उसी को किस्मत का लिखा समझ लूँ, परन्तु बात यह है कि मैंने काफी सोच-विचार करने के बाद और शीरीं साहबा के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद—"

नाहीद भाभी को फिर हँसी का दौरा पड़ा—

रियाज ने भी हँसकर कहा—"है वाकई बना बनाया बूदम ! भई जरा खत सुन लेने दो, फिर इन बातों पर हँस लेना।"

मैंने फिर पढ़ना शुरू किया—

"मैंने काफी सोच-विचार करने के बाद और शीरीं साहबा के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद यह निर्णय किया है कि मेरा उनका निबाह न केवल कठिन है, बल्कि यह विवाह हो भी गया तो वह जीवन-भर मुझे घृणा से ठुकराती रहेंगी और वह आदर कभी न कर सकेंगीं जो एक पत्नी को अपने पति का करना चाहिए। वह मुझे अपनी महानता के मुकाबले में बहुत तुच्छ और तिरस्कृत ख्याल करती हैं और किसी प्रकार भी अपने योग्य नहीं समझतीं। अतएव मैं जीवन-भर का यह अपमान मोल लेने को तैयार नहीं हूँ। मुझे आशा है कि आप कृपया इस समस्या पर गम्भीरता से ध्यान देंगे। मैं अपने तौर पर पूरी तरह निश्चय कर चुका हूँ कि शीरीं साहबा को पत्नी की हैसियत से स्वीकार करना मेरे लिए असम्भव है और इस सम्बन्ध में जो बुराई-भलाई मिलने वाली है मैं उसे भुगतने के लिए तैयार हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि आप को माननीय चाचाजान की इच्छा का अत्यन्त ख्याल है, परन्तु खुदा के लिए भाई की मुहब्बत पर बेटे की मुहब्बत को भेंट न कीजिए और शान्तिपूर्वक इस झगड़े को समाप्त करके मुझे नया जीवन-दान दीजिए।

आपका नामुराद बेटा—मुराद"

मैंने खत पढ़कर कहा—"जिन्दाबाद मियाँ मुराद साहब ! यह तो वाकई तुमने बमबारी की है।"

"खत की विशेष शैली, इसकी गिरावट और नामाकूलियत को छोड़ते हुए जरा यह तो गौर कीजिए कि कितना कड़वा और सख्त खत लिख मारा है जालिम ने…"

शीरीं बोली—"बस कुछ न पूछिये कि इस खत ने कैसी आग लगा रखी है। अम्माजान खुदा का शुक्र अदा कर रही हैं कि उनकी लाड़ली को

इस बेहूदा मंगेतर से छुटकारा मिल गया, परन्तु बड़े अब्बा और बड़ी अम्मा दोनों ज्वालामुखी बने बैठे हैं और खुद बदौलत खत भेजने के बाद से अब तक लापता हैं।"

रियाज ने पूछा—"क्या मतलब ? यानी कल से अब तक घर ही नहीं आए।"

"नहीं साहब दूर-दूर पता नहीं है। सम्भव है कि जनाब को खोज-विज्ञापन छपवाकर बँटवाने पड़ें कि इसे पढ़ते ही घर आ जाओ। तुम्हें कोई कुछ न कहेगा।"

मैंने कहा—"कम से कम उसे हम लोगों से तो मिलना चाहिए। अब उससे मेरा मिलना बहुत जरूरी है, ताकि मैं उसके इरादे में कमजोरी न पैदा होने दूँ और वह इस परीक्षा में किसी मंजिल पर फिसल न जाए।"

मैं इन सब को यहीं छोड़कर जल्दी-जल्दी तैयार हुआ और मुराद की तलाश में निकल खड़ा हुआ।

क्या कोई हत्या का अपराधी रूपोश होगा या कोई कम्युनिस्ट अन्डरग्राउंड होगा, जिस प्रकार शीरीं से शादी न करने का निर्णय घोषित करके मुराद लापता हुए थे। सच तो यह है कि मेरे फरिश्तों को भी यह पता न चलता कि आखिर हजरत हुए क्या ? वह तो कहिये कि खुद उन्हीं का पत्र आफिस के पते पर मुझे मिला, जिसमें लिखा था कि मैं मस्लेहत की बिना पर अपने को छुपाए हुए हूँ। परन्तु आप से मिलना अत्यन्त जरूरी है। मैं चाहता हूँ कि आप सोमवार की शाम को फिरेयर हाल के पूर्वीय लान पर मुझ से अकेले आकर मिल लें, और इसकी कोई खबर रियाज मंजिल में किसी को न होने दें। इसलिए कि शीरीं तक इस बात के पहुँचने का खतरा है जो तत्काल भयंकर भी हो सकता है। मुझे यह खत जो दर-असल एतवार ही की डाक में आ चुका था, सोमवार के दिन दफ्तर पहुँचकर मिला। दफ्तर से वापसी पर पहला काम मैंने यही किया कि रियाज और नाहीद भाभी को यह खत दिखाया कि लीजिए मुबारक हो।

नाहीद भाभी ने खत देखते ही कहा—"तो जाइये ना और पकड़ लाइये उसको वर्ना कल सालगिरह की पार्टी उसके बिना सूनी रहेगी। क्या यह नहीं हो सकता कि हम लोग भी चलें आपके साथ।"

मैंने कहा—"यह उचित न होगा। इस प्रकार उसका विश्वास मुझ पर से

उठ जायगा । मैं प्रयत्न यही करूँगा कि वह कहीं और रहने की बजाए मेरे साथ ही चला आए ।'

रियाज भाई बोले—"वाकई उसे समझाना कि हम उसके ऐसे दुश्मन थोड़े ही हैं कि उसे उसके खून के प्यासे माता-पिता के हवाले कर दें ।

मैंने कहा—"मैं उसके दिल से शीरीं का डर निकालने का प्रयत्न करूँगा । शीरीं तो खुदा से चाहती थी कि तुम से उसे छुटकारा मिले । इस-लिए वह तो तुम्हें अपना कल्याणकारी समझ रही हैं । उसकी जगह तुमने शादी से इनकार करके उसकी मुश्किल आसान कर दी और उसकी फांसी का फन्दा तुमने अपने गले में डाल लिया ।"

नाहीद भाभी ने कहा—"ऐसा मूर्ख है कि यह सरल सी बात भी उसकी समझ में नहीं आ रही है ।"

रियाज भाई बोले—"शीरीं बता तो रही थी कि साहबजादे की अम्माँ सख्त परेशान हैं कि न जाने उनका लाडला कहाँ गया, मगर पिताजी महोदय यही कहते हैं कि गैरतदार होगा तो अब मुँह न दिखाएगा ।"

मैंने कहा—"वह बड़े मियाँ भी बहुत चलते पुर्जे हैं । स्कीम तो उनकी यह थी कि शीरीं के घराने की सारी दौलत इस शादी के द्वारा उनके यहाँ आ जाएगी । बरसों की नाराजगी इसी कारण खत्म की गई, वर्ना जायदाद के मुकदमे में क्या कुछ न हुआ । सगे भाई को, अपने बाप की नाजायज औलाद तक तो सिद्ध करने की कोशिश की गई और अदालत में यहाँ तक कहा गया कि मेरे बाप ने जब माताजी को तलाक दे दी थी, उस तलाक के डेढ़ साल बाद यह लड़का पैदा हुआ था ।"

नाहीद भाभी ने माथे पर हाथ मार कर कहा—"हाए ! मेरे अल्लाह मरी हुई माँ पर भी यह बेहूदा इल्जाम ! फट पड़े वह सोना जिससे टूटें कान ।"

रियाज भाई बोले—"तुम नहीं जानतीं, मुकदमेबाजी में यही सब होता

है। जलन तो उन्हें यह थी कि शीरीं की माँ भी काफी दौलत लेकर आई हैं। अतएव छोटे भाई से उनकी माँग यही थी कि तुम्हें सुसराल की इतनी दौलत मिल गई इसी पर निर्भर रहो और बाप की जायदाद पर नजर न डालो।"

मैंने कहा—"खैर अब वह अंगारों पर लोट रहे हैं कि इस दौलत को समेटने का एक रास्ता पैदा हुआ था सो उस पर साहबजादे ने पानी फेर दिया।"

मैंने घड़ी जो देखी तो छः बज रहे थे। इसी वक्त रियाज मंजिल से फिरेयर रोड जाने के लिए निकल खड़ा हुआ और फिरेयर हाल पहुँच कर पूर्वीय लान पर इधर-उधर आँखें फाड़-फाड़कर मुराद को ढूँढ ही रहा था कि वह मेरी पीठ पीछे से आकर धीरे से बोला—"मैं तो बड़ी देर से आपकी प्रतीक्षा कर रहा था और दुआएँ माँग रहा था कि खुदा करे मेरा खत मिल गया हो।"

मैंने बड़े प्रेम से उसे अपने से चिपटा कर कहा—"बड़े व्यर्थ आदमी हो। परेशान करके रख दिया सबको। ऐसे गुम हुए कि और तो और खुद मुझे भी अता-पता न दिया कि हो तो कहाँ हो।"

मुराद ने कहा—"तो और क्या करता—आप नहीं जानते कि जो खत मैंने अब्बाजान को लिखा है उसके बाद सबके सब मेरी जान के ऐसे गाहक बने हैं कि तिक्का-बोटी कर डालें अगर मेरा पता चल जाए उन्हें।"

मैंने कहा—"मुझे उस खत की सूचना मिल चुकी है। उस सारे हंगामे की खबर है जो इस खत ने घर में मचा रखा है, मगर यार! जिस बहादुरी के साथ तुमने वह खत लिखा है उसी बहादुरी के साथ उसके बाद के हालात का मुकाबला भी करना चाहिए था। यह क्या चोरों की तरह मुँह छुपाए फिर रहे हो।"

मुराद ने बड़ी नम्रता से कहा—"तो क्या आपकी राय यह है कि अब्बा-

जान जो गोली मारे वह मैं चुपके से खालूँ। चचाजान अपनी बेटी का जो बदला लें उसके लिए अपने को प्रस्तुत कर दूँ और खुद शीरीं, जिसके विरुद्ध मैंने इतना विष उगला है, आपके खयाल से उस खत को शरबत का घूँट समझ कर पी गई होगी और मुझसे बदला न लेगी।"

मैंने उत्तर दिया—"यार एक बात बताओ। वह यह कि जिस समय बुद्धि बाँटी जा रही थी तुम आखिर खिसक कहाँ गए थे कि बुद्धि नाम की वस्तु से एकदम कोरे रह गए। यह जितना भय आपको घेरे हुए है इसमें से किसी का कोई वजूद नही। आज तक किसी के बाप ने अपने बेटे को गोली नही मारी। इस प्रकार की गोलियाँ सिर्फ जुबानी मारी जाया करती है। बेटे का निशाना बाँध कर बन्दूक की लबलबी दबाना आसान नही है। हैरत है कि इस बात के लिए तुम्हारा दम निकला जा रहा है। तुम्हारे चचा के बारे में मै पक्के कागज पर लिखने को तैयार हूँ कि वह तुम्हारे इस इनकार पर अप्रसन्न नही बल्कि बहुत प्रसन्न है। उन्हे अपनी बीवी की खुशी पूरी करने का अवसर मिला, जिसे तुम फूटी आँख न भाते थे। मगर भाई से इतने दिनो की सुलह-सफाई के बाद वह इस शादी पर सिर्फ इसलिए तैयार हो गए थे कि बिछुड़ा हुआ भाई इतने दिनों के बाद मिलकर कही फिर जुदा न हो जाए और खुद अपने घर में बीवी की रजामन्दी के बिना यह फैसला करके अपनी जान झंझट में फंसा चुके थे। तुम्हारे इस निर्णय से वह तो समझ रहे होगे कि साँप भी मर गया और लाठी भी न टूटी। रह गई शीरीं तो उसके बारे में तुमने जो कुछ कहा है उस पर तो जी चाहता है "नासमझी" का नोबिल प्राइज तुम्हे दिलवाया जाए। तुम अच्छी तरह जानते हो कि वह तुम से शादी तो कर ही नही सकती थी। अगर तुम इनकार न करते तो उसे इनकार करना पडता और यदि इस इनकार के बावजूद भी उसके साथ धाँधली की जाती तो सम्भव है कि वह अपनी जान पर खेल जाती। अब तो वह तुम्हें अपना मुक्तिदायक समझ रही है और तुम्हारी बहादुरी की जितनी प्रशंसा वह करती है उतनी शायद शगुफ्ता न कर सकती हो।"

मुराद पूरे ध्यान से यह सब कुछ सुनता रहा। मगर शगुफ्ता का नाम सुनते ही उससे न रहा गया और उसने बड़े चाव से पूछा—"क्या मतलब आपका ! शगुफ्ता प्रशसा न करती होगी ? क्या······"

"सदके जाऊँ इस भोलेपन के," मैंने कहा—"जान-बूझकर नन्हें बन रहे हो। क्या शगुफ्ता इतना भी नहीं जानती कि इतना बड़ा बलिदान तुमने सिर्फ उसी के लिए दिया है। उस पर शीरीं को निछावर कर दिया है। खुद अपने लिए मुसीबत मोल ले ली है। घर से बेघर हो गए हो। बाप के प्रेम और मां की ममता से महरूम हो गए हो।"

मुराद ने रुआँसा होकर कहा—"मैंने वाकई यह सब कुछ उसी के लिए किया है और अगर उसे इन सब बातों का एहसास है तो मैं इसी को अपना बदला समझता हूँ। क्यों, तो क्या आपको ख्याल यह है कि वह इन बातों को महसूस कर रही है ?"

मैंने कहा—"कमाल करते हो भई तुम भी—अब भी महसूस न करेगी तो फिर कब करेगी। जब उसे यह विश्वास था कि तुम शीरीं के सिवा किसी के नहीं हो सकते उस वक्त भी वह अपनी भावनाओं से मजबूर थी और शीरीं से बात-बात पर उलझ पड़ती थी। तो अब उससे ज्यादा कौन खुश हो सकता है, जब कि उसे यह पता चल चुका है कि तुम ने सिर्फ उसी के लिए शीरीं को ठुकराया है।"

मुराद ने बेसब्री से कहा—"यह आप सच कहते हैं शहाब भई ? मगर क्या उन्होंने इस सम्बन्ध में आपसे या किसी और से कोई बात की है।"

मैंने कहा—"अकल के बैल ! इस प्रकार की बातें कही नहीं जातीं इन बातों को ताड़ने वाले ताड़ लिया करते हैं और इतना अनुभव तो सभी को है कि आज कल जितनी शगुफ्ता खुश है और फूली नहीं समाती इतनी खुश मुझे तो कम से कम कभी दिखाई नहीं दी। कल ही की तो बात है कि एक झड़प जनाब ही के कारण उसके और शीरी के बीच हो गई।"

मुराद ने बड़ी बेसब्री से पूछा—"झड़प ? वह कैसे ?"

मैंने कहा—"बात कुछ तुम्हारे लापता हो जाने पर हो रही थी कि शीरीं के मुँह से निकल गया "खस कम जहाँ पाक", बस जनाब शगुफ्ता के आग ही तो लग गई। उसने तुरन्त कहा—जी हाँ यह बात आप इसलिए कह रही है कि उन्होंने आपसे यह कहकर छुटकारा पाया है—

मेरे लिए शायाँ खसो-खाशाक नहीं है।"

मुराद ने खुश होकर कहा—"वल्लाह ! कमाल है, क्या भरपूर और नपी-तुली बात कही है। अच्छा तो फिर ! मेरा मतलब यह है कि फिर क्या हुआ······?"

मैंने कहा—"फिर क्या होना था, शुरू हो गई जंग। शीरीं ने तुनक कर कहा वह बिजली जंगलों और पहाड़ों पर ही गिरे और मुझे 'खसो-खाशाक' समझकर ही माफ करे, यही बहुत है। जैसी रूह वैसे फरिश्ते। उसे आप जैसी कदरदानों की ही जरूरत है।"

मुराद ने कहा—"लाहौलवलाकुवत ! इतनी ऊँची बात का कितना तुच्छ जवाब दिया गया। खैर शहाब भाई, मैं तो अहसानमन्द हूँ आपका कि आपने मेरी आँखें खोल दीं। नहीं तो मैं यह अन्धा जुआ खेल ही रहा था और अगर सच पूछिये तो अब भी जुआ ही खेल रहा हूँ। कौन जाने कि शगुफ्ता भी मुझे स्वीकार करेगी या नहीं।"

मैंने कहा—"अगर आप यह चाहें कि वह आपको देखते ही स्टेज एक्टिंग शुरू कर दे कि—ए मेरे नामुराद आशिक ! आ मेरे पहलू में, दिल बेकरार है, आँख अश्कबार है, मुझे तेरा इन्तजार है, इसलिए कि मुझे तुझ से प्यार है और प्यार बेअख्तियार है।"

मुराद ने हँसकर कहा—"खैर, खैर ! यह तो असम्भव है पर यह भी तो हो सकता है कि उसे मुझसे हमदर्दी हो जिसे आप मुहब्बत वगैरा समझ रहे हो।"

मैंने कहा—"अजी मैं न मुहब्बत समझ रहा हूँ, न वगैरा। लेकिन यह बताओ कि हमदर्दी उसे क्यों होगी। कौन से आप अनाथ और अपाहज है, नाबीना हैं कि उसे आप से हमदर्दी होगी। मैं तो यह जानता हूँ कि उसे अब, जब आप शीरीं से सम्बन्ध तोड़ देने का निर्णय घोषित कर चुके हैं अपने से और ज्यादा करीब नजर आएँगे और अब वह आपसे और भी करीब होने की कोशिश करेगी।"

मुराद ने उदासीनता में कहा—"काश मैं उन सभाओं में शरीक हो सकता और इन सब बातों का खुद अन्दाजा लगा सकता।"

मैंने कहा—"तो सवाल यह है कि उन सभाओं में आप शरीक क्यों नहीं हो सकते। क्या आपका ख्याल यह है कि रिआज भाई या नाहीद भाभी, शगुफ्ता या मैं आपको पकड़ कर आपके अब्बाजान के हवाले कर देंगे।"

मुराद ने कहा—"जी नहीं बल्कि शीरीं······"

मैंने बात काट कर कहा—"फिर वही शीरीं! यार तुम कभी अकल के आस सास आजाया करो। शीरीं अपने या तुम्हारे माँ-बाप से यह जाकर कह देगी कि उन्हें जाकर पकड़ लाओ और मेरे साथ उनकी शादी करदो।"

मुराद ने कहा—"नहीं, खैर यह किस तरह कह सकती है वह?"

मैंने कहा—"जनाब! वह तो शुक्रिया अदा कर रही है कि आप गायब हो गए। वरना उन्हें यह खतरा भी था कि कहीं इस इन्कार के बावजूद भी अगर बाबाजान ने लाल-पीली आँखे दिखाई और अम्मीजान ने टसुए बहाए तो ऐसा न हो कि यह हजरत फिर से राजी हो जाएं। वह तो आपको और भी छुपाने की कोशिश करेगी और अगर सच पूछिये तो आप छुपकर अगर कहीं रह सकते हैं तो वह खाकसार का घर ही है, जहाँ आपकी रक्षा करने वाले हम लोग मौजूद हैं।

मुराद ने कहा—"एक बार मुझे यह भी ख्याल आया था कि आपकी रक्षा में आजाऊं फिर सोचा सम्भव है कि आप इसे पसन्द न करें।"

मैंने जवाब दिया—"अब आप आदमियों की तरह चलिये और पूरे संतोष के साथ मेरे साथ रहिये। कल नाहीद भाभी की वर्षगांठ है इसमें शिरकत कीजिये नहीं तो सभा सूनी रहेगी, और यह मेरा जिम्मा है कि आपका बाल भी बाँका न होगा। आपके पसीने पर खून बहाने के लिये हम मौजूद हैं।"

मुराद को मुझ पर इतना विश्वास तो जरूर है कि मेरे इस वायदे के बाद उसे तनिक भी संदेह न रहा कि मेरी रक्षा में आकर उसके लिए कोई भय सम्भव हो सकता है। दूसरे वह इस महफिल में आने और शगुफ्ता से मिलने के लिए भी बेचैन था। अतएव फिरेयर हाल से वह मेरे साथ ही रियाज मंजिल आ गया।

मुराद की तो खैर कोई बात नहीं, वह तो हैं ही अक्ल के दिवालिया और समझ के कोरे, पर मुझे क्रोध था रियाज पर कि उसने क्या बेहूदगी की है, वैसे तो यह बेहूदगी रियाज के लिए कोई नई बात न थी और उन हजरत ने जीवन भर इसी कला का अभ्यास किया था। दिल के हाथों में उनकी नकेल रही थी और दिल के तो आँखें होते ही नहीं इसलिए यह अंधा इन हजरत को सदा ही एक-न-एक गढ़े में गिराता रहा। मगर मैं समझ रहा था कि इतनी छानबीन और इतने तजरबों के बाद अब इन्हें नाहीद जैसी बीवी मिल गई है तो शायद अब इनकी नीयत में वह फतूर पैदा न हो जो इससे पहले पैदा होता रहा है। मगर तोबा कीजिए, यह हजरत तो इस सम्बन्ध में अपनी पुरानी रीति पर डटे रहे और अन्त में यह बात मुझे माननी पड़ी कि इस व्यक्ति ने अपनी पहली बीवियों और आनरेरी बीवियों पर जितने अपराध लगाए हैं वह सब झूठ है। दोष हर बार केवल उसीका था। जिस प्रकार अब नाहीद भाभी के साथ यह विश्वासघात करने पर तुले हुए थे और उस बेचारी के फरिश्तों को भी खबर नहीं थी कि उनके इस चरित्र-हीन पति के करतूत क्या हैं। सच पूछिए तो रियाज से बात करने को मेरा जी नहीं चाहता था। परन्तु यह समय बिगाड़ के लिए उचित न था। मैंने इस समय यही उचित समझा कि आखिरी बार रियाज को समझाने का प्रयत्न करूँ और यदि वह स्वीकार न करें तो उन्हें खुला हुआ एलटिमेटम दे दूँ कि

शीरीं को तो वह हासिल कर ही न सकेंगे, नाहीद भाभी को भी कमजोर और बेसहारा समझने का वहम अपने मन से निकाल दें। इसलिए कि मैं गले-गले पानी में भी उनका साथ दूँगा और जो अत्याचार तुम उनके साथ करना चाहते हो वह इतना आसान नहीं हैं जितना तुम समझ रहे हो। यह सब कुछ निश्चित करने के बाद मैं रियाज को अपने कमरे में टहला लाया और मैंने देखा कि खुद उन पर हाक्सबे वाली घटना का कोई विशेष प्रभाव न था। वह बड़ी बेपरवाही के साथ हँसी-मजाक और अपनी गपबाजियों में मशगूल थे। मैंने एकान्त में आकर बड़ी गम्भीरता से उनसे कहा—"रियाज मैं तुम से कुछ अत्यन्त आवश्यक बातें करना चाहता हूँ।"

रियाज मेरी बात काट कर बोले—"इससे पहले कि तुम मुझ से बातें करो, पहले मुझे गम्भीरता से यह कह लेने दो कि तुम सचमुच मेरे ऐसे ही दोस्त साबित हुए जिनके बारे में कहा गया है कि दोस्त वह है जो मुसीबत में काम आए। मेरे पास शब्द नहीं है कि तुम्हें धन्यवाद दे सकूँ।"

मैंने आश्चर्यचकित होकर कहा—"अच्छा होता कि मुझे अपने उस महत्वपूर्ण सत्कर्म की खबर होती जो मैंने अनजाने आपके साथ किया है।"

रियाज बोले—"खैर अब मुझे बनाने की कोशिश न करो। मैं जानता हूँ कि तुम्हें न शीरीं से कोई दिलचस्पी है और न मुराद से काई बैर। तुम ने शीरीं को खेल ही खेल में मुराद से छुटकारा दिला कर मेरे लिए रास्ता साफ किया है। इसलिए कि तुम्हारी विवेकशील निगाहों से वह भावनाएँ न छुप सकी जो शीरीं के लिए मेरे मन में हैं।"

मेरा जी तो चाहा कि एक ऐसा हाथ इस बेशर्म के मुँह पर मारूँ कि दिन में तारे नजर आ जाएँ, पर मैंने अत्यन्त गम्भीरता से काम लेकर सब कुछ सुना और बड़े नम्र स्वर में कहा—"रियाज सचमुच तुम्हारा दिमाग इस हद तक खराब हो चुका है और क्या सचमुच संजीदगी के साथ तुम यह सब बातें कर रहे हो?"

रियाज ने एक गहरी साँस लेकर कहा—"मेरी परीक्षा लेने का प्रयत्न न करो शहाब। मैं जानता हूँ कि तुम मेरी हालत और मेरी भावनाओं का अच्छी तरह अनुभव कर चुके हो और अब सिर्फ मुझे परखने की कोशिश कर रहे हो। जिन बातों को तुम व्यर्थ और बेहूदा समझ रहे हो वह अब मेरे जीवन का सहारा बन चुकी हैं और यदि तुमने सचमुच अब तक इधर ध्यान नहीं दिया है तो अब मुझसे सुन लो कि मैं शीरीं के बिना जिंदा नहीं रह सकता।"

मैंने कहा—"मुझे तुम्हारी मौत का बहुत दुख होगा, इसलिए कि जो कुछ तुम चाहते हो वह बिलकुल नामुमकिन है और जब यह बात नामुमकिन है तो इरादे के अनुसार मौत का प्रबन्ध करलो। काश ! तुम जानते होते कि शीरीं तुम से कितनी घृणा करती है।"

रियाज ने जैसे मेरी मूर्खता पर मुस्करा कर कहा—"घृणा ! यही दावा है आपको। मनोविज्ञान में तो किसी को अपने से बड़ा समझते नहीं और हालत यह है कि यह भी नहीं जानते कि लड़कियाँ पहेली होती हैं पहेली। जो कुछ जाहिर करती हैं वास्तविकता उसके उलट होती है। वह देखने वाले को ऐसा स्वप्न दिखाती हैं जिसका फल सदा ही उलटा होता है। शायद आपने उसकी उस बेपरवाही से यह अनुमान किया हो जो अचानक हाक्स—बे जाने के बाद उसमें उत्पन्न हो गई है।"

मैंने अत्यन्त कड़वाहट से कहा—"जी नहीं, मैंने कोई अनुमान नहीं किया है इस बारे में। बल्कि हाक्स—बे पर जो बदतमीजी आपने की है उसकी पूरी रिपोर्ट शीरीं मुझे दे चुकी है और अगर सच पूछिये तो कोई और नहीं यह एहसान अवश्य मैंने आप पर किया है कि शीरीं को बड़ी मुश्किल से इस बात से रोका है कि वह नाहीद भाभी से यह बातें न कहे। वैसे तो यह बात भी आप पर एहसान नहीं है बल्कि मैं नहीं चाहता था कि यह बात उस बेचारी तक पहुँच कर उसके फूलों भरे जीवन में काँटे बिछा दे और उसके कोमल हृदय को एक ऐसी ठेस लगे जिसे वह सहन न कर सके।

रियाज ने बड़े बाजारी ढंग में अपनी भवें भड़काते हुए कहा—"बला की चतुर है यह लड़की भी यार ! मैं शीरीं की होशियारी का तो कायल था परन्तु यह न जानता था कि इतनी बड़ी राजनैतिक चेतना भी उसके पास है। बात यह है कि अगर उसे किसी ओर से भय हो सकता था तो वह तुम थे, इसलिए कि तुमने ताड़ने वाली कयामत की नजर पाई है। उसने तुमसे इस रंग में बात की और तुम से अपने आपको सुरक्षित करा लिया।"

मैंने व्यंग्य किया—"नहीं तो वह सचमुच आप पर मर मिटी है, आपसे प्रेम का सम्बन्ध जोड़ चुकी है ? भला आप क्यों इस धोखे में ग्रस्त है रियाज भाई ?"

"धोखे की इसमें क्या बात है। मैं यह कब कहता हूँ कि उसने मुझ से प्रेम का नाता जोड़ा है। शुरू-शुरू में तो यही तेवर होते हैं सब के······

इकरार नहीं लेकिन इकरार की सूरत है,
इनकार की सूरत से इनकार नहीं होता।"

मैंने कहा—"तो क्या तुम इसे इनकार समझते हो कि वह तुम्हारी इस हरकत पर लिफ्टी रसीद कर देती और अब जब उसने लिफ्टी नहीं रसीद की तो तुम इस बात को लिफ्ट देना समझ रहे हो ?"

रियाज ने बात सुनी-अनसुनी करते हुए कहा—"काश तुम ने वह निगाहें देखी होतीं जो मेरी भावनाओं को भाँपकर उसने मुझ पर डाली थीं। उन निगाहों का स्पष्टीकरण बस यह हो सकता है—

इक आलमे-हैरत है, शक है न यकीं है।"

"उसने जंगली हिरनी की भाँति मुझे देखा। उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह लाल हो गया और कुछ कहने के प्रयत्न में असफल होकर वह बिजली की तरह कूदती हुई मेरे पास से चली गई।"

मैंने कहा—"और आपके पास से आते ही उसने मुझ से कहा कि मैं

आप से कुछ कहना चाहती हूँ और जब मैं उसके साथ एकान्त में चला गया तो उसने क्रोध से काँपते हुए स्वर में मुझसे कहा कि शहाब भाई ! क्या सचमुच रियाज भाई का दिमाग कुछ चल गया है। मैं उनकी निगाहों में शंका का अनुमान तो एक समय से कर रही थी परन्तु आज तो उन्होंने बाकायदा प्रेम संदेश भेंट कर दिया।"

रियाज बोले—"बड़ी चालाकी से काम लेगई यह देखने में भोली-भाली लड़की। वैसे तो आवाज की यह लड़खड़ाहट भावुकता का परिणाम भी हो सकती है। मुझे भाई भी वह लोक-लाज के मारे कहती है। दिमाग चलने वाली बात उसने सिर्फ इसलिए कही होगी कि कहीं आप खुद भी उसका दिमाग चला हुआ महसूस न करें। खैर कुछ दिन बाद ही आपको इसका अवसर मिलेगा कि आप उसे झुककर सलाम करें और बहैसियत अपनी भाभी के यही बातें याद दिला-दिलाकर उसे छेड़ें।"

मैंने कड़वाहट से कहा—"आप विश्वास कीजिए कि वह कुछ दिन कभी न आएँगे। शीरीं अपनी प्यारी सहेली के साथ विश्वासघात कभी न करेगी और यदि आपने अपनी सीमाओं से आगे बढ़ने का विचार किया तो यह भी सुन लीजिए कि आप मुझे नाहीद भाभी का गले-गले पानी में भी सहायक पाएँगे।"

रियाज हँसकर बोले—"जी हाँ, सच कहते हैं आप ! जिस भाई के कारण वह आपकी भाभी है उसे तो आप गोया छोड़ देंगे और साथ देंगे उसका जो आपकी कुछ भी न होतीं अगर मेरी बीवी न होतीं।"

मैं न जाने इस बात का क्या जवाब देता। परन्तु शगुफ्ता और नाहीद भाभी ने आकर इस बहस को बीच ही में समाप्त करा दिया। नाहीद भाभी बेचारी को क्या मालूम की यहाँ खुद उन्हीं का भविष्य हमारी बातचीय का शीर्षक था। वह आदत के अनुसार चमक कर बोलीं—"अल्लाह जाने यह किस प्रकार की राजदारी होती है कि जब देखो सिर जोड़े बैठे हैं। न जाने

कौन सी खिचड़ी पक रही है। मैं तो आज न चाय पर बुलाती न खाने पर, परन्तु शगुफ्ता के मारे नाक में दम है। जब से आई हैं भेजा खा गई कि शहाब साहब से कहो कि अब मेरे हाल पर दया करें।"

मैंने हैरत से पूछा—"भई मैंने कौन-सा ऐसा अन्याय किया है आप पर जो आप यों रहम की अपील प्रस्तुत करती फिर रही हैं।"

शगुफ्ता ने लगभग रो देने के स्वर में कहा—"वह अभागा तो मेरी जान का गाहक बन गया है और देख लीजिएगा कि वह किसी न किसी दिन मेरे अब्बाजान के हाथ से खुद भी मारा जाएगा और मुझे भी बन्दूक का निशाना बन वाएगा।"

रियाज ने पूछा—"क्यों खैरियत तो है! क्या कोई खास बात हो गई।"

शगुफ्ता बोली—"खास बात ही नहीं, उस नामुराद ने तो कयामत ही कर दी कि मेरे घर जा पहुँचा "

मैं भी यह सुनकर उलझ पड़ा—"क्या सचमुच वह पहुँच गया था आपके घर।"

शगुफ्ता बोली—"ऐसे बेवकूफों से और आशा ही क्या की जा सकती है। मेरे घर जा पहुँचे और अन्दर कहलवा दिया कि नाहीद ने मुझे भेजा है कि आपको अपने साथ ही ले आऊँ।"

नाहीद भाभी ने कहा—"यह नामुराद अब इनका मेरे घर भी आना-जाना छुटवाएगा।"

शगुफ्ता बोली—"वह तो कहिए कि खैरियत यह हुई कि अब्बाजान घर पर मौजूद न थे. वर्ना पूछताछ करते-करते इन चुगदों के चौधरी साहब की स्क्रीनिंग कर देते।"

रियाज ने कहा—"यह तो वाकई इसने अजीब हरकत की।"

मैंने कहा—"आने दीजिये, आज मैं उसे मुर्गा बनाऊँगा और आगे के लिए भी तौबा करवा के छोड़ूंगा।"

शगुफ्ता ने कहा—"इस झगड़े को अब खत्म ही कर दीजिये। वह तो अब न जाने कैसी-कैसी बातें करने लगा है। प्रेयमात्मक ढंग की कविताएँ सुनाता है, आहें भरता है मेरे सामने। मैं कहती हूँ कहीं किसी दिन मार न बैठूँ उसे······।"

मैंने शगुफ्ता को समझा-बुझा कर संतुष्ट किया और स्वयं मुराद की प्रतीक्षा करने लगा कि वह आए और मैं उसकी खबर लूँ।

आज मुझे तैयार होने में और दिनों की निस्बत कुछ ज्यादा ही देर हो गई इसलिए कि मुराद साहब ने आज इस तफसील से नहाना शुरू किया जैसे मुझे नहीं बल्कि उन्हीं को ठीक समय पर आफिस पहुँचना था। पहले तो ड्रेसिंग टेबिल पर मुखालिफाना कब्जा जमाए बैठे रहे और ऐसी उलटी, आड़ी-तिरछी हजामत बनाई जैसे एक ही हजामत से एक हफ्ते के लिए छुटकारा पाने की कोशिश कर रहे हों, बार-बार मुँह पर साबुन लगाते थे और बार-बार उस्तरा चलाते थे। खुदा-खुदा कर के जब हजामत बना चुके तो गुलसखाने को अपना हेडक्वार्टर बना कर रह पड़े, जैसे बाहर निकलना ही न हो। आखिर जब मैं निर्णय करने ही वाला था कि आज बिना स्नान किये ही दफ्तर चला जाऊँगा तो वह सीटी बजाते हुए गुसलखाने से बाहर आए। बड़ी कठिनाई से मैं उस समय दफ्तर जाने के लिए तैयार हो सका जब नियम के अनुसार मुझे सिर पर पैर रख कर भाग जाना चाहिए था, परन्तु उसी समय नाहीद भाभी ने आकर रास्ता रोक लिया।

"शुक्र है कि अभी आप दफ्तर नहीं गए। अब आपकी बजाए आपकी दरख्वास्त जाएगी या आप टेलीफोन कर दीजिये।"

मैंने कहा—"मगर भाभी आज तो मुझे बेहद जरूरी काम है। खैरियत तो है, आखिर बात क्या है?"

नाहीद भाभी ने गम्भीरता से कहा—"आपके हर काम से ज्यादा जरूरी

काम है। रह गई खैरियत वह इसी में नजर आती है कि आप छुट्टी ले लें। पहले जाकर टेलीफोन कीजिए कि रात से बड़ा तेज बुखार है, आज दफ्तर न आ सकूँगा और फिर मुझ से बात कीजिए।"

मैंने कहा—"क्या सचमुच ऐसी जरूरी बात है कि मुझे छुट्टी ही लेना पड़ेगी।"

"मेरा क्या है न लीजिए छुट्टी"—नाहीद भाभी बोलीं—"मगर आपको इस समय किसी ने कलिफ्टन बुलाया है।"

मैंने हैरत से पूछा—"किसने ? कौन बुला सकता है मुझे वहाँ—क्या सचमुच आप को नहीं मालूम कि मुझे किसने बुलाया है।"

नाहीद भाभी ने उदासीनता से कहा—"मालूम क्यों नहीं। मगर बताया तो उसे जाए जिसे खुद मालूम न हो। बनने की दूसरी बात है, वैसे तो आपको अच्छी तरह मालूम है कि इस आदेश के साथ आपको कौन बुला सकता है। खैर पहले आप तो टेलिफोन तो कर आइये।"

मैं इस पहेली को सुलझाता हुआ कि मुझे कौन बुला सकता है टेलिफोन तक गया। दफ्तर को सूचना दी कि मैं नहीं आ रहा हूँ और इसके बाद इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयत्न करता हुआ अपने कमरे में आया तो नाहीद भाभी ने पूछा—'कर दिया आपने टेलिफोन ?"

मैंने कहा—"जी हाँ, वह तो कर दिया। मगर खुदा के लिए यह पहेली तो हल कीजिए कि किसने मुझे कलिफ्टन पर बुलाया है। मुराद तो अभी-अभी गया है।"

नाहीद भाभी ने आंखें दिखाते हुए कहा—"आखिर आप इतना मूर्ख क्यों समझ रहे हैं मुझे शहाब भाई ! मेरी बेवकूफी इतनी ही कुछ कम नहीं कि मेरे फरिश्तों को भी यह खबर न हो सकी कि आप शीरीं के इतने करीब आ चुके हैं।"

शीरीं का नाम सुनते ही मैंने एक कहकहा लगाया और अब मेरी समझ में सारी बात आ गई कि शीरीं ने मुझे इस प्रकार अचानक क्यों बुलाया है। मालूम होता है रियाज भाई ने और कोई गुल खिलाया है। मगर चूँकि नाहीद भाभी से इस बात का जिक्र न करना निश्चित कर लिया था, इसलिए उसने यहाँ से अलग एकान्त में मुझे बुलाया है। मगर इस बात से नाहीद भाभी जिस नतीजे पर पहुँची है वह भी खूब लतीफा है। आखिर मैंने अपनी हँसी से नाहीद भाभी को ज्यादा परेशान नहीं किया और उनसे कहा—"भाभी मैं आपके इस अनुमान पर धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुराद की तरह मुझे भी दिल-उछाल किस्म का आदमी समझ लिया है। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे अपने बारे में कोई गलत अनुमान नहीं है। न मेरा आयना मुझसे झूठ बोलता है, न मैं अपनी हैसियत से इतना बेखबर हूँ जितने यह दिल-उछाल टाइप के लोग होते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि मैं नीलाम की वह चीज भी नहीं हूँ जिसके लिए दिल ढोल पीट रहा हो।"

नाहीद भाभी ने कहा—"यह क्या बात हुई, सब ही को मालूम है कि आप अविवाहित हैं। आप झूठ कह रहे हैं कि आप नीलाम की चीज नहीं हैं।"

मैंने कहा—"मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं अविवाहित हूँ, मगर यह भी बतए देता हूँ कि मेरा सौदा हो चुका है।"

नाहीद भाभी ने चौंक कर कहा—"अरे यह तो आपने बताया ही नहीं कभी कि आप दिल का सौदा किये बैठे हैं।"

मैंने कहा—"जी माफ कीजियेगा, इस सौदे में दिल का कोई सम्बन्ध नहीं है और न ही यह कोई ऐसी बात थी कि मैं आपको बताता ही। भाभी मैं एक ठेठ देहाती आदमी हूँ, एक गरीब परिवार का व्यक्ति, ऐसे परिवारों में काम देवता अपने तीर लेकर जरा कम ही आता है। फिर यह कि मैं आयने में अपना मुँह देख लिया करता हूँ ताकि कोई यह न कहने पाए कि---

इस आरजू को देखिये और इनको देखिये।

भई इस प्रकार की भावनाएँ न कभी मैंने अपने निकट आने दीं न कभी अपने को गुलफाम समझने की कोशिश की। अब्बाजान के देहान्त के बाद अपनी विधवा माँ की इस इच्छा को कि वह अपनी दूसरी विधवा बहन की बेटी को अपनी बहू बनाना चाहती थीं, मैंने स्वीकार कर लिया और उनकी खुशी को अपनी खुशी बना लिया और जब उन्होंने मंगनी की रस्म अदा करनी चाही तो अपनी माँ को होंठों पर मुस्कराहट की लहर देखने के लिए मैंने बड़े उल्लास से इस सुझाव का स्वागत किया।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तो क्या आपको अपनी मंगेतर लड़की में कोई दिलचस्पी नहीं है ?"

मैंने कहा—"दिलचस्पी को न तो उस गरीब में कोई बात है और न मैं इस प्रकार की दिलचस्पियों का कायल हूँ जिन्हें फैशनेबिल लोगों में रोमान कहा जाता है। मैंने इन दिलचस्पियों के बड़े भयंकर नतीजे भी देखे हैं। जूतियों में दाल बट रही है। जहाँ पहले मुहब्बत के देवता के तीर दोनों ओर से चलते हुए दिखाई देते हैं वहीं तलाकों और झगड़ों की भरमार ज्यादा है।"

नाहीद भाभी ने मुँह बना कर कहा—"यह कैसी नानियों, दादियों की सी बातें कर रहे हैं आप। मुझे तो दूर-दूर भी इसका अन्दाजा नहीं था कि आप अन्दर से इतने दकियानूस हैं।"

मैंने कहा—"आप सच कहती हैं, मैं वाकई इस मामले में बहुत पीछे हूँ। मगर भाभी मैं आपसे सच कहता हूँ कि मैं इस मामले में ज्यादा-से ज्यादा पीछे रहकर भी अपने को किसी घाटे में नहीं समझता। मुझे इस युग के हालात ही ने पीछे की ओर धकेला है। आप जानती हैं कि प्रेम के आधार पर की गई शादियों को जिन्हें आप "लव-मैरिज" कहती हैं वह भयंकर नतीजे क्यों भुगतने पड़ते हैं जो इस प्रकार की अस्सी प्रतिशत शादियों का परिणाम बने हुए हैं।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मैं तो इसे किस्मत की बात समझती हूँ।"

मैंने कहा—"यह तो आप इसलिए समझती हैं कि आपने इस बारे में सोचा ही नहीं। वरना साफ सी बात है कि यह इश्क बघारने वाले जब एक दूसरे से सम्बन्धित हो जाते हैं और आशिक-माशूक की बजाए पति-पत्नी की हैसियत से जीवन में कदम रखते हैं तो उन्हें पहले की भाँति चोंचले बघारने का अवसर नहीं मिलता और सिद्ध होता है कि—

और भी गम हैं जमाने में मुहब्बत के सिवा।

नतीजा यह कि रोमान और प्रेम की वह भावनाएँ कठिनाइयों से भरे जीवन की चक्की में पिसकर चूर-चूर हो जाती हैं और अब यह शंका दिलों में घर करना शुरू कर देती है कि वह मुहब्बत चार दिन की चांदनी थी, वह जोश सब सोडावाटर का जोश था। पहले तो यह शिकायत दबी-दबी सी रहती है, फिर यह चिंगारी भड़कना शुरू होती है और आखिर जिन्दगी के बागीचों को जलाकर राख कर देती है। अमृत जल की खोज करने वालों को विष के घूँठ पी-पी कर जीना पड़ता है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तोबा है आपसे भी—आपने तो बाकायदा लेक्चर देना शुरू कर दिया। मैं तो यह पूछना चाहती हूँ कि आपने अपनी मंगेतर को देखा भी है।"

मैंने कहा—"क्यों नहीं वह मेरी मौसी की लड़की है ना······।"

नाहीद भाभी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा—"उनका कुछ परिचय तो करा ही दीजिए। कैसी सूरत-शक्ल है, क्या लिखी पढ़ी है, हम लोगों में किस हद तक घुल-मिल सकती है।"

मैंने कहा—"अच्छा तो जैसे आप मिलने से पहले ही उनसे निराश होना चाहती है। साहब वह शक्ल-मूरत की तो मामूली सी ही हैं, रंग साँवला है, चेहरे पर वह सब कुछ मौजूद है जो होना चाहिए—यानी दोनों आँखें, एक नाक, दो होंठ वगैरह···"

नाहीद भाभी ने उलझकर कहा—"भई, मैं यह नहीं पूछ रही हूँ। मैं यह पूछ रही हूँ कि आप के लिए उनमें किस हद तक आकर्षण है।"

मैंने कहा—"बात यह है मैंने जब तक उन्हें देखा है आकर्षण का कोई सवाल ही नहीं था, इसलिए कि वह मेरी मौसी की थीं बेटी और इसी सम्बन्ध से मैं उनका भाई था। जब इस बारे में सोचने का समय आया तो वह मेरी मंगेतर बन गईं और मैं उन्हें देख ही न सका इसलिए कि वह मुझ से पर्दा करने लगी थीं।"

नाहीद भाभी ने लगभग चीखते हुए कहा—"पर्दा? क्या वह पर्दा करती हैं?"

मैंने पूरे सन्तोष से उत्तर दिया—"जी हाँ, और क्या? हमारे यहाँ सब पर्दा करते हैं। एक सियाह बुरका मेरी मंगेतर के पास भी है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"और तालीम? इतना पर्दा करती है तो तालीम भी यों ही सी होगी।"

मैंने कहा—"खैर, तालीम का सम्बन्ध पर्दे या बेपर्दगी से नहीं है। यूनिवर्सिटियों की बड़ी-बड़ी परीक्षाओं में बुरका पहनने वाली लड़कियाँ भी भाग लेती हैं। मगर रजिया ने हाई-स्कूल तक ही तालीम हासिल की है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"अच्छा तो रजिया नाम है उनका। आप के पास कोई तस्वीर भी है उनकी?"

मैंने कहा—"तस्वीर तो तब होती जब उन्होंने कभी खिचवाई होती। भाभी, मैंने आप से कह दिया ना कि वह एक गरीब घराने की लड़की है। गरीबों को अपनी इज्जत का बड़ा ध्यान रहता है। इसलिए कि गरीबी के ऐब को छुपाने के लिए उनके पास पैसा भी तो नहीं होता। अतः वह बहुत फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं।"

नाहीद भाभी ने कहा—"कभी कभार आप को खत लिखती होंगी

मैंने कहा—"वह किस सम्बन्ध में ? यदि मैं सगा भाई होता तो वह लिख सकती थीं या फिर शादी हो जाए तो लिख सकेंगी। मगर इस समय तो रिश्ता ही गड़बड़ में पड़ा हुआ है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"सचमुच विश्वास नहीं आ रहा कि आप के अन्दर···"

मैंने बात पूरी करते हुए कहा—"यही ना कि मेरे अन्दर इतनी पुरानी दकियानूसी रूह होगी। यही कहना चाहती थीं आप। मगर आप विश्वास कीजिए कि मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ और बजाए इसके कि मुहब्बत करने के बाद शादी करने और शादी करने के बाद तलाक देने के प्रोग्राम बनाता, अब शादी करने के बाद मुहब्बत करने का प्रोग्राम बना रहा हूँ।"

नाहीद भाभी ने अचानक घड़ी देखकर कहा—"यहाँ बात-चीत छिड़ गई और वह ग्यारह बजे कलिफ्टन पहुँचने वाली होगी। अच्छा यह बताइये, लेकिन सच-सच, झूठ न बोलिए कि यदि आपकी यह सब बातें सच्ची हैं तो शीरीं ने आपको इस प्रकार सबसे अलग कलिफ्टन क्यों बुलाया है ?"

मैंने कहा—"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इसका कोई सम्बन्ध हमारी आपस की दिलचस्पी या रोमान आदि से बिलकुल नहीं है। यह एक गहरा भेद है। आप छोड़िए इस बात को।"

"भेद ! और मुझ से भी।" नाहीद भाभी ने आश्चर्य से कहा—"जी हाँ", मैंने गम्भीरता से कहा—"आप से भी। लेकिन आप यदि इसे खुलवाने की जिद न करें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस भेद का आप से बड़ा गहरा सम्बन्ध है और अगर यह मैं कहूँ कि यह भेद ही वास्तव में आप का भेद है तो अनुचित न होगा। पर इस समय आप को बताना आपके नुक-सान का कारण बन सकता है। आप कोई चिन्ता न कीजिए और पूरी तरह

मुझ पर विश्वास करने के अतिरिक्त इस बात पर भी यकीन कीजिए कि शीरी आप की बहुत ही हमदर्द और अच्छी सहेली है।"

नाहीद भाभी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं और वह एक सन्नाटे में आकर बोली।"—"मैं इस भेद को मालूम करने की जिद तो न करूँगी, परन्तु यह तो एक स्वाभाविक बात है कि अपने सम्बन्ध में एक अधूरी बात सुनकर मैं एक अजीब सी वेदना में ग्रस्त हो गई हूँ। अच्छा होता कि आप ने यह बात सिरे से बताई ही न होती।"

मैंने कहा—"आपकी व्याकुलता असन्देह स्वाभाविक बात है, परन्तु आप विश्वास कीजिए कि हम दोनों का प्रयत्न यही है कि आप पर कोई आँच न आने पाए। बल्कि हम जल्दी ही आप को भी इस भेद में शरीक कर लेंगे और आप देखेंगी कि हम आपको असूचित रखकर एक ऐसे खतरे को कुचल देना चाहते हैं जो आपके लिए घातक भी हो सकता है।"

नाहीद भाभी ने उलझ कर कहा—"बहरहाल इस प्रकार पहेलियाँ बुझाने से हासिल ! जब आप पूरी बात ही नहीं बता सकते। मेरे ख्याल से अब आपको जाना चाहिए वह निश्चित जगह पर आपकी प्रतीक्षा कर रही होगी।"

इन बातों के पश्चात् मैं ठीक समय पर शीरीं के पास पहुंचने के लिए रवाना हो गया। मुझे यह बात रह-रह कर खटक रही थी कि मेरी ओर से नाहीद भाभी के साथ जुल्म हुआ। मुझे यह बात उनसे नहीं कहनी चाहिए थी। मगर जो कुछ हो चुका था अब मैं उसे वापस नहीं ला सकता था।

नाहीद भाभी को इस प्रकार व्याकुल करने का सचमुच मुझे बड़ा खेद था। मुझे अपनी इस भूल पर लज्जा आ रही थी कि जो बात मैंने उनसे कही थी वह मुझे नहीं कहनी चाहिए थी, परन्तु हुआ दरअसल यह कि उन्हें जो शंका मेरे और शीरीं के सम्बन्ध में पैदा हुई थी उसने मुझे इस दृष्टिकोण से अधिक परेशान कर दिया था कि कहीं ऐसा न हो कि यह बात नाहीद भाभी की ज़ुबान से कहीं निकल जाए। बात यह है कि वह अपनी सहेलियों पर जितना विश्वास रखती हैं उसे देखते हुए आश्चर्य न था कि शगुफ्ता या खुद शीरीं से वह यह बात कह देतीं और सारा मामला चौपट हो जाता। यहाँ तक तो खैर गनीमत था, मगर मुझे तो यह भी डर था कि किसी समय चोचला बघारते हुए अगर श्रीमतीजी ने यह बात अपने पतिदेव से कह दी तो कयामत ही तो आ जाएगी। इन सब बातों ने मुझे इतना उलझा दिया कि अपनी सफाई पेश करने की वजह से मैं वह सब कुछ कह गया जो नहीं कहना चाहिए था। मैं चाहता था कि शीरीं से परामर्श करने के बाद मैं जल्दी-जल्दी नाहीद भाभी को सारा किस्सा बता दूँ, परन्तु इसमें भी एक उलझन थी। वह असल किस्सा और भी दुखदायक था। सोचता था कि नाहीद भाभी इसे सहन कर पाएँगी या नहीं। शीरीं की ओर से तो खैर संतोष था ही पर किसी की बीवी के लिए यह मालूम होना क्या कम है कि

उसका पति उसके साथ विश्वासघात कर रहा है। स्पष्ट है कि इस जानकारी के बाद बेचारी नाहीद भाभी के फूलों भरे जीवन में काँटे-ही-काँटे बिछ जाएँगे। मैंने इस प्रकार की उलझनों में घर से कलिफटन तक का रास्ता तय किया, और जिस समय मैं निश्चित स्थान पर पहुँचा हूँ मुझे दूर ही से शीरीं की लाल रंग की गाड़ी दिखाई दी। करीब ही मैंने भी अपनी कार खड़ी कर दी और शीरीं को इधर-उधर देखने लगा। अभी मैं नजर दौड़ा ही रहा था कि शीरीं मुझे एक ओर से आती हुई दिखाई दी। मैं उसे देखते ही आगे बढ़ा। करीब आते ही उसने कहा—"नीचे जो गाड़ियाँ खड़ी है उनमें से एक गाड़ी पर मुझे आपकी गाड़ी का शुबहा हुआ था और मैं आप ही को देखने नीचे चली गई थी।"

मैंने कहा—"माफ कीजिएगा मुझे जरा देर हो गई पहुँचने में।"

शीरीं बोली—"मुझे तो पचास प्रतिशत यह भय था कि आफिस की किसी मजबूरी के कारण शायद आप आ ही न सकें।"

मैंने कहा—"मगर बात क्या है आखिर। आपने तो इस प्रकार मुझे नहीद भाभी के द्वारा यहाँ बुलाया है कि वह एक अजीब दिलचस्प किस्म की गलतफहमी में उलझ कर रह गई।"

और यह कहकर मैंने सारा किस्सा जो शीरीं को सुनाया तो वह बोलीं—"पागल है नाहीद तो! जिस औरत को अपने चरित्रहीन पति पर ऐसा अंधविश्वास हो उसकी समझ से इस प्रकार की शकाएँ उत्पन्न होना आश्चर्यजनक नहीं, परन्तु आपने यह बात उसे समय से पहले बता दी। वह मूर्ख लड़की इस उलझन में न जाने अपने को कितना दुख पहुँचाएगी।"

मैंने कहा—"सचमुच यह भूल मुझसे हो गई। अब आप यह बताएँ कि आखिर बात क्या थी।"

शीरीं ने पत्थर की एक बेंच पर बैठते हुए अपना पर्स खोला और कहा—"बात यह थी कि यह जो आपके रियाज साहब हैं, क्या वाकई उनकी आदत

आई है। देखिये यह खत उसने मुझे लिखा है।"

मैंने शीरी के हाथ से वह सुन्दर लिफाफा ले लिया जो उस बेवकूफ आदमी ने सुगन्ध में बसाकर उसे भेजा था। लिफाफा खोल कर खत निकाला और चुपके से मैंने पढ़ना शुरू किया—

"मेरे स्वप्नों की रानी शीरीं ! मैं अपने इस खत को गालिब के शेर से शुरू करता हूँ—

आज हम अपनी परेशानी-ए-खातिर उनसे।
कहने जाते तो हैं पर देखिए क्या कहते हैं।

"मैंने लाख चाहा कि तुम्हें यह पत्र न लिखूँ। जी चाहता था कि बिना मेरे कहे ही तुम वह सब कुछ खुद ही समझ लो जो मेरी आँखें न जाने तुम से कब से कह रही हैं। चाहता था कि यह पत्र मुझे न लिखना पड़े और तुम मेरी भावनाओं को मेरे चेहरे से भाँप लो, पर तुमने मुझे पढ़ने की कोशिश न की। तुम्हारी चतुरता का अपमान होगा, यदि मैं यह कहूँ कि तुम मेरे चेहरे और मेरी निगाहों की जुबान समझने में असफल रही हो। सब कुछ जानते हुए भी तुमने मेरी इच्छा का उत्तर न दिया। बल्कि हाक्सबे पर जब मैंने अत्यन्त हिचकिचाहट के बाद हिम्मत से काम लेकर तुम से अपनी बात कहनी चाही तो तुम बिजली की तरह कौंध कर दूर हट गईं। दाद देता हूँ तुम्हारी इस चतुरता की कि जिस व्यक्ति से तुम्हें यह भय हो सकता था कि वह इस चोरी को पकड़ न ले, उसी से तुमने ढके-छुपे शब्दों में यह बात जाकर सिर्फ इसलिए बता दी कि उसके मन में कम-से-कम तुम्हारे लिए कोई शंका उत्पन्न न हो। रह गया मैं, तो मेरे बारे में तुम्हें मालूम ही था कि वह मेरा बहुत गहरा और इकलौता दोस्त है और वह मुझे किसी तरह कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। शायद तुम यह भी जानती होगी कि वास्तव में शहाब ने तुम्हें मुराद से छुटकारा दिलाने का नाटक इसीलिए खेला था ताकि वह तुम्हें मेरे लिए आजाद कर सके।

"खैर यह तो रहीं इधर-उधर की बातें। सवाल यह है कि आखिर यह बेरुखी कब तक ? अगर इसका मतलब यह है कि तुम मेरे प्रेम की परीक्षा लेना चाहती हो तो विश्वास करो कि मैं जीवन भर इस आग में जलने को तैयार हूँ। अगर भावनाएँ इतनी व्याकुल न होतीं तो शायद मैं यह पत्र न लिखता। हो सकता है कि नाहीद तुम्हारी चिन्ता का कारण हो। ठीक है वह तुम्हारी गहरी सहेली है। अगर यह हिचकिचाहट तुम्हारे सामने हो तो दूसरी बात है, नहीं तो नाहीद का वजूद खुद मेरे लिए कोई रुकावट नहीं है। मैं नाहीद के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहता और न उसे किसी प्रकार दुख देना चाहता हूँ। वह अपने भविष्य के सम्बन्ध में खुद निर्णय करने को स्वतन्त्र होगी। चाहे वह एक अलग मकान में जीवन की सारी सुविधाओं के साथ रहना स्वीकार करे या इस सम्बन्ध को बिल्कुल सहन न करके अपने को आजाद करा लें। कुछ भी हो मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता। इस-लिए कि जीवन भर मैंने जिस जीवन साथी के स्वप्न देखे थे वह केवल तुम हो। नाहीद को तो अब हर स्थिति में मुझ से अलग होना ही है। चाहे मेरी असफलता की सूरत में मेरी मौत के कारण मुझ से अलग हो या सफलता की सूरत में कुछ दूरी पर रह कर अलहदा हो।

"शीरीं ! मेरे यह शब्द केवल शब्द ही नहीं हैं, बल्कि तुम इसे मेरी किस्मत का लिखा समझो। मेरी जिन्दगी अब तुम्हारे हवाले है ; चाहे इसे सँवारो या इसका खात्मा कर दो। क्या मैं आशा करूँ कि तुम इस पत्र के बाद मुझे इस काबिल समझोगी कि खत का जवाब दो। यह तो मुझे विश्वास है कि अगर मेरा प्रेम सच्चा है, अगर मेरी भावनाएँ पवित्र हैं, तो मैं तुम्हें एक-न-एक दिन जीत कर रहूँगा और यदि यह केवल स्वार्थ और हविस है तो मैं उसी दण्ड के योग्य हूँ जो तुम्हारी बेरुखी या इनकार के बाद सम्भव है। अब मैं अपने जीवन के उस अन्तिम दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब तुम्हारा जवाब मुझे मिलेगा।

तुम से तुम्हीं को माँगने वाला
रियाज

मैं इस बेहूदा खत को बड़ी मुश्किल से खत्म कर सका। इसलिए कि बार-बार आँखों के सामने अँधेरा छा जाता था और बार-बार जी चाहता था कि इस खत के टुकड़े कर दूँ। आखिर बड़ी कठिनाई से मैंने अपने क्रोध पर काबू पाते हुए शीरीं के जोश को हलका करने के लिए कहा—"एक बात तो है कि इस खत को लिखने के लिए न जाने कितना अभ्यास करना पड़ा होगा और अब समझ रहा होगा कि ऐसा विष में बुझा हुआ तीर मारा है कि शीरीं कलेजा थाम कर रह गई होगी।"

शीरीं ने जलकर कहा—"कलेजा तो नहीं, हाँ कई बार जूती थाम-थाम कर रह गई। भला बताइये तो सही कि मैं उस अभागी नाहीद के कारण उनका आदर करती हूँ, अपना भाई समझती हूँ और उनका यह हाल है और फिर आप पर यह कितना बड़ा दोष लगाया है कि आपने मुझे मुराद साहब से इसलिए छुटकारा दिलाया है ताकि यह अहमक मुझे हासिल कर सके। आपसे कभी उसने इस सम्बन्ध में बात नहीं की।"

मैंने कहा—"की क्यों नहीं! मैंने हर बार उन्हें यही समझाने की कोशिश की कि बेटा! जीने की बातें करो। इस प्रकार अपनी मौत को चेलिंज मत दो। नहीं तो इतने जूते पड़ेंगे कि जनाब का सिर बाटा का साइन बोर्ड बनकर रह जाएगा। मगर मालूम यह होता है कि उन हजरत की शामत ही आ गई है।"

शीरीं बोली—"सच पूछिए तो मुझे दुख होता है नाहीद बेचारी का ख्याल करके कि कितनी बड़ी भूल और कितने बड़े धोखे में जीवन बिता रही है. गरीब। उस बेचारी को इस बहरूपिये पर कितना विश्वास है और यह अन्दर-ही-अन्दर उसकी जड़ें काटने पर लगा है।"

मैंने कहा—"खैर इन हजरत से तो समझ ही लिया जाएगा। मगर सवाल यह है कि नाहीद भाभी को अब हम कब तक इस घटना से सूचित न करेंगे।"

शीरीं बोली—"यह तो ख़ैर निश्चित है कि नाहीद को उस सम्बन्ध में बेख़बर नहीं रखा जा सकता। परन्तु सोचने की बात यह है कि उससे किस प्रकार यह बात कही जाए कि उस पर इस घटना का कोई अनुचित प्रभाव न पड़े।"

मैंने कहा—"कुछ-न-कुछ तो प्रभावित वह होगी ही परन्तु मेरा ख्याल है कि नाहीद भाभी को दुख और खेद से बचाने के लिए केवल एक ही रास्ता है और वह यह कि उनके मन में यह भावना पैदा हो जाए कि बजाए हारने के रियाज को इस सम्बन्ध में पछाड़ कर रहेंगी।"

शीरीं बोली—"यह बात कहने में जितनी सरल है अमल में उतनी ही कठिन है। हाँ एक और सुझाव मैं दे सकती हूँ, परन्तु इसका सम्बन्ध मेरे एक बहुत ही गहरे भेद से है और कम-से-कम आप पर विश्वास करके मैं यह भेद केवल आप ही को बता सकती हूँ।"

मैंने कहा—"इस विश्वास पर आपका धन्यवाद! काश मैं इसे पूरा करने में सफल हो सकूँ।"

शीरीं ने अपनी साड़ी के आंचल से खेलते हुए निगाहें झपकाकर कहा—"आप अंजुम राजवी से परिचित हैं?"

मैंने सोचते हुए कहा—"अंजुम राजवी? एक तो वह है जो प्रसिद्ध कहानीकार है······।"

शीरीं ने बात काटकर कहा—"दूसरे वह हैं जो इस वक्त भी आपके थोड़े बहुत रिश्तेदार हैं और जल्दी ही ऐसे सम्बन्ध में जुड़ने वाले हैं कि सारी खुदाई एक तरफ होगी और वह एक तरफ।"

मैं यह सुनकर एक दम चौंक पड़ा—"यह तो रज़िया के भाई अंजुम का जिक्र कर रही हैं, मेरे खालाजाद भाई का और इस प्रकार कर रही हैं जैसे उन सब को जानती हों और हर एक बात से सूचित हों। मैंने बड़े लिये-दिये अंदाज से कहा—"वह अंजुम? वह जो मेरे भाई हैं?"

शीरीं मुस्कराते हुए बोली—"जी नहीं बल्कि आप भी उनके भाई हैं।"

मैंने बड़ी उत्सुकता से पूछा—"पर आप उन्हें जानती कैसे हैं ?"

शीरीं ने अब पूरी बात सुनाई कि अब से पहले हम लोग एक-दूसरे के पड़ोसी थे। पड़ोस में रहने के कारण हम में गहरे सम्बन्ध पैदा हो गए थे। रजिया से भी उसका मेल-जोल इतना ही गहरा है, जितना नाहीद भाभी से। उसने हिचकिचाहट के बावजूद एक बार हिम्मत करके कह ही दिया—"जब आप पर सारे भेद खुल ही चुके हैं तो यह बात भी मैं आपको बताए देती हूँ कि मेरे और अंजुम के बीच एक पवित्र प्रेम का बंधन उत्पन्न हो चुका है।"

मैंने खुश होकर कहा—"मैं आपके समुचित निर्णय की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। आपने हर प्रकार की जाहिरी चमक-दमक से प्रभावित हुए बिना खालिस सोने को पसन्द किया है।"

शीरीं बोली—"जी हाँ, इसलिए कि हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती।"

मैंने कहा—"यही मतलब था मेरा भी। अंजुम ने एक गरीब घराने में आँखें खोली और अपनी दरिद्रता पर लज्जा नहीं की बल्कि सदा मान किया और मेहनत के साथ तालीम की अन्तिम सीमाओं तक पहुँचा।"

शीरीं ने कहा—"सिर्फ अंजुम ही नहीं, उसका पूरा परिवार इस दृष्टि-कोण से आदरणीय है और आप वाकई भाग्यवान हैं कि आपको रजिया जैसी पत्नी मिल रही है। मेरे मन में आपकी इज्जत सिर्फ इसलिए अधिक रही कि आप उस माननीय परिवार से सम्बन्धित हैं।"

मैंने कहा—"इन सब बातों के जवाब में मुझे यही कहना चाहिए कि जनाब मैं किस काबिल हूँ।"

शीरीं ने कहा—"खैर छोड़िए यह बातें। मैं यह कह रही थी कि इस पहेली का हल सिर्फ यह है कि अंजुम साहब की ओर से अब ज्यादा देर न हो।"

मैंने सब कुछ समझते हुए कहा—"अब यह किस्सा आप मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं बात की तह को पहुँच गया हूँ।"

शीरीं की भी यही राय थी। मैं भी यही चाहता था कि मेरी असावधानी से नाहीद भाभी जिस व्याकुलता में ग्रस्त हो गई हैं उसकी अवधि कम से कम हो जाए और वह इस उलझन से जहाँ तक सम्भव हो जल्दी छुटकारा पा लें। अतएव हम दोनों कलिफटन से सीधे रियाज मंजिल पहुंचे और यह प्रार्थना करते हुए पहुंचे कि रियाज मौजूद न हों। मगर वहाँ जिन साहब से पहले मुठभेड़ हुई वह रियाज ही थे, जो या तो कहीं से आए थे या कहीं जाने वाले थे इसलिए कि कील काँटे से बिलकुल लैस बरामदे में खड़े हम दोनों को देख-देखकर मुस्करा रहे थे। दिल ही तो जल कर रह गया इस बेवकूफ आदमी को देख कर। उसकी यह तुच्छ मुस्कराहट इस समय और भी तुच्छ नजर आ रही थी मगर उचित इस समय यही था कि उन पर अपनी घृणा प्रकट न की जाए। मैंने बड़ी कठिनाई से अपने मुख पर प्रसन्नता उत्पन्न करके कहा—"आप इस वक्त अप हैं या डाउन ?"

वह चुगद यह बात क्या समझता, कहने लगा—"क्या मतलब अप और डाउन से ?"

मैंने कहा—"मतलब यह है कि कहीं से आए हैं या कहीं जा रहे हैं।"

कहने लगे—"बैंक के डायरेक्टरों की एक मीटिंग है उसमें जाना था परन्तु अब......।"

मैंने घबराकर कहा—"परन्तु क्या ? हाँ अब जाओ ना, हम लोग तो मौजूद हैं ही यहाँ।"

रियाज बोले—"अच्छा तो फिर लंच सब साथ ही खाएंगे। घन्टा भर से ज्यादा की मीटिंग थोड़ी होगी।"

शुक्र है कि वह प्रार्थना जिसे हम समझते थे कि असफल हो गई आखिर-कार पूरी हुई और वह हजरत कम से कम एक घंटे के लिए टल ही गए। अब हम दोनों बड़े संतोष से नाहीद भाभी के पास पहुँचे। वह रियाज का कमरा सजाने में मसरूफ थी—रियाज जो खुद उनका घर उजाड़ने की फिक्र में था। हम दोनों को देखकर एक बनावटी मुस्कान उनके होठों पर आई। बोलीं—"आइये तशरीफ लाइये।"

शीरीं ने कहा—"बड़ी कारीगर मालूम होती हो। ऐसी मुस्कराहट होठों पर पैदा की जैसे सचमुच ही मुस्करा रही हो।"

मैंने कहा—"है तो वाकई यह 'वनस्पति मुस्कराहट।"

और वह सचमुच खिसियानी सी होगई।

"खामखाह भी आप लोगों को तो एक न एक शिकार मिलना ही चाहिए, दिखाने के लिए अपनी निशाना बाजी का कमाल।"

और शीरीं दौड़ कर उनसे लिपट गई।

"पागल हैं आप बेगम साहबा—मैं तो पहले ही जानती थी कि शहाब भाई की एक छोटी सी भूल ने इतनी ही देर में न जाने कितना कुढ़ाया होगा आपको।"

नाहीद भाभी ने बनते हुए कहा—"फिर वही, कौन कुढ़ रहा है ? बिला वजह के चोचले बघारती चली जा रही हो।"

शीरीं ने तेवरी पर बल डाल कर कहा—"अच्छा जी, उल्टा चोर कोत-वाल को डाँटे। आप मुझ पर बरस रही हैं। क्यों जी तुमने मुझ पर और

शहाब बेचारे पर यह अपराध लगाया था कि मैंने उन्हें जो कलिफ्टन बुलाया था उसका मतलब कोई ऐसा-वैसा था—"

"तो और मैं क्या समझती—"नाहिद भाभी ने सीनाजोरी से कहा—"मैं तो ख्वाब में भी न सोच सकती थी कि मुझ से ही भेद-भाव बरते जाएंगे। और फिर यह कि वह भेद भी शहाब साहब के कहने के अनुसार मेरे ही सम्बन्ध में है।".

मैंने शीरीं से कहा—"इन बातों में समय खराब न कीजिए। रियाज मीटिंग से लौटने में जल्दी करेंगे। जो कुछ उन्हें बताना हैं बता कर छुट्टी कीजिए।"

शीरीं बोली—"बताना तो है। मगर ऐसा न हो कि यह अक्ल की पोट कहीं इसी पर खुलना न शुरू कर दे। देखो नाहीद बात यह है कि तुम्हारी बेवकूफियों से फायदा उठाकर तुम्हारे पति जी महोदय कुछ बेलगाम से हो गए हैं। अगर यह बातें हम लोगों से मालूम करने के बाद तुम ने और ज्यादा हिमाकत का सबूत दिया तो वह बिल्कुल ही रस्सियाँ तुड़ा लेंगे। खैर यह वक्त भावनाओं के तूफान में बह जाने का नहीं है, बल्कि उन हजरत को गोते खिलाने का है जिन्हें अपनी पैराकी पर बड़ा घमंड है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तो क्या रियाज के बारे में कुछ कहना चाहती हो? अगर उनके बारे में कुछ कहना है तो भूमिका बांधने की जरूरत नहीं है। मैं भी उन्हें थोड़ा-बहुत जानती हूँ।"

शीरीं बोली—"तुम उन्हें खाक नहीं जानतीं। तुम उन पर अंध-विश्वास रखती हो।"

नाहीद भाभी ने कहा—"जी नहीं, मैं अत्यन्त सोचा-समझा-और देखा भला विश्वास रखती हूँ उन पर। ज्यादा-से-ज्यादा तुम यही कहोगी कि आज-कल वह किसी और लड़की से पींग बढ़ा रहे हैं। भई ऐसे तमाशे मैं बहुत देख चुकी हूँ और हमेशा मैंने उपेक्षा से काम लिया है। इसलिए कि अगर मैंने

उनकी एक चोरी भी खोल दी तो सुधार होने की जगह वह और भी ढीठ बन कर रह जाएँगे और यह चोरी सीनाजोरी बन जाएगी। तुम नहीं जानते कि इस मामले में मेरा पति बहुत ही घटिया इंसान है और यह मेरा ही दिल है कि मैंने एक बार अपने यहाँ की आया के जूड़े में इन्हें फूल तक लगाते हुए देखा लेकिन निगाहें फेर कर होठों पर चुप लगा ली। मुझे प्यानो सिखाने एक मिस साहबा आया करती थीं, उन्हें शॉपिंग कराते हुए एक बार यह हजरत मुझे नजर आ गए और मैं देख कर कतरा गई। अपनी बीमारी के दिनों में एक नर्स रखली थी। वह मेरी देख-भाल क्याकरती, आप खुद उसकी देख-भाल में मसरूफ हो गए।"

शीरी ने कहा—"हाए ! तो इसका अर्थ यह है कि यह बेचारे बहुत पुराने रोगी हैं।"

मैंने कहा—"आज के नहीं सदा के ! कालेज में 'भाई' के नाम से इसलिए प्रसिद्ध थे कि इनके सम्बन्ध से हर रोज एक नई भाभी का परिचय प्राप्त होता था। बस इनसे यह पूछने की देर थी कि यह श्रीमती जी कौन हैं ? जवाब आम तौर पर यही मिलता—'आप की भाभी।' खुदा झूठ न बुलवाए तो हमारा यह भाई भाभियों की एक फौज का सेनापति तो बन ही चुका है। खुद इसे भी यह बात मुश्किल ही से याद होगी कि इसके 'रजिस्टर भाभियात' के अन्दर आखिरी नम्बर कौन-सा है।"

शीरीं ने क़हा—"तो भई नाहीद तुम या तो खुद अपने मर्दुए को संभालो या हमें इजाजत दो कि हम इसकी बीमारी का इलाज करके इसकी तबीयत ठिकाने लगा दें।"

नाहीद ने मुस्कराकर कहा—"आखिर किस्सा क्या है ? कोई नया मामला शुरू हो चुका है क्या ?"

शीरीं ने कहा—"मामला तो उसे कहते हैं जो दोतरफा हो।"

मैंने कहा—"साफ-साफ आप क्यों नहीं बताती हैं कि इस समय उनकी कृपा-दृष्टि का केन्द्र आप ही हैं। हाँ, हाँ, यही आपकी प्यारी सहेली शीरीं साहबा।"

नाहीद भाभी ने माथे पर हाथ मार कर कहा—"हाए मेरे अल्लाह! क्या सचमुच ?"

और जब शीरीं ने शुरू से आखिर तक की सारी कथा सुना दी, जिसमें हाक्सचे तक की घटना शामिल थी तो मैंने बीच में हस्तक्षेप किया और नाहीद भाभी को बताया कि खुद मैंने उस शख्स को किस-किस तरह इस बात से रोकने की कोशिश की और कैसा-कैसा समझाया जिसका परिणाम यह हुआ कि उसने इनको प्रेम-पत्र लिख मारा और यह कहकर मैंने रियाज का वह लचर खत नाहीद भाभी को दे दिया। पहले तो वह हैरत से पढ़ती रहीं और इसके बाद एकदम हँस पड़ीं।

"तुम से तुम ही को माँगने वाले ने परसों ही तो रात को मुझे सोते से जगाकर पूछा था कि वह याद है तुमको किसी मशहूर शायर का शेर जिसमें दिल की परेशानी कहने तो जा रहे हैं पर देखिए क्या कहते हैं, आया है, तो मैंने उन्हें बताया था कि यह मशहूर शेर गालिब का है और इस तरह है—

आज हम अपनी परेशानी-ए-खातिर उनसे,
कहने जाते तो हैं पर देखिए क्या कहते हैं।

यह सुनकर कहने लगे, हाँ, हाँ यही। अच्छा अब तुम सो जाओ। मैंने लाख पूछा कि आधी रात को इस शेर की क्या जरूरत पेश आ गई, क्या किसी चौकीदार से बैतबाजी करने जा रहे हो, मगर वह यही कहकर टाल गए कि एक लेख लिख रहा हूँ। लो भला मुझे क्या मालूम था कि इस शेरे से मेरे ही सीने पर मूंग दलेंगे। मगर कर दिया वाकई कमाल। डायन भी सात घर छोड़ देती है।"

मैंने कहा—"जी नहीं यह उन डायनों में से नहीं हैं। मुझे तो इन हजरत से कोई ताज्जुब न होगा अगर इसी खत की दूसरी कापी इन्होंने शगुफ्ता को भी भेज दी हो। यह तो प्रेम-पत्रों को सर्कुलर की हैसियत भी दे सकते हैं। खेद यह है *भाभी कि आप भी इस शख्स का सुधार न कर सकीं।*

शीरीं ने कहा—"अब मैं करूँगी सुधार आपके पतिदेव महोदय का। मगर हैरत है तुम हँस रही हो। कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। जैसे कोई बात ही नहीं हुई।"

नाहीद भाभी ने उसी तरह हंसते हुए कहा—"बहन मैं 'शगुफ्ता-प्रूफ' बनकर रह गई हूँ। पहले-पहल जितना जलना-कुढ़ना था जल-कुढ़ ली। आखिर कोई कहाँ तक इन अंगारों पर लोटे।"

शीरीं ने कहा—"अच्छा अब मैं अंगारों पर कलाबाजियाँ खिलाऊंगी तुम्हारे मियाँ को। शहाब भाई आप बड़े ड्रामा प्रोड्यूसर बने फिरते हैं। मगर इस *सम्बन्ध में मेरे नाटक का तमाशा भी जरा देखिएगा।"*

मैंने पूछा—"क्या मतलब ? आपने कोई ड्रामा भी तैयार किया है।"

शीरीं ने बड़े विश्वास से कहा—"जी हाँ मैं कलिफ्टन पर आपकी प्रतीक्षा में टहल-टहल कर इसी नाटक के ताने-बाने तैयार कर रही थी, जिसे आप दोनों की सहायता से मैं स्टेज करना चाहती हूँ।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तो क्या शहाब भाई के अतिरिक्त मेरी सहायता भी जरूरी होगी।"

शीरीं ने कहा—"सुनो तो सही, भई तुम तो उस ड्रामे की हीरोइन ही होगी। शहाब भाई सच बात तो यह है कि रियाज ने दिल के खेल तो बहुत खेले होंगे पर दिल पर चोट शायद *कभी नहीं खाई, न कभी उस बेचैनी में* ग्रस्त हुए होंगे जिसमें आए-दिन दूसरों को सताते रहते हैं। नाहीद को उस

शख्स ने जिस उलझन में गिरफ्तार कर रखा है उसका मजा थोड़ा बहुत उसे भी तो चखना चाहिए।"

मैंने कहा—"यही आप गलत समझ रही हैं। जनाब की सेहत का भेद तो यही है कि कड़वी-से-कड़वी बात का असर कभी दिल पर नहीं लेते। अजीब रोगनी मिट्टी के बने हुए हैं कि चिकने घड़े भी आप पर ईर्ष्या करते हैं।"

शीरीं बोली—"साहब मेरी पूरी बात तो सुन लीजिए। मेरे ड्रामे का प्लाट तो ऐसा है कि नाम बदल दीजिएगा मेरा अगर तिगनी का नाच न नचा दूँ। करना यह है कि मैं इस खत के जवाब में इन हजरत के पास जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि हजूर, आप ने मुझे गलत समझा है। आप चाहे मुझे कितना ही पसन्द करें यह आपकी दया-दृष्टि है परन्तु एक तो मैं आपको पसन्द ही नहीं करती, दूसरे अगर पसन्द भी करती तो आप मेरी प्यारी सहेली के पति हैं और मेरी मित्रता इतनी तुच्छ हरगिज नहीं है जितनी आपके दोस्तों की। जैसे शहाब साहब! जो इधर आपका भी विश्वास प्राप्त किये हुए हैं और उधर नाहीद से भी इश्क भगार रहे हैं।"

नाहीद भाभी एकदम चीख उठी—"अरे तुझे खुदा की मार! इतना झूठ? खुदा के लिए ऐसी बेवकूफी कभी न करना।"

शीरीं ने उन्हें चुपाते हुए कहा—"पागल हो तुम तो। खुदा न करे यह कोई सच्चाई छोड़ी है कि तुम इस प्रकार भड़क रही हो। मतलब तो सिर्फ यह है कि यह सुनकर उनकी क्या दशा होती है।"

मैंने कहा—"मैं समझ गया हूँ आपके प्लाट को और मुझे इस प्लाट में बड़ी गुंजाइश नजर आती है। मैं इस ड्रामे में अपना रोल अदा करने को भी तैयार हूँ, और नाहीद भाभी से भी ऐसी एक्टिंग कराऊँगा कि देखने के काबिल होगी। मगर इस नाटक को अब आप मेरे हवाले कर दीजिएगा

ताकि मैं इसमें समुचित संशोधन करके पूरी तैयारी के साथ स्टेज करने की कोशिश करूँ।"

शीरी ने कहा--"इस बात का अच्छी तरह ध्यान रहे कि वह हजरत शत्रुता की आग में बस सुलग ही उठे।"

मैंने प्रतिज्ञा की कि यह मकसद पूरा होकर रहेगा, परन्तु जब तक मैं न कहूँ इस ड्रामे को शुरू न कीजिए।

शीरीं और अंजुम का भेद मालूम हो जाने के बाद अब मुझे यह चिन्ता थी कि किसी प्रकार इस संजोग का शीघ्र से शीघ्र प्रबन्ध हो जाए। शीरीं पर तो खैर मुझे हैरत न थी, हाँ अंजुम ने अपने जीवन का यह भेद मुझ से छुपाने में वाकई कमाल किया था। इसलिए कि उसका कोई भेद ऐसा न था जिसका मुझे पता न हो। भेद से मेरा मतलब यह है कि यह हजरत जरा-जरा सी बात में सदा ही मुझ से परामर्श करते रहे। हमारे घर में तो यहाँ तक मशहूर था कि अंजुम की नकेल शहाब के हाथ में है। वह जिस ओर चाहे इसे मोड़ देता है। दुनिया जहान की बात अंजुम टाल जाए पर यह संभव नहीं कि शहाब की बात इधर से उधर हो जाए। एक तरफ तो यह शोहरत और दूसरी तरफ आज इन साहबजादे की चोरी मैंने पकड़ ली थी। और अब उन्हें इस बात की सजा देने के लिए बेचैन था कि जितनी जल्दी सम्भव हो उन्हें शीरीं के जीवन की सैर करा दूँ। सोचते-सोचते एक और रास्ता समझ में आया कि क्यों न मैं अंजुम को यहाँ बुलाकर इस नाटक का हीरो बना दूँ। इस बात पर जब गम्भीरता से गौर किया तो इसमें बड़ी सुविधाएँ दिखाई दीं। मैं इतना बेचैन था कि अंजुम को खत भी नहीं लिखा बल्कि उसी रात ट्रंकाल पर बात करके उसे यहाँ आने पर तैयार कर लिया। दूसरे दिन जब नाहीद भाभी और शीरीं ने फिर यह बात छेड़ी तो मैंने उन्हें संतुष्ट करने के लिए कहा—"जी हाँ, इस ड्रामे की तैयारियों में बड़ी तरह जुटा हुआ हूँ।

एक नामी-गिरामी मशहूर एक्टर मैंने बाहर से भी बुलवाया है। जो रंग-रंगीले कपड़े पहने, बढ़िया सीन-सीनरी के साथ ड्रामा प्रस्तुत करके देखने वालों को हैरत में डाल देगा।"

नाहीद भाभी ने हँसकर कहा—"लीजिए, आप तो सचमुच पब्लिसिटी कम्पनी के मालिक बनकर रह गए हैं।"

शीरीं ने गम्भीरता से कहा—"मैं समझी नहीं कि बाहर से आपने किसे बुलाया है। हमारे इस घरेलू मामले में कोई बाहर का आदमी कैसे भाग ले सकता है।"

मैंने बेपरवाही से कहा—"ले सकता है। मैंने इस प्रोग्राम के हर पाइण्ट पर अच्छी तरह सोच-विचार कर लिया है।"

शीरीं बोली—"मगर इस बात को जरा तफसील से बताइये।"

मैंने कहा—"मेरा क्या है मैं बताए देता हूँ मगर आप मुझ से शिकायत न कीजिएगा कि मैंने नाहीद भाभी के सामने यह बात कह दी जो शायद आप ने अब तक नहीं कही है।"

नाहीद भाभी ने चौंककर कहा—"अच्छा! यानी अब भी कोई ऐसी बात है। भई मैं तो अब तंग आ चुकी हूँ इन राजदारियों से।"

मैंने नाहीद भाभी को विश्वास दिलाया—"नहीं, नहीं वह ऐसी कोई विशेष बात नहीं है। उस बात का आप से या इस सोसाइटी से कोई सम्बन्ध नहीं। वह खुद इन्हीं का एक निजी भेद है।"

शीरीं बोली—"भेद नहीं बल्कि यह बात अब तक मैंने इसलिए नहीं कही थी कि खुदा जाने किस करवट ऊँट बैठे। जब तक निश्चित न हो ऐसी बात को उछालना भी तो व्यर्थ होता है। खैर अब जब आप उगल ही चुके हैं तो बता दीजिए। मगर ध्यान रहे कि इस प्रकार खुद आपका भी भेद खुल रहा है।"

मैंने कहा—"आप सन्तोष कीजिए। मेरे इस भेद से नाहीद भाभी अच्छी तरह परिचित हैं। मैं इन्हें सब कुछ बता चुका हूँ।"

यह कहकर मैंने नाहीद भाभी को पूरा किस्सा सुनाया कि रजिया के भाई अंजुम राजवी और शीरीं का एक दूसरे से क्या सम्बन्ध है। इस बात पर, स्पष्ट है कि नाहीद भाभी को जितना भी आश्चर्य हुआ हो कम है। इससे ज्यादा हैरत इस बात पर थी कि शीरीं को जब यह बात पहले ही से मालूम थी कि रजिया मुझसे सम्बन्धित हो चुकी है तो भी उसने भूल कर भी यह बात किसी से न बताई। मैंने इस पर नाहीद भाभी से कहा—"कमाल करती हैं आप भी। अगर यह बात बता देतीं तो खुद उनका भेद न खुल जाता। मुझे तो खुद यह किस्सा सुनकर बड़ी हैरत हुई थी। सबसे ज्यादा हैरत उन साहबजादे पर हुई जिनकी बात हो रही हैं। मैंने न जाने उनपर कौन-सा जादू कर रखा है कि वह मेरे ही हाथ की कठपुतली बनकर रह गए हैं पर उन्होंने यह भेद मुझ से छुपाए रखा। खैर अब उन्हें आ जाने दीजिए वह खबर लूँगा कि याद करेंगे जीवन भर।"

शीरीं बोली—"मगर मैं इस राय से सहमत नहीं हूँ कि वह इस ड्रामे के एक विशेष रोल को निभा भी सकेंगे।"

मैंने कहा—"श्रीमती जी ! आपको अंजुम के बारे में बहुत कुछ मालूम होने के बाद भी शायद यह नहीं मालूम कि उसमें अदाकारी के कैसे-कैसे गुण हैं। मैंने कुछ सोच-समझ कर ही यह निर्णय किया है और डायरेक्टर होने के नाते पूरे विश्वास के साथ यह तय किया गया है। आप उन्हें आ जाने दीजिए। रात को फोन पर मैं बातचीत कर चुका हूँ और कल परसों तक वह पहुँचने ही वाले हैं।"

हम लोगों की यह बातें हो ही रही थीं कि रियाज और उनके साथ हमारे ईद के चाँद मुराद साहब भी आ टपके। उन्हें देख कर नाहीद भाभी बोली—"लीजिए आज तो मुराद साहब भी नजर आ रहे हैं। यह तो सचमुच ईद

का चाँद बन कर रह गए, नजर ही नहीं आते ! क्या अब यह आपके साथ नहीं रहते ।"

मैंने उत्तर दिया—"रहते तो हैं पर मैं खुद कई-कई दिन तक इनके दर्शनों से महरूम रहता हूँ ।"

इसी बीच में वह हजरत हमारे पास आ पहुँचे थे । मैंने उन्हें आदाब पेश करते हुए अर्ज किया—"तशरीफ लाइए सरकार ! आखिर आप कहाँ गायब हैं । मेरा तो आपने वह हाल कर रखा है—

हजारों कुर्बतों पर यों मिरा महजूर हो जाना,
जहाँ से चाहना उनका वहीं से दूर हो जाना।

मुराद ने एक खास अदा से बैठते हुए बल खाकर कहा—"अब मैं आपसे क्या अर्ज करूँ कि किन परेशानियों में ग्रस्त हूँ ।"

मैंने कहा—"उस परेशानी के अतिरिक्त भी कोई परेशानी है जिसे मैं जानता हूँ ।"

मुराद ने कहा—"वह ! वह तो खैर है ही । मगर आजकल तो सब से बड़ी चिन्ता यह है कि किसी न किसी तरह रोजगार मिले ।"

मैंने कहा—"रोजगार ? यानी आप रोजगार चाहते हैं ? आपके दुश्मनों को किसी की गुलामी करने की क्या जरूरत आ पड़ी । अल्लाह रखे घर में बहुत कुछ है । कई पीढ़ियों तक बैठ कर बल्कि लेटकर खा सकते हैं आप ।—आप और नौकरी, मेरी समझ में तो आई नहीं यह बात ।"

रियाज ने कहा—"नहीं । खैर मुझे बता चुके हैं मुराद साहब कि नौकरी करना बहुत ही जरूरी हो गया है । मगर सवाल यह है कि इनकी शान शौकत के अनुसार रोजगार मिलेगा कहाँ और देगा कौन ।"

मैंने कहा—"वाकई यह सवाल बहुत कठिन है । हम न्याजमन्दों को तो खैर आपकी काबलियत में शक है ही नहीं, मगर मुश्किल यह है कि नौकरी

देने वाले ऐसे जाहिल होते हैं कि जब तक कोई डिगरी न हो आंख उठा कर नहीं देखते। आपके मुकाबले में अगर उन्हें कोई ऐसा गधा मिल जाए जिसके गले में किसी ने बी० ए० या एम० ए० की डिगरी बाध दी हो तो वह उसे अवश्य चुन लेंगे और आपकी बिना डिगरी की योग्यता को आँख उठा कर भी न देखेंगे।"

मुराद बोले—"जी हाँ बिल्कुल सच है। मगर दुनिया ऐसे पारखियों से भी खाली नहीं जो अच्छे-बुरे की जांच कर सकें। आज ही मैं जिस इन्टरवियू में बुलाया गया था, जसमें कई डबल एम० ए० भी थे। ग्रेजुएट तो अल्लाह जाने कितने होंगे। मगर मेरा नाम उम्मीदवारों की लिस्ट में देखते ही सबसे पहले मुझे बुलाया गया।"

रियाज ने कहा—'जी हाँ मुराद साहब बताते हैं कि बोर्ड में एक साहब ऐसे भी थे जो मुराद भाई को मुशायरे में सुन चुके थे और वह आपका नाम देखते ही कमरे से बाहर निकल आए।"

मुराद ने कहा—"खैर कमरे से बाहर तो वह नहीं आए। उनकी घंटी की आवाज आई थी जिसे सुनते ही चपरासी अंदर गया और उलटे पैरों वापस आकर उसने कहा कि मुराद साहब कौन हैं। जब मैंने कहा कि मैं हूँ तो बोला कि साहब लोग सलाम देते है।"

शीरीं बोली—"कमाल है भई। इतने बड़े अफसर ने आपको सलाम भिजवाया।"

मुराद ने गम्भीरता से कहा---"जी हाँ मुझे खुद इस बात पर हैरत हुई। खैर जब मैं अंदर गया तो वह तीनों अफसर बड़े नि.संकोच रूप से मुझ से मिले, बोले—तशरीफ रखिए। फिर उनमें से एक साहब ने कहा—मैंने आपको आल-पाकिस्तन-मुशायरे में देखा था। दूसरे साहब बोले—आपके पास शायद कोई तालीमी डिगरी तो है नहीं। जाहिर है कि आप जैसे काबिल

आदमी के लिए डिगरी विगरी की क्या जरूरत, मगर जिस सर्विस के लिए आप तशरीफ लाए हैं वह आपकी शान और मरतबे के लायक नहीं।"

मैंने कहा—"जाहिर है कि आप इस इनकार पर भी खुश हो गए होंगे।"

मुराद बोले—"नहीं खैर खुश तो मैं क्या होता। वह खुद ही बहुत शर्मिन्दा थे कि मैंने इस चार-पाँच सौ की नौकरी के लिए दरख्वास्त देकर उन्हें जैसे शर्मिन्दा किया हो। उन्होंने मुझ से कहा कि आपकी शान से गिरी हुई है यह बात। जब कभी आपकी योग्यता के अनुसार की जगह निकलेगी तो इसकी बजाए कि आप हमें दरख्वास्त दें हम खुद आपसे दरख्वास्त करेंगे।"

शीरीं बोली—"इस तरह की ऊँची मुलाजमतें तो पुरातत्व विभाग ही में निकल सकती हैं।"

मुराद ने कहा—"खैर छोड़िए इस बात को जहाँ कहीं भी निकलेगी, वह खुद मुझे बुलाएँगे परन्तु मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकता। मुझे तो तुरन्त ही नौकरी की आवश्यकता है।"

मैंने कहा—"आखिर ऐसी कौन सी मजबूरी आ पड़ी है, कुछ बताइए तो सही।"

मुराद ने कहा—"मैं बताऊँगा आपको।"

नाहीद भाभी बोलीं—"अच्छा तो हम सब से अलग एकान्त में सिर्फ इन्हें ही बताएँगे। खुदा के लिए शहाब साहब जाइये और इनसे एकान्त में बात कीजिए।"

मुराद ने हिचकिचाकर कहा—"नहीं भाई। ऐसी जल्दी भी क्या है?"

मैंने उठते हुए कहा—"आपको न सही हमें तो जल्दी है। तशरीफ लाइये।"

और मुराद को लेकर मैं अपने कमरे में आ गया। इतमीनान से बैठ कर जब उनसे पूछा तो वह कहने लगे—"शगुफ्ता के यहाँ तो मामला लगभग पूरा

हो चुका है। उनके रिश्तेदारों को इस शादी पर कोई एतराज नही है, हाँ झगड़ा सिर्फ यह है कि मैं बेरोजगार हूँ।"

मैंने कहा—"तो आपने बता दिया होता कि मुझे किसी रोजगार की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं एक धनवान बाप का बेटा हूँ।"

मुराद ने कहा—"यह तो उन्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं अपने माँ-बाप से अलग हो चुका हूँ। मैंने उन्हे यह भी बता दिया है कि यह झगड़ा इसी कारण पैदा हुआ है कि वह मेरी शादी मेरी इच्छा के विरुद्ध करना चाहते थे और मै शादी अगर कर सकता हूँ तो सिर्फ इसी घर में वर्ना कही नहीं।"

मैंने कहा—"तो जैसे आपने खुद ही यह सारे रास्ते तय कर लिये है और आप बाकायदा पैगाम भी दे चुके है।"

मुराद बोले—"वह तो सब कुछ हो चुका पर उनकी तरफ से हठ यह है कि पहले कमाओ फिर शादी रचाओ।"

मैंने कहा—"और मेरी राय यह है कि ऐसे बेसिरे हो चुके हो तो जहन्नुम में जाओ।"

यह कह कर मैं झूठमूठ उनसे रूठ कर वहाँ से चला आया।

मैं अंजुम राजवी को स्टेशन से लेकर जिस समय रियाज मंजिल पहुँचा हूँ, नाहिद भाभी ने उनके लिये मेरी ही ओर का एक कमरा साफ करा दिया था और उसे सजाने-बनाने और जरूरत का सब सामान वहाँ इकट्ठा करने में उन्होंने कुछ ज्यादा ही संकोच से काम लिया था। अपने कमरे की मसहरी यहाँ लगवा दी थी। दरवाजे के पर्दे भी वह न थे जो उस कमरे में दिखाई दिया करते थे। सोफे भी नए और कीमती थे। गुलाब के ताजा-ताजा फूलों के गुलदस्ते भी दरमियान की मेज पर नजर आ रहे थे। इन सब बातों के अतिरिक्त खुद नाहीद भाभी भी आज जरा ढंग के साथ सजी-बनी नजर आ रहीं थी। मैंने अंजुम से उन्हें मिलाते हुए कहा—"यह सब कुछ अगर आपने इन साहबजादे के लिये किया है तो अब इन्हें देखकर सचमुच आपको दुख हुआ होगा कि यह सब प्रबन्ध बेकार ही किया। यह बेचारे तो बड़े सीधे-साधे और बलिहार किस्म के आदमी हैं परन्तु एक बात जरूर है कि सूरत से यह जितने मूर्ख नजर आते हैं उतने हैं नहीं।"

नाहीद भाभी बोली—"अब तो आप परिचय की सीमा को फलांग कर आलोचना की हदों तक आ गए।"

मैंने कहा—"अच्छा तो आप भी इनकी वजह से बातें भी साहित्यिक ढंग की करने लगीं हैं।"

नाहीद भाभी ने अंजुम के लिए जो कमरा ठीक किया था उसमें दाखिल होते हुए कहा—"अच्छा खैर पहले इनको अपने कमरे में तो पहुँचाइये । जरा देखियेगा, सिर्फ एक काम मैंने आपके नामुराद साहब से लिया था और वह यह कि गुलदस्ते ले जाकर कमरे में रख दीजिये, वह अक्ल के दुशमन बीच की मेज पर इस तरह गुलदस्ते रख गए हैं जैसे यहाँ मीलाद शरीफ होने वाला है ।" और यह कह कर गुलदस्तों की तरफ दौड़ी और उन्हें कोने की मेजों पर ले जा कर रख दिया। अंजुम ने अपना सामान क़ायदे से रखवाकर कहा—"वाक़ई यह कमरा मुझे अपनी हैसियत से ज्यादा ही नजर आ रहा है ।"

मैंने कहा—"हर अवसर पर केवल अपनी ही हैसियत का ध्यान नही रखा जाता, मेजबान की हैसियत भी देखनी पड़ती है ।"

और फिर मैंने नाहीद भाभी से कहा—"मगर इस कमरे से आपने मुराद साहब को निकाल कर क्या किया ?"

नाहीद भाभी ने कहा—"मैंने उन्हें खानसामा का रूप देकर उस कमरे में पहुँचा दिया है जो आपके लिए खाने का कमरा था । वैसे तो यहाँ खाने के कमरे की कोई जरूरत ही नहीं ।"

मैंने कहा—"जरूरत तो खैर मुराद को भी नहीं मगर यह आपने अच्छा किया कि नेमतखाने को अजायब खाने की हैसियत दे दी ।"

नाहीद भाभी ने हँसकर कहा—"बल्कि जिंदा अजायबखाने की । मगर जरा यह हरकत भी तो देखिए कि वह जानते थे कि अंजुम साहब इस वक्त पहुंच रहे हैं पर वह न जाने कहाँ खिसक गए ।"

मैंने कहा—"वह तो खैर हैं ही परले दर्जे के जंगली, लेकिन आपके साहब बहादुर कहाँ तशरीफ ले गए हैं ।"

नाहीद भाभी ने कहा—"वह भी कुछ कम नहीं है, बैठे बिठाए यही सूझी

कि गाड़ी लेकर जाता हूँ और चाय के लिए सेंडविचेज वगैरा लाता हूँ। लीजिए वह तशरीफ ला रहे हैं लदे-फंदे।"

रियाज भाई ने कमरे में दाखिल होकर एक अदद सलाम रसीद किया और बिना किसी साधारण परिचय के अंजुम की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा—"बड़ी प्रसन्नता हुई आपसे मिल कर।"

मैंने कहा—"यह रस्म बड़े-बूढ़े हाथ मिलाने के बाद अदा किया करते थे। अंजुम साहब आप तो समझ ही गए होंगे कि आप ही हैं रियाज साहब।"

अंजुम बोले—"जी हाँ ! अप्रत्यक्ष रूप से परिचय इतनी बार हो चुका है कि अब और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। मुझे निःसंदेह बड़ी प्रसन्नता हुई है रियाज भाई से मिलकर।"

रियाज ने कहा—"कहिए ट्रेन लेट तो नहीं थी।"

मैंने उत्तर दिया—"तत्काल आप इनसे इसी प्रकार की बातें कर सकते हैं कि ट्रेन लेट तो नहीं हुई, इंजन सीटी तो देता था, गार्ड झंडी तो हिलाता था, लाहौर का मौसम कैसा है, वर्षा से ज्यादा कीचड़ तो नहीं हुई, वहाँ तरकारियाँ किस भाव से मिल रही हैं।"

रियाज भाई बोले—"जी हाँ ! मैं समझ गया हूँ कि आज आप मूड में हैं।"

और यह कह कर जब वह चलते हुए तो नाहीद भाभी ने टोका—"तो चले कहाँ ?"

रियाज भाई ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"चाय की मेज भी लगवानी है या नहीं।"

और उनके जाने बाद मैंने नाहीद भाभी से कहा—"बड़े घर-गृहस्थी होते जा रहे हैं अब तो यह हजरत।"

नाहीद भाभी बोलीं—"जी हाँ, आज यही दौरा सुबह से पड़ा है। खाने का कमरा अपने सामने साफ करवाया है। सुबह से नौकरों की सब्जेक्टकमेटी की अध्यक्षता कर रहे हैं और उन्हें लगातार लेक्चर पिला रहे हैं।"

अंजुम ने टाई खोलते हुए कहा—"गुस्ताखी माफ ! मैं जरा गुस्ल करके अपने सिर से यह तुहमत उतारना चाहता हूँ कि मैं गोरकन हूँ, तोबा, तोबा, किस कदर धूल मिट्टी से पाला पड़ा है रास्ते भर।"

मैंने कहा—"जबकि यह बरसात का मौसम है, वर्ना लाहौर से कराची आने वाले तो ऐसे दिखाई देते हैं जैसे खुद अपने कफन-दफन से निपट कर आ रहे हों। मेरी राय में तुम्हें नहा ही लेना चाहिए, नहीं तो रियाज भाई ने अगर मेज जमा ली तो फिर मुश्किल ही से जुबान तालू से लगाएँगे।"

अंजुम तो नहाने-धोने चले गए और मैंने नाहीद भाभी से कहा—"मैंने अंजुम को सारा किस्सा विस्तार से कह सुनाया है। अब जरूरत सिर्फ इस बात की है कि रियाज को किसी तरह यह पता न लगना चाहिए कि अंजुम का शीरीं से भी कोई वास्ता है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"यह बात शीरीं पहले ही कह चुकी है और सच भी यही है कि अगर यही भेद उन्हें मालूम हो गया तो ड्रामे का सारा मजा किरकिरा हो जाएगा।"

मैंने कहा—"मजा किरकिरा होने के अतिरिक्त ड्रामा ही बेमानी होकर रह जाएगा। हैरत इस बात की है कि यह जानने के बाद भी अंजुम इस वक्त पहुँच रहा है शीरीं नहीं आई।"

नाहीद भाभी बोली—"वह बेगम साहबा बड़ी गहरी हैं। ऐसी ओछी बेचैनी का प्रदर्शन भला वह कैसे कर सकती हैं। मगर क्या अंजुम साहब ने भी कुछ नहीं पूछा शीरीं के बारे में अब तक।"

मैंने कहा—"यह हजरत भी कुछ कम काइयाँ नहीं है। मैंने जब इस राजदारी पर इनकी खबर ली तो वह एकदम संजीदा हो गए बोले कि एक नामुमकिन बात का मैं ढिढोरा पीटता ही क्यों ?"

नाहीद भाभी ने पूछा—"नामुमकिन क्यों ? आखिर इसमें ऐसी कौन-सी रुकावट है ?"

मैंने कहा—"नामुमकिन उसने इसलिए कहा होगा कि शीरी के मा-बाप को एक पढ़े-लिखे, एडवांस्ड, अच्छे चरित्र और अच्छे स्वभाव के नौजवान की जरूरत है। वो ऐसा दामाद ढूंढ रहे हैं जो धनवान भी हो और एक अच्छी खासी जायदाद का मालिक भी हो। रह गया बेचारा अंजुम, वह एक गरीब और विधवा मां का बच्चा है। न उस के पास बैंक बैलंस है, न कोठी न कार। उसके झोंपड़े में यह कीमती फानूस कैसे रोशन हो सकता है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मगर शीरीं के स्वभाव से तो ऐसा मालूम होता था कि हिचकिचाहट अगर कुछ है तो सिर्फ अंजुम साहब की है। उसने तो यही कहा था कि अंजुम साहब से कहिये कि अब वह और ज्यादा देर न करें।"

मैंने नाहीद भाभी को पूरी बात समझाई—"असल बात यह है भाभी कि पैसे वालों के पास तो बहुत कुछ होता है, लेकिन गरीबों की दौलत उनकी आन और इज्जत के सिवा और क्या होती है। अंजुम को हिचकिचाहट यह है कि अगर शीरीं के माता-पिता से बाकायदा इस सम्बन्ध में बात की गई और उन्होंने घमण्ड के साथ उसकी प्रार्थना को ठुकरा दिया तो इस अपमान को वह कैसे सहन कर सकेगा। दूसरे आज ही उसने मुझ से रास्ते में एक बहुत ही सच्ची बात कही, वह यह कि यदि यह शादी हो भी गई तो ऐसी स्थिति पैदा हो जाना भी असम्भव नहीं कि मैं या मेरी माँ आत्महीनता की बीमारी में ग्रस्त हो जाएँ। वह अपने प्रेम की उन सच्ची भावनाओं का जो उसके मन में शीरीं के लिए है खून कर सकता है, परन्तु यह गवारा नहीं कर सकता प्रेम के लिए अपनी आन और इज्जत को बेच दे।"

नाहीद भाभी ने चिन्तित होकर कहा —"तो फिर क्या होगा ?"

मैंने उत्तर दिया—"वह तो यही कहता है कि मैं सारे पहाड़ काट लाया हूं, मुकाबले के इम्तिहान में भी खुदा की मेहरबानी से कामयाब हो चुका हूँ और अब सर्विस मिलते ही मेरे घरेलू हालात में ऐसा परिवर्तन भी आ सकता है कि शीरी के घर वाले मुझे पसन्द कर लें और वह मेरी दरिद्रता का अपमान न कर सकें।"

नाहीद भाभी ने कहा—"अच्छा अब मैं समझी, शीरी का मतलब शायद यही था जब वह कह रही थी कि अब अंजुम साहब की तरफ से अगर कोशिश की जाए तो कामयाबी पहले के मुकाबले में ज्यादा मुमकिन है।"

मैंने कहा—"यह बात तो वह शायद इसलिए कह रही होगी कि मुराद साहब ने जो हरकत की है उसके बाद से शीरी के माँ-बाप यह चाहते हैं कि कोई अच्छा रिश्ता आ जाए तो वह हमेशा के लिए मुराद का झगड़ा समाप्त कर दें।"

नाहीद भाभी बोली—"खैर शीरी की माता तो कभी भी यह न चाहती थी कि मुराद से उसकी शादी हो। उनकी तो हर वक्त यही दुआ थी कि कोई ऐसी सूरत पैदा हो कि उनका यह हीरा इस बेडौल पत्थर से न तोड़ा जाए।"

अनुभव कीजिए इस निर्लज्ज जीवन का कि अभी-अभी मुराद साहब को बेडौल पत्थर कहा गया था कि वह एक तरफ से लुढ़कते हुए आ मौजूद हुए और आते ही पागलों की तरह पूछा—"क्या मतलब ? अभी तक तशरीफ नहीं लाए अंजुम साहब।"

नाहीद भाभी ने उत्तर दिया—"तशरीफ तो लाए थे, लेकिन आप चूंकि उनका स्वागत करने के लिए मौजूद न थे, इसलिए नाराज होकर चले गए, बोले, ऐसे घर में रहने से क्या फायदा जहाँ का उसूल यह हो कि मेहमान को देखकर मेजबान रफूचक्कर हो जाए।"

मुराद ने खिसियानी हँसी हँसकर कहा—"क्या अर्ज करूँ, इत्तफ़ाक से यही वक्त मैं चीफ कमिश्नर साहब को दे चुका था।"

नाहीद भाभी बोली—"यानी वक्त आप दे चुके थे उन्हें बजाए इसके कि वह आपको वक्त देते।"

मैंने आँखों में आँखें डालकर कहा—"मुराद एक बात बताओ भैया हम बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे और समझदार न सही, मगर ऐसे गए-गुजरे भी नहीं हैं कि आपका जैसे···मेरा मतलब यह है कि यों ही सा आदमी हमें उँगलियों पर नचाता फिरे। जी चाहता है कि इसी समय चीफ कमिश्नर साहब से चलकर आपके सामने ही पूछूँ कि क्या आपने सचमुच इन साहब को वक्त दिया था।"

मुराद ने जूतों समेत आँखों में घुसने की कोशिश की—"बेशक, बेशक मैं तैयार हूँ, चलिए मैं खुद तसदीक करा दूँ। पूछ लीजिए कि मैं उनसे अभी मिला हूँ या नहीं और उन्होंने मुझे चाय पिलाई है या नहीं। आप तशरीफ ले चलिए।"

मैंने कहा—"काश ! मेरे पास इतना फालतू रुपया होता जो मैं आपको हवाईजहाज से लेकर ढाका पहुँचता और वहाँ आपका सामना चीफ कमिश्नर साहब से कराता जो आजकल ढाका गए हुए हैं।"

नाहीद भाभी ने जोर का ठट्ठा मारा—"क्या मतलब ? यानी वह ढाका गए हुए हैं, जिनके साथ अभी मुराद साहब चाय पीकर आ रहे हैं।"

मुराद साहब ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा—"बात तो आप पूरी सुनते नहीं हैं। मुझे बुलाया था उनके खास चपरासी ने और यह कहकर कि मैं तुम्हें साहब से मिलवा दूँगा। वहाँ गया तो उसने कहा कि साहब तो ढाका गए हुए हैं, फिर किसी वक्त सही। उसने साहब के बरतनों में मुझे चाय भी पिलाई।"

हमें हँसने का अवसर भी न मिला कि अंजुम साहब ने बाथरूम से निकलकर सब का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। मैंने मुराद साहब से उनका परिचय कराया। वह हाथ मिलाने के लिए बढ़े ही थे कि नाहीद भाभी ने कहा—"अंजुम साहब ? आदर कीजिए आदर...आप नहीं जानते कि मुराद साहब अभी-अभी चीफ कमिश्नर साहब के बरतनों में चाय पीकर आ रहे हैं।"

अंजुम ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"महानता का यह सितारा तो मैं इन के माथे पर चमकता देख रहा हूँ।"

मुराद ने घबराहट में इस तरह अपने माथे पर हाथ फेरा कि नाहीद भाभी हँसते-हँसते लोट ही गईं। इतने ही में रियाज आ गए, कहने लगे—"क्यों भई मुराद साहब ! आप कहाँ चले गए थे ? मैंने होटल से निकलकर हर तरफ आहको ढूँढ़ा पर आप न मिले। तंग आकर आपका हुलिया थाने में लिखवाकर वापस आ गया।"

नाहीद भाभी बोलीं—"आप गए थे चीफ कमिश्नर साहब के बरतनों में चाय पीने।"

रियाज ने पूछा—"क्या मतलब ?"

मैंने मुराद को गले लगाते हुए कहा—"कुछ मतलब नहीं। यार ! हमारे मुराद भाई को इस बेदर्दी के साथ न छेड़ा कीजिए। नाहीद भाभी ! जबरदस्ती की हँसी हँसते-हँसते इनकी कनपटी की रग तक फुदकने लगी है। आइये अब हम गरीबों के साथ भी चाय पी लीजिए मुराद भाई।"

और रियाज ने अपनी कारीगरी की धौंस जमाते हुए कहा—"खुद बनाए हैं आज मैंने पकौड़े। जरा देखिए तो क्या नमक-मसाला है और क्या अच्छा रंग-रोगन है।"

नाहीद भाभी ने घबराहट प्रकट करते हुए कहा—"सचमुच जल्दी चलिए न जाने उन्होंने क्या करके रखा होगा।"

और हम सब उन के साथ-साथ चल खड़े हुए !

अंजुम के आ जाने से रियाज मंजिल की चहल-पहल अब कुछ और बढ़ गई थी। शाम की बैठकों में बड़ी हद तक बाकायदगी आ गई थी। तीसरे पहर की चाय पर आम तौर से सभी मौजूद होते थे, सिवाए शगुफ्ता के जो न जाने क्यों कुछ दिन से अलग-अलग रहने लगी थी। कई बार मैंने नाहीद भाभी से भी इसकी वजह पूछी, शीरीं से भी यही सवाल किया, पर यह दोनों कोई विशेष कारण न बता सकीं सिवाए इसके कि एक दिन शीरीं ने सिर्फ इतना कहा कि शगुफ्ता के बारे में अगर आप लोगों का खयाल यह है कि वह इस सोसाइटी की इसी प्रकार की मेम्बर है जैसे और सब तो यह गलत है। उन्हें तो आप स्वभाविक रूप से मुराद के आस-पास ही पाएँगे। मैंने इस पर बात काट कर पूछा भी था कि—"क्या मतलब है आपका इस आस-पास से ?"

और वह घबराकर बोली थी—"जी नहीं, कोई खास मतलब नहीं है। आप इतनी कड़े खतरे की जजीर चेहरे पर न लटकाएँ। मैं तो सिर्फ यह कह रही थी कि उनका न कोई खास दृष्टिकोण है और न वह दिमाग पर सोच-विचार का बेकार बोझ कभी डालती हैं। बस वह चहल-पहल की हद तक बड़ी अच्छी हमजोली हैं। लेकिन अगर कोई गम्भीर समस्या आ जाए तो न केवल यह कि किसी राय की उम्मीद रखें बल्कि यह भी कि इस प्रकार के सोच-विचार वाले वातावरण में उनका दम घुटने लगता है और आजकल

हमारे इस वातावरण में उन्हें सोच-विचार की मात्रा कुछ अधिक ही महसूस हुई है।"

शीरीं की इस तफसील से उलझ कर मैंने कहा—"इन दिनों आप बहुत खुश्क बल्कि ठस किस्म की बातचीत करने लगी हैं।"

उस समय तो यह बात हँसी में टल गई थी पर आज इसी शाम की बैठक में रियाज ने एक अजीब भेद खोला—"मैं एक चौंका देने वाली खबर आज आप सब के लिये लेकर आया हूँ। आप पहले मुझे यह विश्वास दिला दीजिए कि मुराद साहब तो आस-पास नहीं हैं या इस समय उनके यहाँ पहुँचने का कोई भय नहीं।"

नाहीद भाभी ने कहा—"वह तो रोज की तरह आज गायब हैं।"

मैंने कहा—"और इस बात का मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वह इस समय आने वाले भी नहीं। इसलिए कि सुबह ही पिक्चर जाने का जिक्र कर रहे थे।"

रियाज ने बड़े संतोष से कहा—"बस तो फिर ठीक है।"

और उसके बाद मुस्करा-मुस्कराकर चाय के घूँट लेते रहे और बिस्कुट खाते रहे तो नाहीद भाभी ने जलकर कहा—"कम-से-कम यही बता दीजिए कि हम उस चौंका देने वाली खबर सुनने के शौक में कब तक आप पर नजर जमाए बैठे रहें।"

मैंने भी कहा—"जाहिर है कि हमें यह शौक तो है नहीं कि हम आपकी चायनोशी का करतब देखने के लिए तमाशबीन बने बैठे रहें।"

रियाज भाई ने प्याली रख कर कहा—"भई बात यह है कि मैं खुद इस बात पर हैरान हूँ कि यह सब कुछ हुआ कैसे?"

अंजुम बोले—"रियाज भाई अच्छा यह होगा कि हम सब आपके साथ हैरान हों आप बात बताइए या तो हम सब आपके साथ हैरान होने की कोशिश करेंगे या फिर आपकी हैरत भी खत्म कर देंगे।"

रियाज ने अब सारी बात बता देना ही उचित समझते हुए कहा--"साहब ! हम लोग जो मजाक कर रहे थे वह तो सच बन रही है और जिन मुराद साहब को हम भेंट चढ़ा रहे थे वह तो परवान चढ़ने वाले हैं।"

नाहीद भाभी ने कुढ़ कर कहा---"कसम है आपको जो साफ बात करें।"

रियाज बोले---"साफ बात यह है कि आपकी सहेली शगुफ्ता की शादी उन्हीं नामुराद के साथ हो रही है।"

मैंने हँस कर कहा—"यह बात अगर खुद मुराद ने आपसे कही है तो आपसे पहले वह मुझसे कह चुका है।"

रियाज बोले—"नहीं साहब मुराद की बात पर कौन कान धरता है मेरे पास तो आज शगुफ्ता के अब्बाजान खुद तशरीफ लाए थे। पहले घर पर टेलीफोन किया। जब यहाँ से जवाब मिला कि मैं फैक्ट्री में हूँ तो वह हजरत वहाँ पहुँचे।"

नाहीद भाभी ने ताईद की—"हाँ, हाँ, एक टेलिफोन आया तो था, और यह बात मैंने खुद बताई थी कि वह फैक्ट्री में हैं—अच्छा तो वह पहुँचे वहाँ।"

रियाज ने कहा—"जी हाँ पहुँचे। इधर-उधर की बातें करने के बाद मुराद साहब के बारे में पूछताछ शुरू कर दी। दो-चार सवाल उसके संबंध में पूछ कर मुझसे राय माँगी कि शगुफ्ता के साथ अगर मैं उनका रिश्ता मंजूर कर लूँ तो आपके ख्याल में कैसा रहेगा।"

नाहीद भाभी ने आश्चर्यचकित होकर कहा—"अरे······।"

शीरीं बोली—"इसमें आखिर इतनी हैरत की क्या बात है, रिश्ते दिये ही जाते हैं और मंजूर भी होते हैं। मुराद बेचारे को हम ने जो हैसियत दे रखी है ऐसे-ऐसे अनगिनत लोगों से हमारा देश पटा पड़ा है। एक ढूँढ़िए तो इंशाअल्लाह ऐसे एक हजार मिल जाएँगे।"

मैंने कहा—"नाक में दम कर दिया है बखुदा शीरीं साहबा आजकल आपने। कैसी रूखी और बोर किस्म की बातचीत करने लगी हैं।"

रियाज बोले—"जबकि अनपढ़ और पढ़े लिखे लोगों के बीच यदि कोई अन्तर है तो बातचीत ही का है।"

नाहीद भाभी को इस समय यह बातें अखर रही थीं, बोली—"तोबा है भई। यह बातें फिर कर लीजिएगा। मैं तो यह पूछती हूँ कि शगुफ्ता के माँ-बाप को आखिर यह सूझी क्या है ?"

शीरीं ने कहा—"कमाल करती हो तुम भी, कौन सी नई बात सूझी है उन्हें, सब ही माँ-बाप बेटी की शादी करना चाहते हैं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"शादी करना चाहते हैं, अंधे कुएं में तो झोंकना नहीं चाहते। उन्हें मुराद के अलावा और कोई जुड़ा ही नहीं—।"

शीरीं ने कहा—"तो ऐब क्या है मुराद में।"

नाहीद भाभी बोलीं—"इसका जवाब तो मुझ से पहले तुम्हें देना चाहिये, या तुम्हारा ही सवाल तुम से करती हूँ बताओ क्या ऐब था मुराद में।"

शीरीं ने बात पूरी की—"यह कि मैंने उन्हें अपने लिए उचित नहीं समझा। यही सुनना चाहती हो ना। सुनो एक ही जवाब है कि मेरे और उनके बीच प्राकृतिक या स्वाभाविक किसी भी ढंग से यकसानियत न थी। वह मेरे लिए हर दृष्टिकोण से अनुचित थे और सब से बड़ी बात यह कि मैं उनकी हैसियत एक 'अपोजिट सेक्स' की समझती हूं।"

रियाज ने बहुत ही बेढंगेपन से उत्तर दिया—"जबकि शादी 'अपोजिट सेक्स' से ही की जाती है।"

और तो सब इस बात पर सन्नाटे में आ गए मगर शीरीं ने तीखी चितवनों से कहा—"यह तो आपने बहुत घटिया बात कही। मैं तो सिर्फ यह कह रही थी कि मेरे और मुराद के स्वभाव में आसमान जमीन का अन्तर है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"और तुम्हारे विचार में शगुफ्ता और मुराद के बीच यह अन्तर नहीं है।"

शीरी बोली—"यह मैं नहीं जानती कि है या नहीं—परन्तु जहाँ तक मैं शगुफ्ता को जानती हूँ वह उन साधारण लड़कियों में से एक लड़की है जिनके पतियों के लिये यह आवश्यक नहीं होता कि वह उनके चरित्र और स्वभाव के अनुसार हों। उनके लिए जरूरी यह होता है कि उस लड़की के माँ-बाप उस व्यक्ति से सहमत हों। उसे तो सिर्फ यह मालूम होता है कि उसकी शादी एक-न-एक दिन होकर रहेगी। यह सवाल कि कहाँ और किसके साथ होगी लाटरी के टिकट जैसा मामला है कि देखें बक्स से पर्चा निकलने के बाद किसका नाम आता है।"

अंजुम ने कहा—"क्या सचमुच इसी ढंग की है आपकी वह सहेली। अगर यह बात सच है तो उन्हें तो पुराने सिक्कों की तरह सुरक्षित कर लेना चाहिए। अब कहाँ मिलते हैं ऐसे टकसाली सिक्के।"

नाहीद भाभी ने रियाज से पूछा—"अच्छा तो फिर आपने क्या राय दी।"

रियाज ने कहा—"मैं क्या राय देता। पहले तो मैं भौंचक्का रह गया, फिर जब मुझे उनकी गम्भीरता से यह अनुभव हुआ कि यह हजरत शादी करने पर तुले बैठे हैं तो मैंने कहा, बुराई तो कुछ नहीं पर वह तो मूर्ख और सीधे-साधे बहुत हैं। इस पर बजाए नाराज होने के वह तो और खुश हो गए—'जी हाँ बेवकूफी की हद तक नेक और सीधे हैं'।"

शीरी ने कहा—"और यह सच है कि इससे बड़ी खूबी और किसी में क्या हो सकती है कि वह बना-बनाया अहमक हो ताकि शादी के बाद उसे अहमक बनाया जाए न कि वह सुसराल वालों को अहमक बनाए।"

नाहीद भाभी ने रियाज ही की ओर संकेत करते हुए कहा—"अच्छा फिर······फिर क्या कहा आपने ?"

रियाज बोले—"फिर क्या कहता मैं जब उन्हें एक बेवकूफ की जरूरत थी ही तो इसमें कहने सुनने की क्या तुक थी। हाँ मैंने एक बात यह जरूर कही कि मुराद साहब इस वक्त बेरोजगार है और यह बहुत बड़ी कमी है। वह अत्यन्त संतोष से बोले—यह तो खैर कोई ऐसी बात नहीं है। वैसे मैंने उनसे कह यही रखा है कि मियाँ पहले चार पैसे कमाने की फिक्र करो फिर घर बसाने की बात करना। पर यह बात मैं सिर्फ आपसे कह रहा हूँ कि घर में अल्लाह का दिया सब कुछ है अगर मेरी जायदाद का काम ही संभाल कर बैठ गए और मुझे इन बखेड़ों से छुट्टी मिल गई तो और चाहिए ही क्या ?"

मैंने कहा—"तो फिर हम सबको शगुफ्ता गरीब की फातिहा को हाथ उठा लेना चाहिए।"

शीरीं ने कहा—"कमाल करते हैं आप भी। आखिर उसमें फातिहा की कौन-सी बात है। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि जो बेतुकापन इस सम्बन्ध में आप महसूस कर रहे हैं वह शगुफ्ता महसूस न कर रही होगी।"

रियाज बोले—"जी हाँ, यह बात तो उनके अब्बाजान भी सुना रहे थे कि यह युग है जीवन के विभिन्न भागों के विकास का और लड़कियों को अपने वर आप पसंद करने का पूरा-पूरा अधिकार है। अतएव इस रिश्ते में हजार अच्छाइयों की एक अच्छाई यह है कि वह दोनों आपस में भी एक-दूसरे को पसंद करते हैं।"

शीरीं ने नाहीद भाभी से कहा—"मैं आदाब अर्ज करने की इजाजत चाहती हूँ।"

नाहीद भाभी ने कहा—"जब इन बड़े मियाँ को अपनी दामादी के लिए मुराद साहब इतने ही पसंद हैं तो वह आपसे पूछने क्या आए थे।"

रियाज ने कहा—"मुझसे पूछने यह आए थे कि चाल-चलन कैसा है ? —मैंने कहा—अच्छा नहीं है और इसलिए अच्छा नहीं है कि वह नेक चलन

हैं बल्कि इसलिए कि बदचलनी करने का गुण ही नहीं है उनमें ।"

अंजुम ने खुश होकर कहा—"क्या बात कही है आपने ?"

रियाज ने कहा—"जी हाँ ! मगर इस पर वह बुजुर्गवार बोले—"अलहम्दोल्लिहा"--फिर कहने लगे "और कोई ऐब तो नहीं है उनमें ।"

मैंने कहा—"बेवकूफी को अगर आप ऐब न समझते हों तो इसके बाद किसी ऐब की गुंजायश ही नहीं रहती ।"

वह बड़ी मुहब्बत से बोले कि है तो बड़ा भोला-भाला—और जो खतरा था वह पूरा हो गया यानी मुराद साहब आ ही टपके । अतएव यह बात-चीत समाप्त करनी पड़ी ।

आज रियाज मंजिल में हम मर्दों का राज था। इसलिए कि मेरे, अंजुम और रियाज के अतिरिक्त और कोई उपस्थित न था। नाहीद भाभी और शीरीं दोनों शगुफ्ता के यहाँ गई थी, ताकि इस बात का पता चला सके कि शगुफ्ता इस घटना के बाद किस रंग में है। और मुराद के साथ उनका जो संबंध निश्चित होने वाला है उसका शगुफ्ता पर क्या प्रभाव है। यह दोनों गई तो थीं थोडी ही देर के लिए, मगर नाहीद भाभी ने वहाँ से टेलीफोन कर दिया था, कि आप लोग खाने पर हमारी प्रतीक्षा न करें। शगुफ्ता की अम्मीजी ने जिद करके हमें इस वक्त रोक लिया है। अतः हम तीनों ने एतवार के इस दिन के सन्नाटे को दिलचस्प बनाने के लिए अंजुम के दोस्त आफताब को भी बुला लिया ताकि कुछ ताश-वाश खेलकर वक्त गुजारा जाए। इस प्रकार दिन भर ताश होता रहा, आफताब के लतीफों पर कहकहे उडते रहे और यह महफिल उस वक्त तक जमी रही जब तक आफताब की गिरफ्तारी का वारण्ट लेकर उनकी बेगम साहबा वहीं न आ गई। आज इन लोगों को किसी फंक्शन में जाना था। आखिर आफताब भी खेल में अपनी हार का हिसाब चुकाकर और अंजुम की आर्थिक दशा मजबूत बनाकर चलते बने। मगर शुक्र है कि इन के जाते ही नाहीद भाभी और शीरीं आ पहुँची। हम दोनों ने अत्यन्त व्याकुलता से शगुफ्ता का हालचाल पूछा। उनके घर का समाचार मालूम किया, पर नाहीद भाभी ने आते ही एक और झगड़ा शुरू कर दिया, वह यह कि

कमरे में कदम रखते ही पहले तो कुछ फुंकारना शुरू किया फिर नाक पर दुपट्टा रखकर बोलीं—"तोबा है सिगरेटों का कितना धुआं भरा है।"

शीरीं ने एशट्रे दिखाते हुए कहा—"धुआँ नहीं जरा इसे देखिए कितनी सिगरेटें बुझाई गई हैं। मालूम होता है कि सिगरेटें पी नहीं गईं, आमों की तरह खाई गई हैं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"आफताब पीने तो बहुत हैं सिगरेट। मगर आज तो ऐसा लगता है जानो 'सिगरेट नोशी' का मैच हुआ है। खुदा के लिए इस कमरे से निकलो, दम घुटा जा रहा है यहाँ तो।"

मैंने कहा—"और मेरा दम इसलिए घुट रहा है कि जो बात आप लोगों को आते ही बता देनी चाहिये थी उसी को अब तक गोल किये हुए हैं आप।"

नाहीद भाभी ने बड़ी सरलता से पूछा—"कौन सी बात ?"

मैंने कहा—"अल्लाह रे—आपकी बनावट।"

अंजुम बोले—"शायद सोची-समझी बनावट को केवल बनावट कह गए हैं।"

मैंने कहा—"मतलब यही था मेरा। जरा यह अदा तो देखिये कि जैसे आपको यह पता ही नहीं कि हम दिन भर किस बात के इन्तजार में सूखते जा रहे हैं। समझे थे कि आप दोनों आते ही शगुफ्ता के यहाँ की बातें सुनाना शुरू कर देंगे पर आप लोग आईं तो बातें करती हुई सिगरेट और धुएँ की।"

शीरीं ने कहा—"शगुफ्ता के यहाँ की क्या बातें सुनाई जाएँ। मेरा ख्याल हर दृष्टिकोण से बिलकुल सच सिद्ध हुआ है।"

रियाज बोले—"क्या मतलब ? क्या शगुफ्ता जानती है कि उसकी शादी मुराद से होनी तय हो रही है। अगर जानती है तो क्या वह आप दोनों से मिलकर रोई भी नहीं ?"

नाहीद भाभी ने कहा—"कमाल करते हैं आप लोग भी। वह फूली नहीं समाती। मुराद के नाम पर ऐसी प्रसन्नता होती है उसे कि मैं क्या कहूं।"

शीरीं ने कहा—"मैं आप लोगों से पहले ही कह चुकी हूँ कि मुराद को हम लोग चाहे कुछ भी समझें पर शगुफ्ता के लिए वह कोई अजीब चीज नहीं है।"

अंजुम बोले—"यह गलत है। इस तरह हम कोई अन्दाजा न कर सकेंगे। नाहीद भाभी आप को कष्ट तो होगा पर आप पूरा 'सफरनामा' सुनाइये कि आप वहाँ पहुँचीं तो क्या हुआ—"

नाहीद भाभी ने कहा—"भई हम दोनों जैसा ही पहुँचे शगुफ्ता की अम्माँजान ने हमें देखकर अपनी आदत के अनुसार हमारी बलाएँ लेना शुरू कर दीं और वही रटे-रटाए वाक्य दोहराए कि आज विचारी रास्ता भूल आईं, यह ईद का चाँद आज कैसे निकल आया, शग्गू की मुहब्बत ने जोश मारा होगा—"

रियाज ने टोका—"शग्गू ? यानी शगुफ्ता।"

अंजुम ने कहा—"इतनी सी बात तो आपको बिना पूछे भी समझ लेनी चाहिये थी। मुराद का प्यार का नाम तो शग्गू हो ही नहीं सकता। अच्छा साहब फिर ?"

शीरीं ने कहा—"फिर क्या ? यह बातें हो ही रही थीं कि शगुफ्ता वाकई शग्गू बनी हुई एक कमरे से निकली और हम दोनों से लिपट गई।"

नाहीद भाभी ने बात जारी रखी—"उनको देखकर मैंने उनकी अम्माँजान से कहा कि ईद का चाँद मैं तो नहीं हो गई हूँ, हाँ यह जरूर हो गई हैं कि तरसा रखा है अपने दर्शनों को। मैं तो आज पूछने आई हूँ कि हम लोगों से ऐसी कौनसी भूल हो गई है कि उधर का रास्ता ही भूल गईं। इस पर उन की अम्माँजान ने बड़ी गहरी मुस्कराहट के साथ कहा कि तुम्हारी शिकायत भी ठीक है मगर अब वह इस घर में कैसे जा सकती है जहाँ की बात आई हुई है, बल्कि जहाँ की बात पक्की हो चुकी है।"

शीरीं ने कहा—"इस पर मैंने अनजान बनकर कहा, किस के घर की बात आई हुई है, क्या आपका मतलब रियाज मंजिल से है! तो वह ठस्से से मुस्करा-कर बोलीं, हाँ, हाँ, वह वहीं तो रहता ना, मुराद, तो क्या उसने तुम लोगों को नहीं बताया कि उसकी बात यहाँ चल रही हैं— शग्गू से। हाँ, अच्छा याद आया मुझे, शग्गू के अब्बा भी तो गए थे नाहीद के दूल्हा से राय लेने। मैंने तो उन से साफ कह दिया था कि सौ बातों की एक बात यह है कि वैसे तो लड़का अल्लाह रखे हजार दो हजार में एक है। शरीफ खानदान, लिखा-पढ़ा, नेक। खुदा ना खास्ता कोई ऐब भी नहीं है। सिगरेट तक नहीं पीता, मगर नाहीद के दूल्हा से राय लेलो वह कह दें हाँ ठीक है तो बस ठीक है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"इस पर मैंने कहा—जी हाँ, वह गए तो थे रियाज के पास।'

शीरीं बोली—"यह सुनकर वह बड़ी बी उँगली ठोड़ी पर रखकर बोलीं—हैरत है बीबी तुम पर ! फिर भी पूछ रही हो कि अब शग्गू वहाँ क्यों नहीं आती। अब तो वह उस घर में अल्लाह ने किया तो दुल्हन बनकर आएगी।"

नाहीद भाभी बोलीं—"बातें हम दोनों उन से कर रहे थे पर नजर थी शगुफ्ता की ओर जो गरदन झुकाए दुपट्टे का आँचल चबा रही थी, ताकि वह सुन्दर मुस्कान प्रकट हो जाए जो लज्जा में लिपटी हुई थी।"

मैंने कहा—"इसका मतलब यह है कि शगुफ्ता अत्यन्त प्रसन्न है इस विवाह से। बस तो फिर ठीक है। खुदा मुबारक करे ! जैसे उनके दिन फिरे खुदा सब के दिन फेरे।"

शीरीं बोली—"इस दिलचस्प कहानी को इतनी जल्दी समाप्त न कीजिए शगुफ्ता की प्रसन्नता का अनुमान उसकी माँ की बातों से न कीजिए, अब आपको वह बातें भी सुनाई जाएंगी जो एकान्त में उनसे हुई हैं।"

नाहीद भाभी ने कहा—"और क्या ? वास्तविकता तो तभी मालूम

होगी। हाँ तो सुनिये। हम दोनों को शगुफ्ता के पास छोड़कर जब बड़ी बी टल गईं तो शगुफ्ता हम दोनों को कमरे में लेकर आ गई। वहाँ पहुँचकर मैंने उससे कहा—क्योंरी ऐसी बाद हवाई हो गई है कि चुपके ही चुपके मुराद को अपनाकर बैठ रही और किसी को कानों-कान भी खबर न होने दी। यह सुनकर उसने कहा, तो भला मुझे क्या खबर थी कि मजाक ही मजाक में यह बात इतनी बढ़ जाएगी। वह तो लगे एक दिन सचमुच रोने कि मैं तो जान दे दूँगा, समुद्र में छलाँग लगा दूँगा, किसी ट्रेन के नीचे अपने को झोंक दूँगा, यदि तुमने भी मुझे शीरीं की तरह निराश किया। अल्लाह जानता है मैंने बहुत टाला पर जब मुझे यह अनुमान हो गया कि यह पीछा छोड़ने वाला नहीं है तो मैंने तंग आकर उनसे कहा कि मुझ से क्यों कह रहे हो जो कुछ कहना है मेरे माँ-बाप से कहो। इस पर उन्होंने आँखों में आँसू भर कर कहा—तुम एक बार इतना कह दो कि मैं तुम्हें नापसन्द नहीं हूँ। इसके बाद तो मैं सब कुछ कर लूंगा। ऐसे पीछे पड़े कि मुझ से यह बात कहलवाकर ही रहे।"

शीरीं ने कहा—"मैंने तो शगुफ्ता को छेड़ा भी कि तूने यह किस मुँह से कहा होगा कि तुम मुझे पसन्द हो।" इस पर उसने कहा—"मुँह भर कर यह बात कैसे कह सकती थी, हाँ उन्होंने कसमें दे देकर जब यह पूछा, कि मैं तुम्हें नापसन्द हूँ तो मैंने इनकार में सिर हिला दिया। बस वह मारे खुशी के उछल पड़े, बोले, तुमने मुझे नामुराद के बजाए आज बामुराद बना दिया। तुमने मुझे नया जीवन और नए जीवन की नई उमंग दान दी है। उसी शाम मुझे एक अंगूठी पहनाने को ले आए। मैं ने अँगूठी-वँगूठी तो पहनी नहीं, हां उनकी वह नज्म जरूर सुन ली जो इस रस में डूब कर लिखी थी।"

रियाज ने कहा—"गधा कहीं का, नज्म कहेगा वह।"

अंजुम बोले—"शत्रुता की गंध आती है आप से।"

नाहीद भाभी ने कहा—"जल तो रहे हैं इसी प्रकार।"

रियाज बोले—"अजी मैं जल रहा हूँ आपकी उस अहमक सहेली पर जो बहुत थर्ड क्लास चरित्र की लड़की निकली। सुना आप ने पसन्द भी आया कौन, मुराद।"

मैं ने कहा—"और आप के होते हुए।"

अंजुम बोले—"कितना अजीब जमाना आ गया है कि हीरे खाक में रुल रहे हैं और कंकर जवाहर के मोल बिक रहे हैं।"

शीरीं ने कहा—"मुख्तसिर यह कि वहां तो शादी की तैयारियाँ हो रही है, जोड़े सिल रहे हैं, बरतनों पर कलई हो रही है। हमारे सामने ही सुनार के यहाँ से जेवर आए थे। उनका हिसाब हो रहा था और शगुफ्ता उन तमाम कामों पर खिली जा रही थी।"

अंजुम ने कहा—"जब मामला यहाँ तक पहुँच गया है तो आप लोगों को चाहिये कि अब शगुफ्ता साहबा के सामने मुराद को बुरा-भला कहना छोड़ दें।"

शीरीं बोली—"इस परामर्श का धन्यबाद। हमने तो पहले ही यह स्थिति देख कर मुराद की प्रशंसा के पुल बाँध दिये थे। हम तो शगुफ्ता से यह प्रतिज्ञा कर आए हैं कि आज से हम मुराद भाई को दूल्हा भाई-कहा करेंगे।"

नाहीद भाभी ने कहा—"कितनी प्रसन्न होती है वह इस बात पर कि यह तो मैं जानती हूँ कि अब वहाँ उनकी खैर नहीं। शहाब साहब नाक में दम करके रख देंगे उनका।"

इसी समय मुराद ने कमरे में दाखिल होकर अस्सलामअलेकुम जो किया है तो सारा वातावरण वालेकुमुस्सलाम बन कर रह गया।

सन्देह नहीं कि रियाज के कारण शीरीं और अंजुम को जान बूझकर कुछ अलग-अलग सा और एक दूसरे से दूर-दूर रहना पड़ रहा था। हम नहीं चाहते थे कि रियाज को कानो-कान भी उस भेद का पता चले जो शीरीं और अंजुम के दरमियान था। वैसे तो परिस्थिति यदि यह न भी होती तो भी अंजुम और शीरीं दोनों में से कोई भी इतना छिछोरा न था कि चोचलेबाजी शुरू करके भाँड़ा फोड़ देता। शीरी तो खैर कुछ जरूरत से अधिक ही अलग-अलग सी रहती थी परन्तु इस मामले में अंजुम की गहराई की भी कोई थाह न थी। न जाने कब से यह किस्सा चल रहा था परन्तु मुझ से भी, जिससे उनके अत्यन्त गहरे सम्बन्ध हैं, आपस में कोई भेद-भाव नहीं है, छींकते भी हैं तो मुझ से पूछ कर, यह भेद छुपाए रखा। यदि उन्होंने मुझसे यह बात छुपाई थी तो किसी-न-किसी ढंग से मुझे सूँघ लेनी चाहिये थी यह बात, इस-लिए कि सुना तो यही है कि इश्क और मुश्क छुपाए नहीं छुपते, पर मुझे कभी शंका तक न हुई। छुपाने वाले चाहें तो इस कामयाबी के साथ इश्क और मुश्क को भी छुपा सकते हैं। खैर यहाँ भी यह दोनों मस्लेहत के अनुसार एक-दूसरे से अलग-अलग और खिंचे-खिंचे रहते थे। हाँ अब एक ऐसी सीमा सामने आ गई थी कि इस दूरी और खिंचाव को भी एक सख्त और भयंकर परीक्षा से गुजरना पड़ा। हुआ यह कि रात को अंजुम को अचानक दो-चार छींकें आई, फिर कुछ हरारत शुरू हुई और सुबह को जब उन्हें देखा गया तो

अच्छा-खासा बुखार लिये पड़े थे। डाक्टर ने उन्हें देखा तो फ्लू का बहुत सख्त हमला बताया और बाकायदा रोगी बताकर उसके बिस्तर के आस-पास ऐसी मेजें लगवा दीं जिन में किसी पर दवा की शीशियाँ, किसी पर प्याली में थरमामीटर भीग रहा था, और कहीं टम्परेचर चार्ट लटक रहा था। बुखार इतना तेज था कि बड़ी-बूढ़ियों के कहने के अनुसार चने भुन रहे थे। आँखें लाल अंगारा हो रही थीं और हजार चुप रहने के बावजूद भी यह हज़रत कराहे बिना न रह सकते थे। नाहीद भाभी ने उनकी यह हालत देखकर शीरीं को केवल इसलिए टेलिफोन कर दिया था कि बाद में उन्हें यह शिकायत पैदा न हो कि खबर ही न की। टेलिफोन पर यों तो बहुत मामूली सा बुखार बताया गया था ताकि वह अधिक चिन्तित न हो। फिर वह टेलिफोन के आध घण्टे बाद ही आ मौजूद हुई और सीधी अंजुम के कमरे में पहुंची जहाँ डाक्टर के आदेशानुसार भीड़-भाड़ से अलग एकान्त में उन्हें रखा गया था। वहाँ केवल एक मैं था जो एक तरफ बैठा हुआ समाचार-पत्र देख रहा था और उनकी कराहें सुन रहा था। शीरीं को आता देख कर नाहीद भाभी भी आ गईं। शीरीं ने कमरे में दाखिल होते ही कहा—"अरे यह क्या? पंखा बन्द है और कम्बल ओढ़े हुए हैं। क्या कहेगा यह बुखार भी, जिसे धोखा देकर आपने स्वयं बुलाया है और जब वह आ गया है तो उसके साथ यह बेरुखी बरती जा रही है।"

नाहीद भाभी ने हैरत से कहा—"यह क्या कह रही हैं? कोई समझा इनकी बात, मेरे तो कुछ पल्ले पड़ा नहीं?"

अंजुम ने तकलीफ के बावजूद मुस्कराते हुए कहा—"मेरी असावधानी से अप्रसन्न हैं।"

शीरीं बोली—"मुझे तो हैरत है कि यह बुखार इतनी देर में क्यों आया। बुलाने के ढंग तो बहुत पहले से थे। जब से जनाब कराची तशरीफ लाए हैं, लगातार बीमारियों के स्वागत का झंडा लहरा रहा है।"

मैंने कहा—"यह आप सच कह रही हैं। कई बार मैंने भी इन्हें टोका कि इस शहर में खुले आस्मान के नीचे सिर्फ गँवार टाइप के लोग ही सो सकते हैं। वे लोग जो नागरिक शास्त्र के नियमों और राजधानी के असूलों से आमतौर पर अपरिचित होते हैं।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तो क्या अंजुम भाई बाहर ओस में सोया करते थे।"

शीरीं बोली—"शाबाश है तुम को भी। अपने ही घर में रहने वाले एक सदस्य के बारे में तुम्हे यह खबर भी नहीं कि वह कहाँ सोता है।"

मैंने कहा—"कारण यह है कि यहाँ रात की बैठक उस समय समाप्त होती है जब यह हमारी भाभी साहबा लगभग आधी नींद कुर्सी पर बैठे-ही-बैठे सो चुकी होती हैं। नींद की हालत ही में चलकर बिस्तर तक जाती हैं, सुबह को उस समय जागती हैं जब सुबह का सुहाना वक्त दोपहर की सीमाओं में दाखिल होने लगता है। इन बेचारा को क्या मालूम कि कौन कहाँ सोता है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"खैर यह तो आपकी शायरी है। बताइये आज ही मैं किस समय आई हूँ यहाँ अंजुम भाई का हाल पूछने।"

मैंने उत्तर दिया—"आज तो वाकई कमाल कर दिया आपने। आज आपकी इस बात से सचमुच यह अनुभव हो गया कि अंजुम कितना भाग्यवान है कि उसकी बीमारी के कारण आप पूरी नींद सो भी न सकीं।"

शीरीं बोली—"खैर अगर तुम्हें नहीं मालूम तो मुझ से सुनो कि जनाब वाला एक तो सुबह के अतिरिक्त शाम को भी ठण्डे पानी से स्नान करते हैं जिससे इन्हें कई बार रोका जा चुका है और बताया जा चुका है कि इस शहर में यह असावधानियाँ यहाँ का मौसम बरदाश्त न करेगा। फिर महीन किस्म का लिफाफा बनकर अर्थात् मलमल का बहुत बारीक कुरता बिना

बनयान के पहन कर बाहर आराम फरमाते हैं। सवाल यह है कि यह बीमार न होंगे तो और कौन होगा।"

अंजुम ने कहराते हुए कहा—"आदत पड़ी हुई है सुबह-शाम स्नान करने और बाहर सोने की, क्या करूँ।"

शीरीं ने व्यंग्य करते हुए कहा—"सच कहते हैं आप, पर यह बीमारी भी जिसमें आप ग्रस्त हुए हैं, अपनी आदत से मजबूर है। ताक में रहती है इसी प्रकार की असावधानियों की—समझे ! फिलू हुआ है तुम्हें।"

नाहीद भाभी ने कहा—"डाक्टर साहब भी यह कही गए हैं, मगर बुखार बहुत तेज है।"

शीरीं बोली—"अजी कुछ भी नहीं, इतने बड़े आदमी, इससे भी क्या कम होता बुखार।"

मैंने कहा—"आज तो आप केवल व्यंग्य के मूड में दिखाई देती हैं।"

नाहीद भाभी बोलीं—"कुछ लोगों में प्यार प्रकट करने की रीति यही होती है। बन्दर भी ऐसे अवसर भी इसी प्रकार खुखियाता है।"

शीरीं ने कहा—"खैर यह तो बकवास है, पर मुझे ऐसे लोगों से सचमुच कोई हमदर्दी नहीं होती जो जान-बूझकर इसलिये असावधानी से काम लेते हैं कि खुद बीमार हों और दूसरों को परेशान करें।"

मैंने कहा—"तो जैसे आपने अपना परेशान होना स्वीकार कर लिया।"

शीरीं ने कुछ झेंप कर कहा—"और बुखार है कितना ?"

मैंने कहा—"अभी दस मिनट हुए टम्परेचर लिया था एक सौ तीन पाईंट छः था।"

शायद शीरीं को यह अनुमान न था कि बुखार इतना तेज होगा। यह टम्परेचर सुन कर उसका मूड चिन्ता में तबदील हो गया और उसने बड़ी

व्याकुलता से कहा—"एक सौ चार के लगभग समझिये । डाक्टर से कहना तो चाहिये था कि इतना बढ़ गया है टेम्परेचर ।"

नाहीद भाभी बोली—"डाक्टर अभी तो देख गया है । उसके सामने भी इतना ही था बुखार ।"

मैंने कहा—"इन्हें बुखार के अतिरिक्त शरीर में पीड़ा की तकलीफ अधिक है और इस दर्द की बेचैनी इनके चेहरे से दिखाई दे रही है । इस पर आप हैं कि लगातार डॉट रही हैं गरीब को । हो गई अब बेचारे से गलती, अब माफ कीजिये ।"

शीरीं ने ने अब जरा नर्मी के साथ कहा—"सिर दबा दिया जाए आपका ।"

अंजुम ने इतने बुखार और इस कड़ी तकलीफ के बावजूद कहा—"हूँ तो इस लायक कि गला दबा दिया जाए पर आपकी इस इनायत का शुक्रिया ।"

शीरीं ने नाहीद भाभी से कहा—"नाहीद मेरा ख्याल यह है कि यह लेंगे संकोच से काम और किसी व्यक्ति से कोई काम लेना पसन्द न करेंगे । इसलिए उचित यही है कि किसी ढंग की नर्स का प्रबन्ध कर दिया जाए । वह इनकी देखभाल रखेगी ।"

मैंने कहा—"ढंग की नर्स कैसी होती है ? आपका मतलब यह है कि जरा अधेड़ सी हो ताकि माता का व्यवहार तो करले प्रेम आदि का नहीं । साहब, सौ नर्सों की एक नर्स मैं जो मौजूद हूँ । रह गई शरीर की ऐठन और सिर का दर्द वगैरा यह तो अभी जाता रहेगा । इसके अतिरिक्त मुझे एक बात यह भी कहनी थी कि उनकी बीमारी ने यह भय भी उत्पन्न कर दिया है कि रियाज को आपने जिस चतुरता के साथ इस बात का विश्वास दिलाए रखा था कि अंजुम से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है, कहीं इस परेशानी में यह भाँडा भी न फूट जाए । इस समय अगर रियाज होते तो यह हालत

देखकर सोच सकते थे कि आपसे आखिर इनका क्या मतलब है और आप इनके लिये इतनी व्याकुल क्यों दिखाई दे रही हैं।"

शीरीं बोली—"मतलब न होने का अर्थ यह तो नही है कि आदमी बीमार को पूछे भी नही या किसी बीमार को देखकर गाना और कहकहे लगाना शुरू कर दे।"

नाहीद भाभी ने कहा—"नहीं यह मतलब नहीं है शहाब भाई का। एक परेशानी तो आम किस्म की होती है जो सब को हो सकती है और एक परेशानी वह होती है जिसमें आप ग्रस्त हैं।"

शीरीं बोली—"कौन मैं ? लो भला इसमें परेशानी की क्या बात है।"

मैंने कहा—"बात तो वाकई कोई नहीं है, मगर है परेशानी और वह भी गम्भीर किस्म की।"

नाहीद भाभी ने घड़ी देखकर कहा—"ग्यारह बज रहे हैं। मेरे ख्याल में पीने वाली दवा का वक्त आ गया।"

मैंने कहा—"जी हाँ पिलाता हूँ अभी।

अंजुम ने कहराते हुए कहा—"बहुत बदमजा है यह दवा और मेरा विश्वास है कि ऐसी दवा जिसे रोगी का मन स्वीकार न करे कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती।"

शीरीं बोली—"अच्छा, आप फलसफा बघारना छोड़िए। इस नियम के अनुसार तो आपको लेमन स्क्वैश ही दिया जा सकता है। लाइये शहाब भाई मुझे दीजिये दवा मैं पिलाती हूँ।"

मैंने कहा—"मैं आपके इस जज्बे की कदर करता हूँ, मगर यह बात उचित नहीं है। अगर इस समय रियाज भाई आगए तो क्या होगा ?"

शीरीं ने बढ़ते हुए कहा—"तोबा है भाई, गोया हम चोरी कर रहे हैं। अच्छा खैर आप ही पिला दीजिये दवा।"

और सचमुच हुआ भी यही कि ज्यो ही मैने दवा पिलाने के लिए कप अ जुम के मुँह से लगाया तो रियाज आ मौजूद हुए और आते ही सब को यह आदेश दिया कि इस कमरे मे किसी को आने की इजाजत नही है। इस लिए कि सब ही को फ्लू हो सकता है। अतएव औरतें तो चली जाएँ कमरे से बाहर ! यहाँ हम दोनो काफी है। और उसने वाकई उन दोनो ,को बाहर निकाल कर ही दम लिया।

अंजुम अब तक बीमार थे। मुराद साहब आदत के अनुसार लापता थे। शीरीं अंजुम के कारण सख्त परेशान थी और मैं, जहाँ तक मुमकिन था, उसकी देख-भाल कर रहा था। रियाज को एक जरूरी काम से सियालकोट जाना पड़ गया था। वह उधर को रवाना हुए और यहाँ शीरीं को अब खुले खजाने परेशान होने का अवसर मिल गया। अब तो उन्होंने अंजुम की तीमारदारी का पूरा काम खुद ही ले लिया। सुबह से आ जाती थी और मजबूरन रात गए वापस जाकर अपने घर के टेलीफोन पर बैठ जाया करती थी कि अब बताओ कि टम्परेचर कितना है, उलझन कुछ और तो नहीं बढ़ी, दवा के बाद जो गोलियाँ दी जाती हैं वह दे दी गई हैं या नहीं। आखिर तंग आकर मैंने अंजुम से कहा—"सुनिये जनाब ! मजाक तो हुआ खत्म। अब या तो आप बीमारी के बिस्तर से उठिए या अपनी तीमारदार साहबा से जो आपकी ठेकेदार साहबा बनी हुई है, हमारी जान बचवाइये।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मेरा तो ख्याल यह है कि तीमारदारी की जगह वह बीमार की नाजबरदारी कर रही हैं। इसलिए बीमारी जाने का नाम ही नहीं लेती।"

अंजुम बेचारा क्या जवाब देता—वह खुद शीरीं साहबा की देखभाल से तंग आ चुका था। वह डाक्टर के बताए हुए परहेज को सौ गुना कर के उस गरीब के लिए अच्छी-खासी मुसीबत बन गई थी। डाक्टर ने उसे सूप

के अतिरिक्त बिना मिर्च के कबाब भी बता दिए थे मगर श्रीमतीजी ने कबाब उनके सामने फटकने तक न दिये। डाक्टर ने मुर्गी का कीमा खाने को बता दिया था मगर इन जबरदस्ती की लेडी डाक्टर साहबा की राय यह थी कि कीमा खाते ही खुदा न करे कुछ हो गया तो। हम लोग इस समय शीरीं की गैरहाजिरी से फायदा उठाकर उनकी इस कड़ी जाँच और देख-भाल के व्यवहार पर बात कर रहे थे और अंजुम की तबीयत भी चूँकि आज किसी कदर अच्छी थी इसलिए वह भी इस बातचीत में हिस्सा ले रहे थे। उनका कहना था कि आप लोग आज के सुनहरी अवसर से लाभ उठाकर मुझे कबाब या कीमा जो कुछ भी मिल सकता हो, खिला दीजिए, पर हम दोनों को मुसीबत ने तो घेरा नहीं था कि उनकी यह इच्छा पूरी कर के शीरीं का गुस्सा अपने सिर लेते। इसलिए हम उसे यही समझा रहे थे कि डाक्टर की इजाजत मिल जाना काफी नहीं है, अपनी तीमारदार साहबा की मंजूरी ले लो तो जितने कहो कबाब तुम्हें खिलाएँगे। यह बातचीत चल ही रही थी कि शीरीं दूर से आती दिखाई दी और इससे पहले कि वह कमरे में दाखिल हो अंजुम अपने स्वस्थ होने का विश्वास दिलाने के लिए तकिए का सहारा लगाकर बैठ गया। शीरीं के आते ही मैंने उससे कहा—"मुबारक हो, आज तो आपको यह बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।"

नाहीद भाभी ने प्रसन्न होकर कहा—"खुदा का शुक्र है आज तबियत बहुत अच्छी है। टम्परेचर भी लगभग नारमल है।"

शीरीं बोली—"बिल्कुल नारमल नहीं, लगभग नारमल है। वह भी नारमल इसलिए नहीं कहा जा सकता कि इनका नारमल अब सत्तानवे से ज्यादा नहीं हो सकता, मगर सवाल यह है कि आया बैठे हैं किसके मशवरे से। यह तो सख्त बदतमीजी है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"डाक्टर साहब ने इजाजत दे दी है।"

शीरीं बोली—"वह तो अब इस प्रकार की बहुत सी आज्ञाएं देंगे, ताकि बीमारी फिर उत्पन्न हो जाए और उनकी विजिट चलती रहे।"

मैंने कहा—"मगर वह गरीब तो फीस भी नहीं लेता, उसे विजिट जारी रखने की कौन-सी लालच हो सकती है।

शीरीं बोली—"फीस ही केवल आकर्षण का कारण नहीं है। उस दिन आपके ड्रेसिंग गौन की प्रशंसा कर के उड़ा ले गए। परसों आकर कह दिया आज मेरी वर्षगांठ है। कितना कीमती काफी सेट दिया गया है उन्हें उपहार में। देखो फीस लेने की हजार तरकीबें हैं। जैसे दवा उन्हीं के दवाखाने से आती है।

नाहीद भाभी ने कहा—"दवा तो सचमुच बहुत कीमती होती है।"

शीरीं बोली—"इसीलिए तो अच्छा-खासा नुस्खा लिखते-लिखते मिक्सचर नम्बर चौबीस लिख देते हैं। ताकि दवा कहीं और से मिल ही न सके और खाना उतारता है मिक्सचर नम्बर चौबीस।"

मैंने कहा—"सम्भव है आपका विचार ठीक हो, परन्तु नियम अनुसार बड़े डाक्टर को यह करतब करने नहीं चाहियें।"

शीरीं बोली—"फिर एहसान का एहसान कि साहब हम फीस नहीं लेते बल्कि पेट्रोल तक अपना ही खर्च करते हैं।"

अंजुम ने कहा—"कुछ भी हो मगर मुझे उनके इलाज से फायदा अवश्य हुआ है और यदि उनके समस्त आदेशों का पालन किया जाता तो और भी जल्दी फायदा होता। परन्तु उनके आदेशों के सेन्सर होने का जो सिलसिला जारी हुआ है तो उसने मुझे आस्मान से गिराकर खजूर में अटका दिया है।"

नाहीद भाभी ने हँसकर शीरीं से कहा—"सुन रहीं हैं आप भी खजूर साहबा।"

शीरीं बोली—"जी हाँ सुन रही हूँ। अल्लाह जानता है बच्चों से भी गए गुजरे हैं असावधानी के मामले में। सवाल यह है कि अगर कुछ दिन जुबान के चटखारे से बचा लिया जाय तो कौनसी कठिन बात है। डाक्टरों का क्या है वह तो कभी-कभी शेखी जताने के लिए रोगी को बड़े से बड़ा

हानि पहुँचाने वाला आहार बता देते हैं। परन्तु मेरा नियम यह है कि साव-धान रहना असावधानी से बहरहाल बेहतर है। अच्छा जनाब! अब आप बहुत बैठ चुके कृपा कर के लेट जाएँ।"

और अंजुम सचमुच उनके आदेशानुसार चुपचाप लेट गया जैसे अगर आज्ञा का पालन न किया तो उस्तानी जी मुर्गा बना देंगी। नाहीद भाभी टेलीफोन सुनने उठ गईं और मैं बराबर के कमरे में शेव करने और हाथ-मुँह धोने के बहाने टल गया। शीरीं ने एक माहिर नर्स की तरह तश्त में गर्म पानी लेकर और तौलिया के टुकड़े उसमें भिगोकर अंजुम के हाथ-पाँव साफ किये। उसके कपड़े बदलवाने और बिस्तर की चादर और तकिया आदि बदलने में लगी रही। यों तो वह बहुत सहज में यह सारे काम कर रही थी पर इतनी चौकसी के बावजूद भी मैं बराबर के कमरे से वह सारी बातें सुन रहा था जो उसके और अंजुम के बीच हो रही थीं। अंजुम की तबियत चूँकि आज काफी अच्छी थी इसीलिए इन हज़रत को दूर की सूझ रही थी। बोले — "जिस बीमार को देख-भाल करने के लिए ऐसा तीमारदार मिल जाए वह अगर अपनी सेहत की दुआ करे तो क्यों।" शीरीं ने कहा—"शुक्रिया आपकी इस प्रशंसा का। मगर क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आप के तकिए के नीचे यह नाविल कहाँ से आ गया।"

अंजुम ने गड़बड़ाकर कहा—"यह तो मैंने यों ही उठा लिया था रात को। आदत पड़ी हुई है ना रात को सोने से पहले कुछ पढ़ने की। इसलिए पन्ने उलटने के बाद इसे तकिए के नीचे रख लिया था।"

शीरीं ने सख्ती के साथ कहा—"फिर झूठ बोला आपने। अब मैं बताऊँ आपको कि आपने रात इसके १४४ पन्ने पढ़े हैं। देखिए मुकरने की कोशिश न कीजियेगा। मैं यह निशानी देख चुकी हूँ १४५ पर।"

अंजुम ने कहा—"किसी तरह नींद ही नहीं आ रही थी फिर क्या करता।"

शीरीं बोली—"और दूसरी चोरी यह पकड़ी गई है कि आपने रात को सिगरेट नोशी भी फरमाई है। बहादुरी के साथ इसे स्वीकार कीजिए।"

अंजुम ने कहा—"सिर्फ दो-तीन घूँट लिए थे। मगर पता कैसे चल गया आपको। किताब में तो निशानी लगी रह गई थी, मगर सिगरेट की चुगली किसने की है ?"

शीरीं ने माचिस की एक तिल्ली दिखाकर कहा—"किताब में निशानी इसी तिल्ली से लगाई गई है। जरा सोचो तो यह असावधानियाँ कितनी हानिकर हैं।"

अंजुम ने कहा—"डाक्टर दिन में तीन सिगरेटों की इजाजत दे चुके हैं।"

शीरीं ने कुढ़कर कहा—"फिर वही डाक्टर-डाक्टर की रट। वह तो आज भी कह रहे थे कि हाफ बॉयल्ड अण्डा भी दिया जा सकता है काली मिर्च, नमक के साथ।"

अंजुम बोले—"डाक्टर के कहने पर भी आपकी बेरहमी ने गवारा न किया कि मुँह का मजा बदलने को अण्डा ही चखा दिया होता।"

शीरीं ने बड़े प्यार से कहा—"क्या आप समझते हैं कि मुझे कुछ खास मजा आता है आपको एक-एक चीज से तरसाने में। आज सुबह जब मेरे नाश्ते में अण्डा आया तो मुझे तुरन्त ख्याल हुआ कि आप इसके लिए तरस रहे हैं। मैंने एक दम उसे अपने सामने से हटा दिया।"

अंजुम बोले—"आज मैं आपके सामने डाक्टर साहब से कहलवा दूँगा।"

शीरीं बोल—"कहलवाने की क्या आवश्यकता है, वह तो पहले ही कह चुके हैं मगर मैं डरती हूँ। आखिर ऐसी भी क्या बेसब्री। अब एक-आध दिन में तबियत और जरा संभल जाएगी तो जो जी चाहे खाइयेगा।"

मैं ठीक-ठाक होकर अंजुम के कमरे में आया हूँ तो शीरीं टेम्परेचर लेने के बाद थरमामीटर देख रही थी और इस समय उसके मुख पर प्रसन्नता का

प्रभाव था। मैंने पूछा—"कितना है इस वक्त बुखार ?"

शीरीं ने कहा—"शुक्र है इस समय बुखार नहीं है। देख लीजिये मैंने कहा कि इनका नारमल भी सत्तानवे से अधिक नहीं हो सकता, लीजिये सत्तानवे ही है। मगर कहीं ऐसा तो नहीं है कि थरमामीटर ठीक से लगा ही न हो। लाइये जरा फिर देख कर सन्तोष कर लूँ।"

यह कह कर शीरीं ने फिर टम्परेचर लिया और जब दूसरी बार भी बुखार सत्तानवे ही निकला तो वह थरमीमटर प्याली में रख कर बिना कुछ कहे-सुने कमरे से बाहर निकल गई। अंजुम समझे कि अब गई हैं वह अण्डा उबालने पर मेरा अनुमान कुछ और हो था और वही ठीक निकला। इसलिए कि नाहीद भाभी दौड़ी-दौड़ी आई और मुझसे पूछा—"हुआ क्या आखिर ? क्या कोई विशेष बात हुई है ?"

"नहीं तो आप को यह ख्याल क्यों हुआ कि कोई विशेष बात हुई ?"

नाहीद भाभी बोली—"अच्छा, अच्छा ! वह शुक्राने की नमाज पढ़ रही होंगी। इनका बुखार उतर गया है ना।"

शीरीं दौड़ी हुई मेरे कमरे में गई। अब जो मैं ने शीशों से झाँक कर देखा तो वह खड़ी थी नमाज की नीयत बाँधे हुए।

नाहीद भाभी ने लौट कर कहा—"फिर तो उसे वाकई नमाज पढ़नी ही चाहिये थी। जितने दिन यह हजरत बीमार रहे इस गरीब की जान सूली पर रही है, विशेषकर उन दिनों जब बेचारी इनकी तीमारदारी तक न कर सकती थी। सचमुच खुशनसीब है यह कि इनके लिए ऐसी मुहब्बत रखने वाली मौजूद है।"

मैंने खामोश रहने का संकेत करते हुए कहा—"लीजिये वह आ रही हैं इसी तरफ।"

नाहीद भाभी शीरीं को देख कर चुप हो गईं और शीरीं से केवल यह कहा—"अब तो इनका बुखार नारमल हो गया, मुबारक हो।"

शीरीं मारे प्रसन्नता के उनसे लिपट गई।

अंजुम अब बीमारी से छुटकारा पा चुके थे। छुटकारा तो वह खैर पिछले ही हफ्ते पा चुके थे और डाक्टर ने उन्हें तन्दुरुस्ती का सर्टीफिकेट देकर दवा और परहेज दोनों से मुक्त कर दिया था परन्तु उनकी निजी चिकित्सक श्रीमती शीरीं ने इस सर्टिफिकेट को मानने से इनकार करते हुए उन्हें पहले की तरह अब भी बिस्तर से चिपकाए रखा, दवाई भी जबरदस्ती पिलाती रहीं और परहेज भी सब लोगों के विरोध के बावजूद जारी रखा। होते-होते वह भी इस स्वस्थ रोगी के स्वास्थ्य पर विश्वास ले ही आईं और दवाई बन्द करके परहेज का झंझट समाप्त कर ही दिया। अंजुम ने अब चलना-फिरना ही नहीं बल्कि दूसरी कार्रवाइयाँ भी शुरू कर दी थीं। नाहीद भाभी ने उन्हें यह परामर्श दिया था कि शीरीं से तुम्हारा हार्दिक सम्बन्ध तो निश्चित है परन्तु अब समय आगया है कि इसके लिए बाकायदा आन्दोलन किया जाए। यह बात जब अंजुम ने मुझे बताई तो मैंने उनसे पूछा—"जाहिर है कि इस संबंध में आपने शीरीं से भी बात-चीत की होगी।"

बोले—"जी हाँ की थी। उनकी राय यह है कि शुरुआत नाहीद भाभी की ओर से होनी चाहिये और आपका नाम भी वह ले रही थीं।"

मैंने पूछा—"आपकी क्या राय है यदि मैं नाहीद भाभी को भी इस समय बुलवालूँ। इसलिए कि मैं नेक काम में शकुन-अपशकुन का निरुत्तर नहीं हूँ।"

अंजुम ने कहा—"चाहता मैं भी यही था, परन्तु कहने में झिझक इस-लिए रहा था कि आप मुझे बदहवास और जल्दबाज न समझ लें।"

मैंने कहा—जी नहीं–जी नहीं यह तो मैं जानता हूं कि आप पहले व्यक्ति हैं जो प्रेम के विशेष मामले में भी गैर जरूरी तौर पर लिए-दिए रहते हैं। खैर मैं नाहीद भाभी को बुलवाता हूँ, खुदा करे रियाज मौजूद न हो।"

अंजुम ने कहा—"जी नहीं वह नहीं हैं और शायद काफी देर के लिए किसी पार्टी में गए हैं। मैदान बिलकुल साफ है।"

हम लोग यह बातें कर ही रहे थे कि दरवाजे के शीशे को टिकटिकाकर नाहीद भाभी ने पूछा—"मैं अन्दर आ सकती हूँ।"

मैंने उठते हुए कहा—"आइये, आइये, आज यह तय हो गया है कि आपकी उम्र खुदा के फजल से बहुत लम्बी है। अभी मैं आपको बुलाने के लिए आ ही रहा था कि आप तशरीफ ले आईं उसे कहते हैं······"

नाहीद भाभी ने वाक्य पूरा किया—"हार्दिक इच्छा, जादू, आकर्षण—इसी प्रकार की कोई बात कहने वाले थे ना आप ? खैर मैं भी आप ही की खोज में आई थी ताकि आपसे प्रोग्राम तय करूँ कि हम दोनों शीरीं के यहाँ अंजुम के विवाह के सम्बन्ध में कब जाएँ।"

मैं ने कहा—"कमाल है भई, यही बात तो पूछने के लिए मैंने आपको बुलाना चाहा था।"

नाहीद भाभी ने कहा—"पहले मेरी पूरी बात तो सुन लीजिये कि मैंने अब यह इरादा बदल दिया है।"

अंजुम ने घबराकर कह—"इरादा बदल दिया है ! यानी आप इस सिल-सिले में बातचीत करना उचित नहीं समझतीं या कोई विशेष अड़चन है।"

नाहीद भाभी ने बजाए अंजुम के मुझे जवाब दिया—"आप तो कहते थे कि यह बहुत लिए-दिए रहते हैं। भावनाओं के भँवर में कभी नहीं बहते और

भयंकर-से-भयंकर स्थिति में भी सन्तोष और शान्ति को हाथ से नहीं जाने देते। देख ली आपने इनकी परेशानी। जरा सी बात में बौखलाकर रह गए। भाई मन के भेद होते ही ऐसे हैं। खैर आप अपने अशान्त मन को समझाइए ऐसी कोई बात निराश होने की नहीं है।"

अंजुम तो खिसियानी हँसीं हँसने लगा। इसलिए कि सचमुच उसके चेहरे का रंग नाहीद भाभी के शब्दों ने उड़ा दिया था, पर मैंने नाँहीद भाभी से पूछा—"शायद कोई और अच्छा सुझाव होगा आप के दिमाग में जो आपने अचानक यह इरादा बदल दिया है।"

नाहीद भाभी बोली—"मेरी राय यह है कि मैं शीरीं की अम्माँ को गाड़ी भेज कर बुलवालूँ और चूँकि वह मुझ पर पूरा विश्वास करती हैं इसलिए बाकायदा बातचीत करने से पहले निजी तौर पर उनसे यह मालूम कर लूँ कि इस सम्बन्ध में उनकी क्या राय है ? मुझे यह सूचना मिली है कि वह स्वयं इस चिन्ता में है कि कहीं से कोई ढंग का रिश्ता आ जाए तो वह शीरीं को मुराद के खतरे से छुटकारा दिला दें। मेरा ख्याल यह है कि वह इस सुझाव का पूरी तरह स्वागत करेंगी और बजाए हमारे वह खुद इस मामले को तय कराने का प्रयत्न करेंगी।"

अंजुम ने कहा—"नाहीद भाभी। माफ कीजियेगा, मैं हाथ जोड़कर आप से इस बात की क्षमा चाहता हूँ कि रियाज भाई की राय से प्रभावित होकर मैं औरतों को विशेषरूप से बेवकूफ समझने लगा था, परन्तु आज अनुमान हुआ कि या तो आप औरत नहीं हैं या औरतों को बेवकूफ कहने वाले गलत कहते हैं।"

मैंने कहा—"अच्छा अब आप उतर आए अपनी पुरानी हरकतों पर ! नाहीद भाभी मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि यह बहुत चालाक किस्म का आदमी है और इसका खुशामद करने का ढंग ही यह है।"

नाहीद भाभी बोलीं—"यह बातें तो होती ही रहेंगी, मुझे यह बताइये कि मैं टेलीफोन करूँ शीरीं की अम्मीं को—"

मैंने कहा—"भला इसमें पूछने की क्या बात है ?"

यह सुनकर वह तीर की तरह टेलिफोन पर लपकीं, अंजुम ने टेलिफोन से उठकर बेचैनी से टहलना शुरू कर दिया, एक के बाद एक सिगरेट फूँकता रहा और आखिर एक बार अपना घूंसा अपनी ही हथेली पर मार कर कहा—"नाहीद भाभी ने बिलकुल ठीक रास्ता इख्तियार किया है। शीरीं की अम्मी के बारे में मेरी राय यह है कि वह मुराद से न केवल भयभीत है बल्कि जिस समय हमारा उनका पड़ोस था, वह मेरे साथ बहुत नम्रता से पेश आया करती थीं, मैं उन्हें खालाजान कहता था। एक बार जब मैं उन्हें अपने घर में बैठा देखकर वापस जाने लगा तो वह हँसकर बोली—"लो और सुनो, कहता है खालाजान और करता है पर्दा मुझ से, आ इधर आ मेरे पास—जब मैं उनके पास गया तो बड़ी मुहब्बत से मेरे सिर पर हाथ फेरा और दुआएं दीं।"

मैंने कहा—"अब इन दुआओं के पूरा होने का समय आ गया है।"

इसी वक्त नाहीद भाभी ने कमरे में दाखिल होकर कहा—"शहाब भाई, महरबानी करके आप गाड़ी भेजिए, शीरीं के यहाँ। वह मेरा टेलीफोन सुनते ही आने को तैयार हो गई हैं। अगर ड्राइवर न हो तो आप ही ले जाइये गाड़ी।"

मैंने कहा—"जी नहीं ड्राइवर मौजूद है, मैं अभी भेजे देता हूँ उसे।"

मैंने उसी वक्त गाड़ी रवाना कर दी और खुद उठ खड़ा हुआ तैयार होने के लिये। नाहीद भाभी ने जाते-जाते कहा—"बात करनी है अंजुम भाई की और सिंगार करने खड़े हो गए आप। खैर तैयार होकर आप दोनों उसी तरफ आ जाइये। मैं जरा खानसामा से कह दूं कि खाने में एक-आध चीज और बढ़ा दे। मैंने शीरीं की अम्मी से कह दिया है कि खाना यहीं खाएँ!"

नाहीद भाभी के जाने के बाद मैं तो तैयार होता रहा और अंजुम साहब टहल-टहल कर कोई अंग्रेजी धुन बजाते रहे। जब मैं हाथ मुँह धोकर और कपड़े बदल कर आया हूँ तो वह सीटी पर शायद "राजा की आयेगी

बरात" वाली धुन बजा रहे थे। मैंने समय की इस रागनी पर उन्हें धन्यवाद देकर शर्मिन्दा कर दिया। फिर हम दोनों नाहीद भाभी के आदेशानुसार कमरे से निकलकर कोठी के ड्राइंग रूम की ओर रवाना हो गए। अभी दालान ही में पहुँचे थे कि कार की सनसनाहट सुनकर ठिठक गए। कार देखते ही देखते करीब आ गई। मैंने बढ़ कर कार का दरवाजा खोला। शीरीं की अम्मी सादे लेकिन रोबदार लिबास में "जीते रहो—सलामत रहो—" कहती हुई कार से बाहर आईं। वह मेरे सिर पर हाथ फेर ही रही थी कि अंजुम पर नजर पड़ते ही हैरान सी होकर रह गईं।

"कौन अंजुम ! यह तू कहाँ ? इधर तो आ मैं तुझे देखूँ तो सही ?" और यह कहकर खुद अंजुम की ओर बढ़कर बड़ी मुहब्बत के साथ उसके सिर पर हाथ फेरा, उसकी पीठ थपथपाई और फिर एक बार गौर से देख कर कहा—"तनिक सा भी तो परिवर्तन नहीं आया इस लड़के में—ऐ मैंने कहा, क्या मूँछें भी नहीं निकलीं अभी तलक—जरूर निकली होंगी, मुंडवा डालता होगा, मगर बोटी न चढ़ी बदन पर, अम्माँ तो अच्छी हैं तेरी। और बहन ! अब तो वह भी अल्लाह रखे शादी के लायक हो गई होगी। मेरी शीरीं की उम्र की है वह भी। मगर हैरत है बेटा यहां आए हुए हो और खालाजान के घर का रुख तक नहीं किया। अच्छी बात है लिखती हूँ तेरी माँ को शिकायत।"

नाहीद भाभी जो स्वागत के लिए आ चुकी थीं और प्रतीक्षा कर रही थीं कि यह श्रीमतीजी हटें अंजुम की ओर से तो खुद भी सलाम-दुआ करें। आखिर उनसे न रहा गया और मुस्कराकर बोलीं—"खालाजान पुराना भानजा मिल गया, मुबारक हो, पर मेरा भी तो सलाम ले लीजिये।"

खालाजान ने कहा—"जीती रहो बेटी, दूधों नहाओ, पूतों फलो पर जरा देखो तो सही इन साहबजादे की हरकत, अगर मैं यहाँ न आई होती तो यह मिलते भी नहीं।"

अंजुम ने कहा—"यह कैसे हो सकता था खालाजान।"

खालाजान बोलीं—"चल हट, हो सकता था क्या मतलब, हुआ ही है। वह लूंगी तेरी खबर कि·· ··"

बड़ी कठिनाई से इन बातों के बीच नाहीद भाभी खालाजान को गोल कमरे में ला सकीं, जहाँ पहुँचते ही नाहीद ने अंजुम से कहा—"भई माफ कीजियेगा। मुझे आपकी कुछ शिकायतें खालाजान से करनी हैं जो मैं आपके सामने नहीं कर सकती। आप कहीं जरा बाहर खेल-कूद आएँ, लेकिन गायब न हो जाइयेगा।"

अंजुम यह सुनते ही नौ-दो-ग्यारह हो गया। नाहीद भाभी ने खालाजान से कहा—"खालाजान मैंने आपको इसलिए बुलाया था कि आप अंजुम मियाँ को देख लें। मगर आपका तो देखा-भाला निकला। मुझे क्या खबर थी कि आप पहले ही से जानती हैं।"

खालाजान ने कहा—"लो और सुनो, दीवार बीच तो इनका घर था। बचपन से इसे देख रही हूँ। मगर अल्लाह औलाद दे तो ऐसी ही दे, अल्ला मियाँ की गाय हैं यह दोनों बहन-भाई।"

नाहीद भाभी बोली—"तो फिर क्या ख्याल है आपका शीरीं के लिए।"

खालाजान ने कहा—"वही कहावत है कि अंधा क्या चाहे, दो आँखें। खुदा ने मेरी दुआ तो सुन ली है कि उस नामुराद के चुंगल से मेरी बच्ची बच गई। अब अगर ऐसा लड़का मिल जाए तो फिर कहना ही क्या। इसकी माँ से कहो रिश्ता भेजे। शीरीं के अब्बा को तैयार करना मेरा काम है। वह तो खुद ही चाहते हैं कि कहीं से कोई ढंग का रिश्ता आ जाए तो घड़ी की चौथाई में शीरीं की चिन्ता से मुक्त हो जाएँ। यह भी धड़का है कि कहीं फिर वह नामुराद माँ-बाप के कहने में आकर इधर का रुख न करे। अरे हाँ, सुना है कि तुम्हारी सहेली शगुफ्ता के यहाँ उसकी बातचीत चल रही है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"बात ही नहीं चल रही बल्कि तय भी हो चुका है।"

खालाजान ने माथे पर हाथ मार कर कहा—"अल्लाह रहम करे उस बच्ची पर और जैसे मेरी बच्ची के दिन फेरे हैं ऐसे ही उसके भी फेरे।"

नाहीद भाभी ने कहा—"छोड़िये इस किस्से को। मैं तो यह कह रही थी कि मैं आ रही हूँ कल शीरीं को अंजुम भाई के लिए माँगने—"

खालाजान ने कहा—"जम-जम आओ। मगर इनका कोई रिश्तेदार आता तो और अच्छा होता।"

नाहीद भाभी ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा—"यह जो बैठे हैं शहाब भाई इनके सगे खालाजाद भाई और होने वाले बहनोई।"

खालाजान ने कहा—"अच्छा, अच्छा, लो भला मुझे क्या पता था, जीते रहें, सलामत रहें, शकरखोरे को अल्लाह शकर ही देता है। अंजुम की माँ को दामाद भी कैसा हीरों में तोलने लायक मिला है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"तो यह और मैं दोनों कल आ रहे हैं और आप से हाँ कराके वापस आएँगे।"

खालाजान बोली—"ऐ तो मैं कब इनकार कर रही हूँ।"

इसी समय खानसामा ने खाना चुन देने की सूचना दी और हम सब खाने की मेज पर आ गए। जहाँ अंजुम को खालाजान इस वक्त बड़ी मुहब्बत भरी कनखियों से देख रही थीं।

खुदा जाने सुबह होने में कितनी देर बाकी थी कि अंजुम ने मुझे आवाज देकर जगा दिया और मैं इस समय जगाए जाने पर कुछ चौंका भी कि आखिर बात क्या है, क्या कोई चोर-वोर आ गया है या क्या किस्सा है कि इस वक्त जगाया जा रहा है। यों तो बड़े लोगों का कौल यही है कि सुबह तड़के उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनवान तथा बुद्धिमान बनाता है, परन्तु इसका क्या इलाज कि मैं स्वस्थ लोगों की भाँति पूरी नींद सोता हूँ। नींद से बड़ी दौलत मेरे लिए कोई और नहीं है और ऐसी बुद्धि से मुझे कोई दिलचस्पी नहीं कि यदि नींद न आए रात-रात भर और सुबह होते ही आँखें मिचने लगें तो इस नींद को ठुकरा कर उठ बैठे। मैं ठहरा दफ्तर जाने की मजबूरी से सात-साढ़े सात बजे बिस्तर छोड़ने वाला और एतवार के दिन दस-साढ़े दस बजे तक ऐंडलाने वाला। मुझे जो इस वक्त मुँह अँधेरे उठाया गया तो मैंने स्वभाविक तौर पर घबरा कर पूछा—"खैरियत तो है। बात क्या है आखिर ?"

अंजुम साहब अत्यन्त सन्तोष से बोले—"जरा उठकर तो देखिए सुबह कैसी सुन्दर है।"

मैंने कहा—"जरा सोकर तो देखिए नींद कैसी सुन्दर है। कमाल कर दिया आपने कि बस सुवह दिखाने के लिए मुझे उठाकर बिठा दिया, बजा क्या है इस समय ?"

कहने लगे—"साढ़े पाँच बज चुके हैं।"

मैंने बड़ी घबराहट से कहा—"साढ़े पाँच ? क्या आप यह चाहते हैं कि मै इस आधी रात ही को सुबह मान लूँ। खुदा तुम्हें समझे, अभी तो अखबार वाला भी न आया होगा।"

कहने लगे—"मैं इसीलिए तो बैठा हूँ कि वह आए तो मैं उससे कहूं कि इतनी देर में क्यों आता है। खैर आप उठिये तो सही वह आता होगा।"

अब मेरे होश-हवास ठीक हो चुके थे और मैं यह सोचने के काबिल हो गया था कि आखिर आज इन हजरत को यह सूझी क्या है कि इतनी जल्दी खुद भी जाग उठे और मुझे भी न सोने दिया। मैं अभी इस बारे में सोच ही रहा था कि अंजुम ने कहा—"मेरा ख्याल है आज जरा मार्निगवाक हो जाए। निकलते सूरज का दृश्य देखे, प्रकृति के सौन्दर्य का स्वागत करें और......"

मैंने बात काटकर कहा—"एक बात तो है अंजुम कि नूर के लड़के तुम डायलॉग अच्छे बोल लेते हो। मुमकिन है तुम्हारे शरीर में उस मिट्टी का कुछ तत्व शामिल हो गया हो जिससे वह पंछी बनाए जाते हैं जो सुबह होते ही चहचहाया करते हैं। पर आज इतनी जल्दी उठने और ऐसी साहित्यिक बातें करने की वजह मुझ से पूछो तो मैं बता सकता हूँ। मुझे विश्वास है कि आज रात भर तुम सोए नहीं हो। इसलिए कि तुम्हें उस प्रभात की प्रतीक्षा थी जब मुझे और नाहीद भाभी को तुम्हारा रिश्ता लेकर शीरी के घर जाना है। मगर खुदा के बन्दे ऐसी ही जल्दी थी तो रात ही को हम दोनों को वहाँ भेज दिया होता। यह तो न होता कि तुम खुद भी रात भर व्याकुल रहते और दूसरों को भी न सोने देते।"

अंजुम ने कुछ झेंपकर लेकिन ढिठाई के साथ कहा—"लाहौलविल्ला-कुव्वत ! आप जैसे यह समझ रहे हैं कि मैंने आपको इसलिए उठाया है। तो क्या आपकी राय में मैं पागल हूँ जो इस काम के लिए आपको इस वक्त उठा देता।"

मैंने कहा—"पागलपन की बात नहीं है। दिल की लगी इसी तरह दिमाग में खुश्की पैदा कर देती है। मैं तुम्हारी भावनाओं का आदर करता हूँ। कहो तो नाहीद भाभी को भी जगा कर ले जाऊँ इसी वक्त शीरी के

घर ताकि वहा जाकर सोने वालो को जगाए और कहे कि हमारे यहा की रीति यह है कि तारो की छाँव मे विवाह की बात-चीत की जाती है ताकि मामले पर ठण्डे दिल से विचार किया जा सके। धूप निकल आने पर हम लोग रिश्ता नही किया करते। कहो क्या ख्याल है।"

अंजुम बोले—"अच्छा साहब, आप सो जाइये मै शर्मिन्दा हूँ कि इस वक्त आपको क्यो जगाया। मै जा रहा हूँ जरा चहल-कदमी करने।"

मैने कहा—"चहल-कदमी करते हुए खुद ही न पहुँच जाइयेगा अपनी ख्वालाजान के घर रिश्ते की बात करने।"

मेरी बात का जवाब दिए बिना अंजुम बाहर चला गया और मैने उसे आवाज देकर बडी मुश्किल से वापस बुलाया तो उसने लौटकर कहा—"अचानक मेरी आँख खुल गई थी तो मैने सोचा आपको भी जगा लूँ, साथ साथ सुबह के सुहावने समय और प्रकृति के शीतल सौन्दर्य का आनन्द लेगे। आप मेरे पीछे ही पड गए हाथ धोकर।"

मैने कहा—"मगर यह कहा का अखलाक है कि जब मेरी नीद हराम कर दी और मुझे जगा दिया तो आप चले हवाखोरी बल्कि तनहाखोरी के लिए। तशरीफ रखिये यह बडे शकुन का समय है। मुझे आप इस समय यह समझा दीजिये कि शीरी की अम्माजान को तो मै देख चुका हूँ बडी सरल और सीधी-साधी स्त्री है परन्तु शीरी के अब्बाजान जिनसे मेरी मुठभेड होगी वह किस ढग के आदमी है।"

अंजुम ने हसते हुए कहा—"अच्छा किया, आपने यह बात मुझ से पूछ ली। है तो वह भी बडे नम्र स्वभाव के परन्तु बातचीत से एक अनजान आदमी को यह अनुभव होता है कि जैसे बडे मिया लडाई के बहाने ढूंढ रहे है। हर बात काटेगे और भय होगा कि अभी-अभी खुद भी [illegible] उनके इन हमलो का जो भी मुकाबला कर गया और [illegible] के साथ डटा रहा तो फिर महरबान भी ऐसे [illegible] मुश्किल हो जाता है। सच बात यह है कि बीवी से [illegible] और आहर

यह करते हैं जैसे बीवी उनके जूते तले है।"

बातें हो ही रही थीं कि अखबार वाला अखबार ले आया। अंजुम साहब तो उसमें उलझ गए और मैंने अखबार पढ़ना शुरू कर दिया। मुझे पता नहीं कि वह कब इन हजरत से पीछा छुड़ाकर भागा और उसके जाने के बाद अंजुम साहब ने क्या किया। मुझे तो अखबार उस वक्त आँखों से हटाना पड़ा जब खानसामा बिस्तर पर चाय लेकर आ गया। मैंने चाय पी और फिर दूसरी आवश्यकताओं से छुटकारा पाकर दफ्तर जाने के लिए नाश्ते की मेज पर आ गया। यहाँ रियाज की मौजूदगी में तो कोई बात हो ही न सकती थी इसलिए नाश्ते से निपटकर जब मैं अपने कमरे में आया तो नाहीद भाभी भी मेरे पीछे-पीछे यहीं चली आईं। कहने लगीं—"तो अब आप बारह बजे वापस आ रहे हैं दफ्तर से, शीरीं के यहाँ चलने के लिए।"

मैंने कहा—"मेरी राय यह है कि मैं ऊपर ही ऊपर पहुँच जाऊँ और आप इधर से चलें।"

नाहीद भाभी बोलीं—"चलिये यों ही सही, पर बारह बजे चल कर सवा बारह बजे मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी।"

मैंने जाते-जाते पलट कर कहा—"लगभग इसी वक्त मैं भी पहुँच जाऊँगा।

जिस वक्त मैं शीरीं के यहाँ पहुँचा हूँ रियाज की गाड़ी मुझे सामने खड़ी हुई नजर आई? जिसका मतलब यह था कि नाहीद भाभी मुझ से पहले पहुँच चुकी हैं। मैं गाड़ी से उतरकर अभी सोच ही रहा था कि मैं नाहीद भाभी को अपने आने की सूचना कैसे दूँ कि एक कमरे से चिक उठाकर एक शख्स ने झाँका और बड़े थानेदाराना अन्दाज से कहा—"अगर आप का शुभ नाम शहाब है तो अन्दर तशरीफ लाइए और अगर आप कोई और साहब हैं तो अपना नाम बताइए और कहिये कि क्या काम है। इसलिए कि मैं इस समय शहाब नाम के एक व्यक्ति का प्रतीक्षक हूँ।"

मैंने आदाब अर्ज करते हुए कहा—"मेरा ही नाम शहाब है।"

बोले– "तो बस तशरीफ लाइये ।"

मैंने फिर एक बार आदाब अर्ज किया और कमरे में दाखिल हो गया। बड़े मियाँ बोले—"आप जहाँ बैठना पसन्द करें तशरीफ रखें। मुझे अभी अंदर से सूचना दी गई है कि शहाब नाम के एक साहब तशरीफ ला रहे हैं जिनका मुझे स्वागत करना चाहिए। इससे ज्यादा मुझे और कुछ नहीं मालूम। स्वागत मैं कर ही चुका। कहिये मैं आपकी और क्या सेवा कर सकता हूँ।"

मैंने कहा—"अच्छा था कि आप खालाजान को खबर करवा देते कि मैं आ चुका हूँ।"

बोले—"आपकी खालाजान ? आपका मतलब है कि आपकी कोई खाला जान हैं जो अन्दर तशरीफ रखती हैं।"

मैंने कहा—"मेरा मतलब इस घर की मालकिन से है।"

बड़े मियाँ ने कहा—"यानी जिनका मैं किरायेदार हूँ वह आपकी खाला हैं। बड़ी प्रसन्नता हुई आप से मिलकर और आज मैं पूरी तरह इस घर के सम्बन्ध में सारी शिकायतें आप से अर्ज करूँगा।"

मैं तो तंग आ चुका था कि इन महाशय को आखिर मैं कैसे समझाऊँ कि मैं कौन हूँ और क्या चाहता हूँ। वह तो कहिये कि खालाजान और नाहीद भाभी खुद ही कमरे में दाखिल हो गईं और नाहीद भाभी के सलाम के बाद खालाजान ने बड़े मियाँ से उनका परिचय कराया—"आप इसे नहीं जानते यह नाहीद है शीरीं की सहेली—"

बड़े मियाँ बोले—"जानता क्यों नहीं हूँ रियाज मंजिल वाली नाहीद। टेलीफोन पर कई बार बातचीत हो चुकी है।"

खालाजान ने कहा—"और यह हैं शहाब मियाँ। वह जो हमारे पड़ोस में राजवी साहब की बेगम रहती थीं ना···"

बड़े मियाँ बीच ही में बोल पड़े—"वह जिनका होनहार बच्चा था—अंजुम नाम का शायद उसका—"

खालाजान ने कहा—"हाँ, हाँ, उसी अंजुम के होने वाले बहनोई हैं यह।"

बड़े मियाँ ने आगे बढ़कर मुझे गले से लगाते हुए कहा—"अरे भई फिर तो यह अपने ही बच्चे हुए ना…"

खालाजान बोलीं—"यह दोनों इस वक्त अंजुम की बात लेकर आए हैं शीरीं के लिए।"

बड़े मियाँ ने इधर-उधर देखकर कहा—"गजब करती हो तुम भी, अगर कोई सुन ले तो आफत आ जाएगी। यह इतनी जोर से कहने की बात थी भला।"

खालाजान बोलीं—"बिला वजह सहमें डराते हो। हद हो गई डरने की भी। अब मैं किसी से डरने वाली नहीं, कहाँ तक आखिर डरा जाएगा। मैं तो यह कह रही थी कि…"

बड़े मियाँ बोले—"जो कुछ तुम कहना चाहती हो वह मैं समझ गया। अंजुम की सिफारिश करोगी, जिसकी कोई आवश्यकता नहीं। वह अपना ही बच्चा है और मुझे—मेरा मतलब है कि तुम्हें अगर पसन्द है तो मुझे भी नापसन्द नहीं।"

खालाजान ने कहा—"तो अब बात पक्की है ना। यह न हो कि भाई साहब फिर जोर दें और छोटे भैया मोम बनाकर फिर मोड़ लिये जाएँ।"

बड़े मियाँ बोले—"नहीं साहब तौबा कीजिए, मगर अच्छा यही है कि इसी वक्त ढोल न पीटा जाए।"

इसी क्षण बाहर से किसी को आता देखकर नाहीद भाभी ने संकेत किया। देखा तो शीरीं के बड़े अब्बाजान थे। अतः यह बात यहीं तक पहुँचकर समाप्त हो गई।

वाह, वाह ! क्या जलवा दिखाया है सुबह ही सुबह। अब खुदा ही खैर करे! दिन भर इस किस्म की सूरत देखकर जो दिन शुरू हो रहा है उस में जो कुछ भी हो जाए कम है। जी तो चाहता कि इन हजरत के गोली मार दूँ। वह कुछ इस तरह दाँत निकाले सामने खड़े थे कि उन से पूछना ही पड़ा—"अरे भई मुराद साहब ! अभी आप जिंदा हैं। हम लोग तो आपको दसवाँ-चालीसवाँ वगैरा सब ही कुछ कर चुके थे। खैर यह शिकायत तो होती ही रहेगी। मगर आज आप इस वक्त कहाँ ?"

अंजुम ने लिहाफ ही के अन्दर से पूछा—"कौन है ?"

मैंने कहा—"मुरादाबाद में मुर्दा जिंदा हो गया है, मुराद साहब हैं ?"

अंजुम ने मुँह छुपाए-छुपाए कहा—"किस तरफ है यह बता दीजिये, ऐसा न हो कि आँख खोलते ही उन पर नजर पड़ जाए।"

मुराद ने निःसंकोच ढंग से अंजुम का लिहाफ घसीटते हुए कहा—"मैं इधर हूँ जियारत कर लीजिएगा।"

अंजुम ने व्यंग्य करते हुए कहा—"न जाने किसका मुँह देखकर सोए थे कि आपका मुँह देखकर उठना पड़ रहा है।"

मुराद ने कहा—"शर्म नहीं आती आप लोगों को, इस वक्त पड़े ऐंड़ रहे हैं। खबर भी है पौने सात बज चुके हैं।"

मैंने हैरत से कहा—"पौने सात ! फिर तो वाकई तुम पर खुदा की मार आधी रात को उठाकर बिठा दिया। आखिर इस समय नाजिल कैसे हो गए आप।"

मुराद ने कहा—"बड़ा जरूरी काम था। एक खास मशवरा लेना है आप से। आदमियों की तरह उठकर बैठो तो बात करूँ।"

अंजुम ने कहा—"एक बात है शहाब भाई। खुदा बुरी नजर से बचाए। आज बातचीत में तहजीब की गिरावट तो जरूर शामिल है। मगर आत्म-विश्वास की परछाई भी नजर आती है।"

मैंने उठते हुए कहा—"सचमुच मैं भी इसी बात पर विचार कर रहा था कि हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊँ कर रही है। अच्छा भाई अब तुम भी उठकर बैठ जाओ।"

मुराद ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"बात यह है कि आज निकाह है।"

"अंजुम छलाँग लगा कर खड़ा हो गया—"निकाह ! किसका निकाह ?"

मुराद ने कहा—"शगुफ्ता का।"

मैंने कहा—"वह तो है। मगर है किस मरदूद के साथ।"

मुराद ने कहा—"मेरे ही साथ है और किसके साथ होता।"

अब मैंने भी निःसंकोच स्वर में कहा—"अजीब पागल हैं आप भी। कहने लगे, शगुफ्ता का निकाह है, यह क्यों नहीं कहते कि आपका निकाह है उस गरीब के साथ। मुझे तो कसम तुम्हारी गुस्सा आ गया था कि अल्लाह जाने तुम्हारे अतिरिक्त और किससे हो रहा है उसका निकाह।"

अंजुम बोले—"वह तो खैर, खुदा तुम्हें मुबारक करे। मगर इस सम्बन्ध में मशवरा क्या लेना है। यही कि यह निकाह तुम्हें करना चाहिए या नहीं"

मुराद ने कहा—"नहीं भाई, यह बात नहीं है। मगर यह निकाह बहुत कान्फिडेनशल ढंग से हो रहा है। कहीं मेरे माँ-बाप और रिश्तेदार कोई झगड़ा न खड़ा कर दें। शगुफ्ता के अब्बाजान इसके लिए तैयार न थे। वह धूम-धड़क्का चाहते थे, मगर मैंने उनकी खुशामद की कि अगर आपने जरा भी

चर्चा की तो सारा मामला गड़बड़ हो जाएगा। किसी को भी न बुलाइये। केवल मेरे कुछ यार-दोस्त आ जाएँगे और आप भी अपने सम्बन्धियों को बुला कर दो बोल पढ़वा दीजिएगा। बाद में देखा जाएगा।

मैंने कहा—"देखा क्या जाएगा ? यही कि बाद में कुछ गड़बड़ हुई तो आप छोड़ भागेंगे।"

मुराद ने चिढ़कर कहा—"मेरा मतलब यह है कि बाद में गड़बड़ का खतरा ही न पैदा हो। बाद में अरमान पूरे कर लीजिएगा।"

अंजुम ने कहा—"तो जैसे आज सिर्फ निकाह है, रुखसती नहीं है।"

मुराद बोले—"नहीं रुखसती भी आज ही हो जाएगी और रुखसती भी क्या है, कोठी के एक कमरे से दुल्हन दूसरे कमरे में पहुँचा दी जाएगी। असल रुखसती तो उस समय होगी जब मेरे माँ-बाप इस किस्से को सुनकर बाकायदा बहू को ले जाने आएँगे।

"मुझे इस में शंका है। सम्भव है कि वह बहू को आकर ले जाएँ, परन्तु साहबजादे को तो अब जीवन-भर के लिए छोड़े बिना नहीं रहेंगे।"

अंजुम ने कहा—"क्यों डरा रहे हो बेचारे को। अच्छा तो मुराद साहब आपकी स्कीम क्या है ?"

मुराद बोले—"मैं चाहता था कि आप कानोंकान इसकी खबर किसी को न होने दें और निकाह के समय आप, अंजुम भाई, रियाज और नाहीद भाभी वहाँ पहुँच जाएँ।"

मैंने कहा—"और शीरीं को भी यहीं चुपके से बुला लिया जाए तो···?"

मुराद बोले—"ना, ना, यह गजब न करना। तुम समझते नहीं हो शहाब भाई। ऐसा जान पड़ता है कि तुम यही सोच रहे हो कि शीरीं इस बात से प्रसन्न है कि शगुफ्ता ने उसकी जान बचा दी, मगर मुझे विश्वास है कि जब वह मुझे दुल्हा बने और शगुफ्ता को दुल्हन बने देखेगी तो मुश्किल से ही सहन कर सकेगी और जिन भेदों को वह छुपाए हुए है यदि वह खुल गए तो लेने के देने पड़ जाएँगे।"

जी तो चाहता कि ऐसा जोरदार ठट्ठा मारूँ कि वह हजरत भी एक बार उछल पड़ें, परन्तु इससे पहले कि मैं कुछ कहता अंजुम बोले—शहाब भाई, बात यह ठीक कह रहे हैं। आखिर वह बेचारी अपने साथ हुए इस अन्याय को कैसे सहन करेगी, सम्भव है कि गश-वश आ जाए।"

मुराद ने कहा—"यही मुझे डर है।"

अब मुझ से निग्रह न हो सका और मैंने एक हाथ उसकी पीठ पर रसीद करते हुए कहा—"जवाब नहीं है बखुदा इस अनुमान का भी। ठहर जाओ ताकि मैं नाहीद भाभी और रियाज को भी बुला लूँ, ताकि सब मिलकर प्रोग्राम तय कर लें।"

मुराद ने कहा—"जो जी में आए करो, मगर खुदा के लिए बिल्कुल चुपचाप। अगर मेरे यहाँ किसी को भी कानों-कान खबर हो गई तो किये-धरे पर पानी फिर कर रह जाएगा।"

मैंने जाते-जाते कहा—"दम न निकल जाए तुम्हारा मैं जानता हूँ सब कुछ।"

यह कहकर जब मैं रियाज के कमरे की ओर आया हूँ तो वह हजरत चबूतरे पर टहल-टहल कर दाँतों पर बुरुश कर रहे थे। मैंने जाते ही उन्हें आज का यह ताजा समाचार सुनाया। वह दौड़े नाहीद भाभी को पुकारते हुए इस प्रकार जैसे खुदा न करे आग लग गई हो। और वह भी इस बदहवासी के साथ मुँह झाड़ सिर फाड़ भागी हुई आई जैसे सचमुच कोई दुर्घटना हो गई हो। रियाज ने बड़ी बेसब्री के साथ यह खबर उन्हें भी सुनाई और सब-के-सब वहाँ से आकर मेरे कमरे में जमा हो गए। कुछ मुराद को छेड़ा कुछ नाहीद भाभी ने नखरे किए कि मैं स्वयं क्यों जाऊँ जब शगुफ्ता ने मुझे बुलाया नहीं। अन्तत: प्रोग्राम यह तय पाया कि शीरीं का शरीक होना बेहद जरूरी है और चूँकि शादी के बाद इस खबर का वहाँ पहुँचना भी जरूरी है इसलिए बेहतर यही है कि शीरीं के द्वारा यह खबर पहुँचे। मुराद इस ख्याल से भी कुछ चिंतित हुए मगर रियाज ने कुछ उन्हें समझा-बुझाकर सन्तुष्ट किया कि शादी के बाद तो जितनी जल्दी सम्भव हो यह खबर वहाँ पहुँच जानी ही चाहिए ताकि जो

कुछ होना है हो जाए और फिर जीवन सन्तोष के साथ बसर हो सके। खैर मुराद को बिदा करके हम इस आश्चर्यजनक विवाह में शिरकत की तैयारियाँ करने लगे। नाहीद भाभी ने शीरीं को भी बुलवा लिया। वैसे अब उसके यहाँ आने में इसलिए लोहे लग गए थे कि अब अंजुम से उसका रिश्ता तय हो चुका था और उसका यहाँ आना उचित न समझा जाता था। परन्तु नाहीद भाभी ने न जाने क्या पट्टी पढ़ाई कि उन्होंने आखिर इजाजत दे ही दी। शीरीं को भी यहाँ आकर मालूम हुआ कि आज क्या होने वाला है। उसने भी शादी में उपहार देने के लिए कुछ रुपये नाहीद भाभी ही से उधार लिये और हम सब के साथ जाकर खरीदारी की। इसके अतिरिक्त शादी में शिरकत भी उसने नाहीद भाभी की ही साड़ी बाँध कर की, इसलिए कि वह तो जैसी बैठी थी उसी तरह आ गई थी। उसे क्या पता था कि वहीं शादी में शिरकत करनी पड़ेगी। बहरहाल हम सब निश्चित समय पर जब शगुफ्ता के यहाँ पहुँचे हैं तो वहाँ न विवाह का वातावरण था और न कोई चहल-पहल, हाँ शगुफ्ता के अब्बाजान बाहर टहल रहे थे। हम लोगों को देखकर बोले।

"बस आप ही लोगों की प्रतीक्षा थी। नाहीद बीवी तुम्हें तो कई बार शगुफ्ता पूछ चुकी है तुम चलो अन्दर और आप लोग आइये इधर। हम लोग बड़े मियाँ के साथ-साथ जब ड्राइंगरूम में पहुँचे हैं तो देखा कि वहाँ सच-मुच दो-चार विशेष व्यक्ति ही उपस्थित थे। मुराद साहब भी साधारण रूप से ही दूल्हा बने थे और इस प्रकार बैठे थे जैसे दूल्हा होने से ज्यादा चोर हों। शगुफ्ता के अब्बा ने एक साहब से कहा— भाई इकामुल्लाह साहब आप बन जाएँ वकील और मियाँ रियाज और शहाब साहब बन जाएँ गवाह।"

एक और बुजुर्गवार ने जो बाद में मालूम हुआ कि काजी साहब थे, इकामुल्लाह और हम दोनों को अपने पास बुलाया और धीरे से कुछ बातें बताकर दुल्हन से पूछने के लिए अन्दर भेज दिया। अन्दर औरतें काफी इकट्ठी थीं। यह भी हो सकता है कि बहुत-सी न हों लेकिन चीख-पुकार बहुत थी जो दो-चार औरतों में भी आम तौर पर हो जाती है। खैर हम सबने काजी जी के

आदेशानुसार दुलहन से जो कुछ कहना था कहा और "हूँ" सुनकर बाहर आ गए। तहाँ काजी जी ने हम सब से बाकायदा पूछाताछ करने के बाद निकाह पढ़ दिया। यों बेचारी शगुफ्ता उस अहमक के पल्ले बाँध दी गई। छुवारे बाँटे गए, चाय पी गई। निकाह की रसीद पर हस्ताक्षर हुए। अब जो मैं मुराद के पास गया तो उसने मेरे कान में पूछा—शीरीं पर तो कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।"

मैंने कहा—"वह तो खैर पड़ना ही चाहिए था, परन्तु अब होश में आ चुकी है।"

मुराद ने कहा—"क्या मतलब ? सच कहो यार।"

मैं ने कहा—"नौशाह हैं आप वरना हैं ताजपोशी के लायक। भई वह तो उस वक्त से अब तक शुक्राने की नमाज पढ़ रही है कि या अल्लाह तूने मुझे इस एक आस्मानी बला से बचा दिया तेरा शुक्रिया।"

मुराद ने 'खैर-खैर" कहकर मुँह फेर लिया और दरवाजे की आड़ से नाहीद भाभी ने कहा—"भई खाक भी लुत्फ़ नहीं आ रहा है। आप लोग बाहर हैं, और अन्दर हम बड़े बोर टाइप लोगों में फँसे हुए हैं। अब इस वक्त चलिये। कल-परसों मैं दूल्हा-दुलहन को अपने घर बुलालूँगी।"

मैं भी उनकी इस राय से सहमत था परन्तु शगुफ्ता के अब्बाजान राजी न हुए और हम सब को खाने के वक्त तक इस वातावरण में घुटना पड़ा।"

हम लोग यह तो पहले ही सुन चुके थे कि इस दुर्घटना की सूचना मुराद के अब्बाजान और अम्मी दोनों को हो चुकी है और वह फिर रहे हैं दोनों उनकी खोज में कि मुराद मिले तो उस नामुराद के कानों के बीच सिर कर दें। मुराद की अम्मी ने बड़े मियाँ के सामने हाथ-पैर जोड़कर बड़ी मुश्किल से वह त्याग-पत्र हासिल किया जो वह इस खबर को सुनने के तुरन्त बाद ही तैयार कर चुके थे और लेकर चुपके से जला डाला। परन्तु इस चर्चा की तस्दीक उस दिन हुई जब नाहीद भाभी ने मुराद और शगुफ्ता को अपने यहाँ बुलाने का प्रोग्राम बनाया। इस काम में शीरीं कुछ पहले ही से नाहीद भाभी का हाथ बटाने आ गई थी और उनके आते ही खुद मैंने बड़ी बेसब्री के साथ उनसे पूछा—"और बातें तो बाद में होंगी पहले यह बताइये कि इस दुर्घटना की इत्तला आपके चचाजान को भी हुई या नहीं और हुई तो यह जान कर उनकी क्या हालत हुई?"

उन्होंने हर बात विस्तार से बताई, बोलीं—"कुछ न पूछिये---बड़ा मजा आया। यह खबर खुद मैंने पहुँचाई। थोड़ी ही देर में यह खबर जंगल की आग की तरह बड़े अब्बा तक पहुँच गई। उन्होंने पहले तो गुस्से में बन्दूक उठाई जिसके कारतूस कभी खरीदे ही नहीं गए। इसके बाद वह चीखे-पीटे। अपनी बीवी को इस अपराध में डाँटा-फटकारा कि उन्होंने ऐसे नालायक बेटे को जन्म ही क्यों दिया। फिर अब्बाजान के गले लगकर रोए, खुद चीख-चीख कर। इसके बाद मेरी तरफ रुख किया, बोले—'बेटी, खुदा का शुक्र अदा कर कि तू इस लफंगे से महफूज रही और अब तू ही मेरी सारी जाय-

दाद और पूँजी की मालिक होगी। इसलिए कि मैं पक्का इरादा कर चुका हूँ कि परिवार के इस कलंक को त्याग कर ही रहूँगा। इस पर अम्माजान ने यह कह दिया, भाई इतनी बड़ी बात न कहो, आपकी जायदाद का जो वारिस है खुदा उसे सलामत रखे। मेरी शीरीं को इसकी जरूरत नहीं। इसकी किस्मत में जो कुछ है वह इसे खुदा देगा। आप आज मुराद मियां से नाराज हैं कल खुश भी हो जाएँगे। यह सुनकर बड़े मियाँ और आपे से बाहर हुए, एक कागज और मंगाया और ऐनक लगाकर लिख ही तो दिया त्याग-पत्र। इतने ही में बड़ी अम्माँ आ गई और वह लगीं आँखों से गंगा-जमुना बहाने कि खुदा के लिए यह गजब न कीजियेगा। मुझ अन्धी की वही एक लाठी है। दोनों मियाँ-बीवी में खूब-खूब नोक-झोंक हुई। मुराद के बिगाड़ की जिम्मेवारी मियाँ ने बीवी और बीवी ने मियां पर रखी। अन्त में निश्चय हुआ कि बड़े अब्बा कुछ खाकर मर रहेंगे और बड़ी अम्माँ चूड़ियाँ तोड़कर सफेद दुपट्टा ओढ़ लेंगी। परन्तु बाद में पता चला कि आत्म-हत्या धर्मशास्त्र की रू से महा पाप है इसलिए समझदारी यही है कि मुराद को दुल्हा समेत ले आया जाए। मुराद कदमों पर गिर के माफी माँगे ताकि बड़े अब्बा दुल्हन को मुंह दिखाई दे सकें। वैसे बड़े अब्बा कहते यही रहे कि अगर वह मरदूद मेरे पैरों पर गिरा तो मैं उसे ठोकर मार दूँगा, और हम सब ने इसे ही उचित समझा कि गोली मारने से हटकर यह बजुर्गवार ठोकर मारने तक तो आए। अब उम्मीद है धीरे-धीरे अपने ढर्रे पर आ जाएँगे। इस सब झगड़े-किस्सों के बाद बड़ी अम्माँ ने कह सुनकर अब्बा मियाँ को शगुफ्ता के घर भेजा ताकि वह मुराद और शगुफ्ता को लाकर बड़े अब्बा के कदमों में डाल दें। अब्बाजान बेचारे क्या करते, छोटा मुँह बड़ी भावज, किस तरह इनकार करते। गए शगुफ्ता के यहाँ और थोड़ी ही देर मे बेंत की तरह काँपते हुए मुराद, घूँघट में अपनी दुलहन लिए आ पहुँचे। अम्माँ ने यह तरकीब निकाली कि पहले वह दुलहन को लेकर ससुर को सलाम करवाने ले गई। बड़ी अम्माँ को तो पहले ही से खबर थी। वह पहले ही से

पानदान पर मोरचा लगाए बैठी थी। अम्माँजान ने जैसे ही दुलहन को ले जाकर पेश किया और शगुफ्ता ने झुककर सास को सलाम किया। वह तो जीती रहो, सलामत रहो, जवानी का सुख देखो, दूधों नहाओ, पूतों फलो··· वगैरा कहती रहीं और बड़े अब्बा मारे घबराहट के बगैर चिलम का हुक्का गुड़गुड़ाने लगे। अब बड़ी अम्माँ ने बहू को गले लगाकर और बलाएँ लेकर अपने पतिदेव के सामने पेश किया—मैंने कहा वह गरीब कब से सलाम कर रही है, इस का आखिर कसूर क्या है, लो अब इसके सिर पर हाथ फेरो और दुआ दो।"

बड़े अब्बा ने अपने तकिये के नीचे कुछ टटोला। मैं तो समझी थी कि रिवाल्वर निकाल रहे हैं मगर निकल आया एक डिब्बा। जिसमें से एक नेकलिस निकला। और बड़े मियाँ ने शगुफ्ता के सिर पर हाथ फेर कर वह नेकलिस उसके गले में डाल दिया—बोले—"खुश रहो बेटा, तुमसे कोई झगड़ा नहीं। मगर वह जो तुम्हारा पति है ना नालायक, नाफरमान' उसके जरूर गोली मार दूँगा।"

इस पर अब्बाजान ने हँसते हुए कहा—"यह सजा भी तो इसी गरीब को मिलेगी। यह असल में अपने पति का ही कसूर माफ कराने आई है।"

बड़े अब्बा बहू को देख-देखकर दिल ही दिल में खुश तो थे। यह सुनते ही हँस दिए और अब्बाजान से कहा—"तुम अपनी शरारतों से बाज न आओगे। मगर उस नामुराद से कहो कि वह मेरे सामने न आए। मैं न जाने क्या कर बैठूँ।"

और इसी समय दरवाजे से निकल कर मुराद उनके कदमों पर आ गिरे—"अब ऐसी गलती कभी न होगी।"

मैं आपे में न रहकर हंसते-हंसते बेहाल हो गया और बार-बार शीरी से यही कहता रहा कि यह सिर्फ उसकी लाग-लपट है वर्ना मुराद ऐसा गया गुजरा भी नहीं कि यह कहता कि अब ऐसी गलती कभी न होगी। मगर वह कसमें खा-खाकर विश्वास दिलाती रही और कहने लगी कि आप मेरी बात

तो मानें। उस अक्ल के दुश्मन ने यही कहा। इस पर बड़े अब्बा को और भी गुस्सा आया, बोले—"अबे ! तेरा इरादा फिर ऐसी गलती करने का है क्या ? इस बेजुबान को इसीलिए लाया है कि फिर ऐसी गलती करे। इस पर अब्बाजान ने कहा—ऐसे भोले-भाले लड़के से आप बिला वजह खफा हैं जिसे अगर सच पूछो तो बात करना भी नहीं आता और फिर अम्माजान ने सिफारिश की। बड़ी अम्माँ ने शगुफ्ता के कान में कुछ कह कर उसे आगे बढ़ा दिया और उसने बड़े अब्बा के पैर पकड़ लिये। बस फिर क्या था वह गड़बड़ा कर उठ खड़े हुए और एक तरफ बहू को और दूसरी तरफ बेटे को अपनी बाँहों में लेकर लगे रोने और इसके बाद ही दावतों का प्रोग्राम बनने लगा।"

नाहीद भाभी ने कहा—"वह तो हम जानते ही थे कि शादी हो जाएगी तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

अंजुम ने कहा—"भई मैं तो यह पूछना चाहता हूं कि वह दावत आखिर है कब ?"

शीरीं बोली—"हो भी गई कल, दावत क्या थी, बारह आदमियों का मेज पर खाना चुना गया। समधी, समधी से और समधन समधन से मिलीं।"

रियाज बोले—"खुदा ने जैसे इनके दिन फेरे, सब के फेरे, पर अब वक्त कम रह गया है। वह दोनों आने ही वाले होंगे और यहां मेज वीरान पड़ी है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"बस अब ठीक हुई जाती है मेज। मगर उन दोनों के आने से पहले यह हालात मालूम होना भी तो जरूरी थे। आओ शीरीं हम दोनों मेज ठीक करें।"

शीरीं और नाहीद भाभी के जाने के बाद रियाज ने कहा—"शादी तो हुई है मुराद की पर आप लोग देख रहे हैं कि शीरीं के चेहरे पर कितनी प्रसन्नता झलक रही है।"

मैंने कहा—"हर रोगी अपनी सेहत से खुश होता है। इनके लिए तो मुराद एक बीमारी की हैसियत रखता था और हर समय इसे धड़का लगा रहता था कि खुदा जाने कब यह हजरत शगुफ्ता का ख्याल छोड़कर इसकी जान के गाहक बन जाएँ।"

अंजुम ने कहा—"यह भी ठीक है मगर शीरीं मुराद से ज्यादा खुद अपने से डरती थी कि यदि उसे सचमुच इस शादी के लिए मजबूर किया गया तो वह आत्महत्या का कौन सा रास्ता इखतियार करेगी। इसलिए कि यह शादी की समस्या नहीं मौत और जीवन की समस्या थी।"

रियाज ने कहा—"मेरा भी यही ख्याल है कि यह अपनी जान पर खेल जाती। हालात ही कुछ इस किस्म के थे।"

रियाज की इस बात पर मेरे दिल में वह सारी गलतफहमियाँ ताजा हो गईं जो रियाज को शीरीं के सम्बन्ध में घेरे हुए थीं। मैंने कनखियों से अंजुम की ओर देखा तो वह भी धीरे से मुस्कराए। मैं न जाने इस समय रियाज से क्या कहता मगर अचानक शगुफ्ता और मुराद के पहुँच जाने से मुझे उनके स्वागत के लिए उठना पड़ा। मुराद साहब इस वक्त नीले सरज के सूट पर सफेद टाई बाँधे हुए बड़े भारी छैला दिखाई दे रहे थे। और शुक्र है कि नीले सूट पर जूता बादामी न था जो अक्सर अंग्रेजों को पहने देख कर भी मैं उन्हें गँवार ही समझने पर मजबूर होता हूँ। शगुफ्ता इस वक्त एक अच्छे गरारे पर कामदानी का दुपट्टा ओढ़े सच-मुच ही नई नवेली दुलहन नजर आ रही थी। मैंने आज पहली बार उसे छेड़ा।"

देखिये श्रीमती जी! अब आप हैं मेरी भाभी। इसलिए मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं आपके इस रंग रूप पर मुराद से यह कह दूँ—

"जाग की चोंच में लंगूर खुदा की कुदरत।"

मुराद ने कहा—"मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। मगर आपने पहली लाइन नहीं पढ़ी।"

मैंने कहा—"जी हाँ इस लिए कि मैं इस हूर की तौहीन नहीं करना चाहता था।"

इस वक्त नाहीद भाभी और शीरीं भी आ पहुँची और सब के सब मफ बाँध कर गोल कमरे में बैठ गए तो नाहीद भाभी ने कहा—"देखो भाई अब तो तुम दोनों की शादी भी हो चुकी है और शादी को मुराद के माँ-बाप ने भी स्वीकार कर लिया है इसलिए अब मैं सिर्फ यह पूछना चाहती हूँ कि तुम दोनों का रोमान आखिर शुरू कब हुआ। किन-किन राहों से गुजरा और इस खामोशी से कामयाब भी हो गया कि किसी को कानोंकान खबर भी न हुई।"

अंजुम बोले—"यह बातें बनाने की नहीं होतीं। मुहब्बत के भेद को भेद ही रहने दीजिये। आप कौन सी रोमान कन्ट्रोलर है कि आपको इसकी इत्तला होनी जरूरी है।"

शीरीं ने कहा—"यह सब कारण है इन दोनों के घुन्नेपन का—'आँखों-आँखों में इशारा हो गए'—और किसी को पता भी न चल सका।"

रियाज ने सब को गड़बड़ा दिया कि कुछ भी हो अब खाना मेज पर आ चुका है, बातें खत्म करो। अतः सब उठ गए।

शगुफ्ता की शादी तक तो मामला ठीक था मगर गजब हुआ मुराद के मां-बाप का इस शादी को स्वीकार कर लेना। अब क्या था शादी के सम्बन्ध में दावतों का ताँता बँधा है तो नाक में दम आ गया। आज इन फूफी के यहां बुलावा है तो कल को वहाँ धावा। नाहीद भाभी तक से मिलना दूभर हो गया। इसलिए कि हर दावत में उनका होना जरूरी था। आज भी वह शगुफ्ता के एक मामू के घर दावत में गई हुई थी। अंजुम साहब को भी आज ही गायब होना था। वह हजरत गए हुए थे अपने किसी दोस्त के साथ किसी फिल्म का मेटनी शो देखने। इस समय केवल रियाज मेरे पास थे और अपनी आदत के अनुसार मेरी प्रशंसा में आसमान जमीन के कुलाबे मिलाए दे रहे थे। कह रहे थे कि यह सिर्फ तुम्हारी ही समझ-बूझ का नतीजा है कि तुमने मुराद से शीरीं को सिर्फ मेरे लिए ही आजाद कर दिया। मुझ से बार-बार कह रहे थे कि इतनी कड़ी परीक्षा न लो और जिस सुविधा से मक्खन से बाल निकालने की भाँति तुमने मुराद को मैंने रास्ते से हटाया है इसी चालाकी से बाकी समस्याएँ भी सुलझा दो। मैं बड़ी देर तक यह बकवास सुनता रहा। आखिर मैंने उन्हें पूरी तरह टटोलने के लिए कहा—"और तो कुछ नहीं रियाज, मुझे इस संबंध में रह-रहकर नाहीद भाभी का ख्याल आता है कि वह क्या कहेगी।"

बोले—"जो कुछ कहना है एक-आध दिन कह लेगी। दूसरे उन्हें मैं शिकायत का मौका ही क्यों दूँगा। वह चाहें तो मुझ से बड़े शरीफाना ढंग से अलहदगी हासिल कर लें।"

"अलहदगी?" मैंने चौंक कर कहा—'क्या अलहदगी से तुम्हारा मतलब तलाक है?"

रियाज बोले—"यह तो मैं एक बात कह रहा हूँ। मैं कब कहता हूँ कि वह तलाक लेलें, हाँ उनके लिए अगर यह बात ऐसी अस्वीकारर्थ हो और वह किसी तरह इसे सहन न कर सकें तो अन्त में एक उपाय यह भी है कि जो मकान चाहें लिखवालें। जितना चाहें रुपया ले लें। घर के सामान में से जो कुछ लेना चाहें ले लें।"

मैंने जब ऊब कर कहा—"और जिस से चाहें शादी कर लें।"

रियाज ने लज्जित होकर हिचकिचाते हुए कहा—"हाँ, यदि वह चाहे तो शादी भी कर सकती है परन्तु इसमें उन्हें थोड़ा सा नुकसान है वह यह कि अगर वह मुझ पर ही निर्भर रहेगी तो मैं जीवन-भर उनका भरण-पोषण करता रहूँगा। इसके अतिरिक्त यदि वह स्थिति आ गई जिसकी ओर तुमने संकेत किया है तो मुझसे कोई सम्बन्ध न रहेगा।"

मैंने कहा—"रियाज यह समझ लो कि यह सब कुछ तुम तात्कालिक लोभ और काम-वासनाओं से अन्धे होकर कह रहे हो वैसे वास्तविकता यह है कि नाहीद भाभी को किसी और का होते देखकर सिवाय अङ्गारों पर लोटने के और कुछ न कर सकोगे। तुम कभी सहन नहीं कर सकोगे कि वह किसी और की हो जाएँ।"

रियाज ने कहा—"शहाब तुम ठीक कह रहे हो पर न जाने शीरीं ने क्या जादू कर दिया है कि उसके बिना जिन्दा रहना नहीं चाहता।"

मैंने कहा—"और अगर शीरीं तुम्हारी होकर जिन्दा न रहना चाहे तो ?"

रियाज ने हैरत से कहा—"क्या मतलब ?"

मैंने कहा—"मतलब यह है कि अगर वह मर जाना पसन्द करे लेकिन तुम से शादी करना पसन्द न करे तो…?"

रियाज ने एक कहकहा लगाकर कहा—"यह तुम इसलिए कह रहे हो कि अभी तक तुम्हें किसी औरत से वास्ता नहीं पड़ा। तुम्हारे जीवन में अभी तक कोई औरत नहीं आई है। तुम औरत की प्रकृति से वाकिफ नहीं हो। खैर तुम इस बारे में बिल्कुल विश्वास रखो कि शीरीं अपने दिल में मेरे लिए एक विशेष स्थान रखती है परन्तु जो जगह उसने मेरे लिए अपने दिल में रखी है उस पर नाहीद दीवार बन कर खड़ी हो गई है। अगर नाहीद बीच में न रहे या उसके और नाहीद के बीच वह मित्रता न रहे जो अब है तो वह असंदेह मेरा हाथ थाम ले।"

मैंने कहा—"अगर यह स्थिति है तो पहले ऐसे उपाय इस्तेमाल करने चाहियें जिन से नाहीद भाभी और शीरीं के बीच नागवारी उत्पन्न हो जाए

और किसी न किसी तरह उनके सम्बन्ध खराब हो जाएँ।"

रियाज ने खुश होकर कहा—"दोस्ती का यह हक तो तुम ही अदा करोगे ना अब जो कुछ तुम्हें करना है वह करो नहीं तो यह विश्वास कर लो कि में गया, तुम्हें मुझ से हाथ धोने पड़ेंगे।"

इसी वक्त टेलिफोन की घण्टी ने बातचीत का सिलसिला तोड़ दिया और वह लाहोल पढ़ते हुए टेलिफोन सुनने चले गए और तुरन्त ही वापस आकर कहा—"तुम्हारा फोन है, कोई सिराज साहब है फोन पर।"

और मैं सिराज के बारे में सोचता हुआ फोन पर पहुँच गया। मैं समझ न सका था कि यह कौन सिराज हैं। फोन सुना तो पता चला कि शीरीं के नौकर का नाम सिराज है और उसने शीरीं की अम्माजान की ओर से फोन किया है और इस सम्भावना से कि कहीं रियाज फोन पर न आ जाएँ उसने आदेशानुसार अपना ही नाम बताया था। जब मैं फोन पर गया तो शीरीं की माता जी के बजाय नाहीद भाभी की आवाज आई। कहने लगीं कि आप को यह फोन इसलिए किया जा रहा है कि आप तुरन्त यहाँ पहुँच जाएँ। कुछ अत्यन्त गम्भीर समस्याओं पर विचार करना है। हम सब शगुफ्ता के मामूँ के यहाँ की दावत से वापस होकर यहाँ आ गए हैं; आप जितनी जल्दी सम्भव हो यहाँ आ जाइये। मैंने यह फोन सुनकर भाँत-भाँत के बहाने रियाज भाई से किए उन्हें बताया कि सिराज साहब मेरे एक अफसर हैं और मुझे एक जरूरी सरकारी काम से अभी उनके पास पहुँचना है। उन्हें इस प्रकार बहला-फुसला कर मैं सीधा पहुँचा शीरीं के यहाँ, जहाँ पूरी कम्पनी बैठी हुई थी और सिर्फ मेरी प्रतीक्षा की जा रही थी। मेरे पहुँचने पर शीरीं के अब्बाजान ने मुराद के पिता, अर्थात् शीरीं के बड़े अब्बा से मेरा परिचय कराया और उन्होंने बड़े प्यार के साथ मुझे अपने पास बिठाकर कहा—"बेटा, तुम्हें यह कष्ट इसलिए दिया गया है कि तुमने अंजुम के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया था वह मुझ तक पहुँच गया है और न केवल पहुँच गया है, बल्कि मैं उससे सहमत भी हूँ। अंजुम मियाँ को बहुत कुछ मैं खुद भी जानता हूँ और परिवार के दूसरे लोग तो उससे भली-भाँति परिचित हैं ही। दूसरे

सबसे बड़ी बात यह है कि नाहीद भी जब इस रिश्ते की ताईद में हैं तो फिर कोई सवाल ही पैदा नहीं होता सिवाए इसके कि तारीख निश्चित करली जाए।"

मैंने कहा—"मुझे आप बजुर्गों की ओर से यही आशा थी। रह गई तारीख तो वह भी आप ही निश्चित करेंगे।"

बड़े मियाँ ने कहा—"नेक काम में देर नहीं करनी चाहिए। मैं केवल इतनी छूट दे सकता हूँ कि अंजुम मियाँ की अम्मी और बहन आदि को··· अरे हां मैंने सुना है कि अंजुममियाँ की बहन तो आपकी होने वाली···"

मैंने मुस्कराकर सिर झुका लिया और बड़े मियाँ ने ठट्ठा मारकर कहा—"तो मेरा मतलैब यह है कि···कि···क्या जिक्र था भला ?"

शीरीं की अम्माजान बोलीं—"आप वही कह रहे थे कि अंजुममियाँ की अम्माजान और बहन वगैरा आ जाएँ तो—"

बड़े मियाँ ने कहा—"तो क्या ? बस हो जाए जो कुछ होना है, और जो कुछ होना भी क्या है, बस शादी होना है। आप उन्हें तार दे दें और नेक काम में देर न करें। घर की औरतें कुछ मंगनी वगैरा बिलकुल वाहियात किस्म की रस्में करना चाहती थीं मैंने इन सब को रोक दिया है। बस मंगनी यही है कि लीजिए यह अंगूठी आप लेते जाइये और अंजुममियाँ को बिसमिल्लाह करके पहना दीजिएगा।"

नाहीद भाभी बोली—"शीरीं को मैंने अँगूठी पहना दी है।"

शीरीं की अम्माजान ने कहा—"अगर लड़का कल आ जाता और यहीं अँगूठी पहना दी जाती तो क्या बुरा था।"

बड़े मियाँ ने कहा—"अँगूठी पहनकर आ जाए तो क्या बुरा है। मैं इस कारण यह अँगूठी इस समय भेज रहा हूँ कि मेरे विचार से यह घड़ी शुभ है, सम्भव है कि कल यह बात न हो।"

शीरीं के अब्बाजान ने संकेत किया और मैंने यह अँगूठी ले ली। इसके बाद बड़े मियाँ ने कहा—"मुझे नाहीद बेटी ने बताया है कि मैं यह बात किसी खास वजह से इस वक्त मुराद से न कहूँ। मैं इसका ध्यान रखूँगा और आप भी उससे न कहिये, इसलिए कि वह साहबजादे अगर मेरे बेटे न होते तो मैं उन्हें खरजादा कहता। अरे यह क्या आ रहा है—चाय ? लो भई पहले मुँह मीठा करो, फिर चाय पियो मुबारक हो।"

रियाज अपनी खिचड़ी पकाने में पूरी तरह व्यस्त थे और मुराद को शादी हो जाने के बाद से यह खिचड़ी उन्नति करके पुलाव बन चुकी थी। वह हजरत दिन रात न जाने क्या-क्या ख्याली पुलाव दम धरते रहते थे और मुसीबत मेरी यह थी कि जहाँ उन्होंने मुझे अकेला पाया। शुरू कर दी अपनी खुराफात। कई बार निश्चय किया कि सब कुछ साफ-साफ कहकर उनकी समस्त अभिलाषाओं पर पानी फेर दूँ परन्तु मैं जिस ड्रामाई ढंग से इस नाटक पर ड्राप सीन डालना चाहता था उसका समय अभी न आया था। दूसरे मैं इन दिनों मसरूफ भी बहुत हो गया था। इसलिए कि अन्जुम की अम्मी और बहन दोनों आ चुकी थीं और नाहीद भाभी के परामर्श से उन्हें एक अलग मकान में इसलिए ठहरा दिया गया था कि कहीं उनके यहाँ रहने से वह भाँडा न फूट जाए जिसे अब तक रियाज से छुपाया गया था। अंजुम को भी जानबूझ कर रियाज मंजिल से उठा दिया गया था ताकि वह अपनी अम्मी के साथ रहकर शादी का उचित ढंग से प्रबन्ध कर सके। फिर यह भी कि सिर्फ उसके कारण रियाज मंजिल में शीरीं के आना जाना बंद न होने पाए जो अब अत्यन्त आवश्यक हो गया था। सोचा यह था कि रियाज जिस प्रकार अब तक धोखे में पड़े रहे हैं, अन्तिम समय तक इसी प्रकार पड़े रहें। आज भी वह मुझे एकान्त में पाकर आ गये मेरे पास और इधर-उधर देखकर बड़े धीमे स्वर में बोले—"तुम देख रहे हो शहाब ! जब से मुराद की शादी हुई है और शीरीं इस खतरे से मुक्त हुई हुई हैं। वह कितनी प्रसन्न नजर आती है। बात-बात पर हँसी पड़ती है। फूल की भाँति खिली जाती है और उन नजरों को तो मैं ही कुछ समझ सकता हूँ जो मेरी ओर उठती हैं।

मैंने कहा—"हुजूर ! थोड़ा बहुत आपका यह न्याजमन्द भी ताड़ ही लेता है। कल ही की बात लीजिये, किस अन्दाज से उसने चाय बनाकर दी थी आपको।"

रियाज ने बात काटकर कहा—"अच्छा-अच्छा वह विशेषता तुम ने भी मार्क कर ली। नाहीद ने जब यह कहा है कि वह सिर्फ एक चमचा शकर पीते हैं तो किस ढंग से उसने जवाब दिया है कि जी हाँ सिर्फ आप ही ने नहीं थोड़ा बहुत मैंने भी उनकी आदतों को समझ लिया है।"

मैंने कहा—"मगर मैं तो उस वक्त डर गया था कि कहीं नाहीद भाभी न ताड़लें।"

रियाज ने मुँह बनाकर कहा—"अजी तौबा कीजिये। यह चतुरता उन में कहाँ जो आपकी छोटी भाभी में है।"

मैंने मुश्किल से अपनी हँसी रोककर कहा—

छोटी भाभी ?—अच्छा-अच्छा—आपने तो बेहद पेशगी यह रिश्ता कायम कर लिया ?"

रियाज ने गम्भीरता से कहा—"जो बात होनी ही है उसमें बेकार के संकोच की क्या जरूरत है। भाभी तो वह तुम्हारी बनकर ही रहेगी।"

मैंने कहा—"मैं तो इसलिए कह रहा था कि कालेज के जमाने से लेकर अब तक सिर्फ एक भाभी की वजह से मैं इतनी भाभियों का देवर बन चुका हूँ कि अगर उन सब भाभियों से तुम्हारी शादी हो जाती जिन्हें तुम ने भाभी कह कर मुझ से मिलाया है या मुझे बताया है कि यह तुम्हारी भाभी है तो भाभियों की एक पूरी फौज के तुम सेनापति होते।"

रियाज ने हँसकर कहा—"खैर वह कालेज की बातें जाने दो। यह बताओ कि शीरीं के मौजूदा स्वभाव, उसकी प्रसन्नता और अधिकतर यहाँ आने-जाने से तुम क्या मतलब समझते हो ?"

मैंने कहा—"खुश तो वाकई वह बहुत है और आजकल इधर के चक्कर भी बहुत काट रही है। जाहिर है कि इसका मतलब वही हो सकता है जो तुम समझ रहे हो। मगर तुमने इस से डायरेक्ट भी कोई बात की इन दिनों में।"

रियाज ने कुर्सी के हत्थे पर हाथ मारकर कहा—"कैसे करूँ बात। हर वक्त वह जो सिर पर सवार रहती हैं तुम्हारी सेकिण्ड हैंड भाभी।"

जी चाहा कि एक ऐसा थप्पड़ इस शख्स के रसीद करूँ कि बस-बतीसी निकल पड़े, परन्तु सब्र से काम लेते हुए भी यह तो कह ही दिया—"रियाज अब तुम इन्हें सेकिण्ड हैंड भाभी कह रहे हो। हो सकता है कि तुम्हें ऐसा कहते हुए दुःख न हुआ हो, पर मुझे बेहद तकलीफ हुई। अगर उस निर्दोष स्त्री को यह पता चल जाए कि उसके पति की राय उसके बारे में अब यह है तो उसे कितना दुख होगा।"

रियाज ने बेशर्मी से कहा—"लाहौलविलाकुवत ! मैं तो मजाक में कह रहा था। मगर एक बात है मौलाना कि नाहीद से आपकी यह हमदर्दी है खतरनाक। ऐसा न हो कि इसी हमदर्दी में आप बना बनाया खेल बिगाड़ कर रख दें।"

मैंने कहा—"भई मुझे उनसे हमदर्दी क्यों होती। उनसे जो कुछ भी सम्बन्ध है सिर्फ तुम्हारी वजह से है अगर तुम्हें ही उनसे कोई हमदर्दी नहीं तो फिर मैं कौन होता हूँ हमदर्दी करने वाला।"

रियाज ने उलझ कर कहा—"यार यह वक्त इन बेकार बातों का नहीं है। हमदर्दी मुझे भी है नाहीद के साथ। मगर एक तरफ हमदर्दी है और दूसरी तरफ जिन्दगी का सवाल। तुम शायद मेरी इस बात को भावुकता समझ रहे होगे मगर सच यह है कि मैं अब शीरीं के बिना जिन्दा नहीं रह सकता। रह गया नाहीद का सवाल उसके लिये दोनों हालतों में बहरहाल मुझे मरना है यानी शीरीं को हासिल कर लूँ तो भी और न कर सकूँ तो भी।"

मैंने कहा—"न हासिल कर सकने का तो अब कोई सवाल ही नहीं। तुम इधर बेचैन हो तो उधर उनके भी तेवर यही कह रहे हैं।"

इसी समय शीरीं की गाड़ी आकर रुकी और रियाज ने कुर्सी से उछल कर कहा—"वह आ गई ! उसका जी नहीं लगता अब घर पर।"

मैंने कहा—"बेवकूफ न बनो और इस तरह बेसब्री से काम न लो। मेरी राय यह है कि तुम जरा यहीं बैठे रहो।"

रियाज ने बड़ी उदासीनता से कहा—"मतलब यह है कि मैं न मिलूँ उससे, जबकि वह सिर्फ मेरे लिये ही आई होगी इस वक्त।"

मैंने कहा—"मैं जानता हूँ मगर चाहता यह हूँ कि तुम थोड़ी देर अपने पर कण्ट्रोल किये बैठे रहो, ताकि मैं अन्दाजा तो कर लूँ कि वह तुम्हें मौजूद न पाकर कितनी बेचैन होती है, इसके बाद मैं तुम्हें खुद बुला लूँगा।"

रियाज ने मजबूरी में कुर्सी पर दोबारा बैठते हुए कहा—"यह अन्दाजा करने में ज्यादा देर न लगाना।"

मैं रियाज से पीछा छुटाकर वहाँ पहुँच गया जहाँ नाहीद भाभी और शीरीं दोनों बैठी न जाने किस लतीफे पर हँस रही थी। मुझे देखकर नाहीद भाभी ने कहा—"वह कहाँ है इनके गाहक साहब।"

मैंने चुप रहने का संकेत करके, करीब बैठते हुए आज की बातें सेन्सर करने के बाद इन दोनों को सुनाईं। इन बातों को सेन्सर इसलिए किया गया कि इस स्कीम में शामिल रहने के बावजूद भी नाहीद भाभी इन सेकिण्ड हैंड किस्म की बातों को मुश्किल ही से सहन कर सकती थीं। जब मैंने सारी बातें सुना दीं तो नाहीद भाभी ने कहा—"मगर मजा नहीं आ रहा—शीरीं को चाहिए कि और ज्यादा लगावट की बातें करे और शहाब भाई ईमान से कहिएगा कि मैं इस सम्बन्ध में कैसा ऊँचा रोल अदा कर रही हूँ।"

मैंने कहा—"जवाब नहीं है भाभी आपका। मैं तो दिल-ही-दिल में प्रशंसा करता हूँ आपकी इस सरलता की कि कैसा कुदरती भोलपन अपने चेहरे पर बरसाती हैं।"

नाहीद भाभी ने कहा—"मैं किस काबिल हूँ यह सब आप ही की महरबानी है।"

मैंने कहा—"मैं आदाब बजा लाता हूँ। लेकिन इस वक्त तो मैं यह कहने के लिये आ गया हूँ कि आज शीरीं साहबा को और अधिक दिखाना चाहिए अपनी लगावट को।"

शीरीं ने सिमट-सिमटा कर कहा—"भई वल्लाह! देखिए मैं कोशिश करूँगा।"

मैंने कहा—"कोशिश की बात नहीं है। हमारे पास वक्त बहुत कम है। शादी की तारीख सिर पर आ गई है और इससे पहले ही हमें यह नाटक

खत्म करना है। अब तो ड्रामे की रफतार तेज करनी पड़ेगी।"

नाहीद भाभी ने हल्का सा संकेत किया और मैंने देखा कि रियाज में आखिर जुदाई न सहन हो सकी और बजाए इसके कि मैं उन्हें बुलाता वह खुद ही माथे पर हाथ फेरते सीटी बजाते इधर चले आए। उन्हें देखते ही शीरीं ने कहा—"जनाब आप मुझे इस व्यवहार का मतलब समझा दीजिए कि मेहमान बैठा झक मारता रहे और आप उसकी ओर ध्यान भी न दें। यह ठीक है कि—"

"कद्र खो देता है हर रोज का आना-जाना।"

मगर............"

रियाज बीच ही में बोल पड़े—'मुझे तो खबर भी न हुई कि आप आई हुई हैं। दूसरे सवाल यह है कि आप इस घर में अपने को मेहमान क्यों समझ रही हैं।"

शीरीं ने कहा-—"मेहमान नहीं तो और क्या समझूँ। जो घर अपना न हो उसमें आदमी मेहमान की हैसियत से आ-जा सकता है।"

नाहीद भाभी बोलीं—"अच्छा तो आज यह मालूम हुआ कि तुम इस घर को अपना घर नहीं समझतीं।"

शीरीं ने कहा—"जी हाँ मैं इतनी ना समझ नहीं हूँ कि वास्तविकता के विरुद्ध योंही रस्म के तौर पर यह बात मैं भी कहने लगूँ। मगर मैंने कहा हजूर! मलमल के इस कुर्ते के नीचे जालीदार बनयायन की बहार तो हम देख चुके अब मेहरबानी करके सूइटर पहन लीजिए। यह मौसम बड़ा खतर-नाक है।"

नाहीद भाभी ने कहा—"कितनी बार मैं भी देख चुकी हूँ।"

रियाज बोले—"मगर इस तरह एक बार भी न कहा, लीजिए मैं अभी पहने लेता हूँ।"

यह कहकर वह तो गए सूईटर पहनने और मैंने उठकर शीरीं को शा-बाशी दी कि आज उनसे न केवल अदाकारी का कमाल दिखाया है बल्कि

तुम्हारे यही दो-एक डाइलाग रियाज को हफ्तों तड़पाने के लिए काफी है। उम्मीद तो यह थी कि यह दिलचस्प सीन अभी और लम्बा चलेगा मगर खुदा भला करे मुराद साहब का कि उन्हें भी इसी वक्त अपनी बेगम समेत आ टपकना था। वह आए तो उनके आते ही वातावरण बदल गया, और रियाज जब एक भड़कदार सूईटर पहन कर बाहर निकले हैं तो यहां मौसम ही बदल चुका था। मगर इस वक्त भी शीरीं ने उन्हें आँख के इशारे से कुछ इस प्रकार मना किया कि रियाज तो बाग-बाग हो गए और मैं स्वयं उसके इस संकेत पर फड़क उठा कि यह और सेर का सवा सेर हुआ।

रियाज मंजिल में आज कुछ अजीब सा षड्यन्त्रकारी वातावरण था। एक ओर नाहीद भाभी शीरीं और अंजुम में कुछ कानाफूसी हो रही थी कि अब जब शीरी की तुम मे दिलचस्पी कायम हो चुका हूँ तो तुम आखिर प्रतीक्षा कि बात की कर रहे हो। शीरीं से खुद सीधी बात क्यों नहीं करते और उससे क्यों नहीं पूछते कि इस सम्बन्ध में वह क्या चाहती है और तुम से विवाह करने के लिए वह क्या सुझाव परस्तुत करती है। रियाज आज अत्यन्त प्रसन्न थे। इसलिए की शीरीं ने आते ही उनमे पूछा था कि यह उन्नाबी रंग की साड़ी और उस पर यह काला बलाउज कैसा दिखाई दे रहा है। और इस सवाल को वह अपनी हैसियत से कुछ ज्यादा ही समझ कर सिवाए "माशल्लाह" के उससे तो कुछ न कह सके पर अब बैठे मेरा सिर खा रहे थे—"

"यार अब उठकर देख तो सही इस सादगी में किस कदर पुरकारी नजर आ रही है। महिलाओं में सूती कपड़े पहनने का जो आन्दोलन चल रहा है उससे प्रभावित होकर इसने सूती लिबास कुछ इस ढंग से पहना है कि देखने वाले की नजर रेशमी बनकर रह जाती है।"

मैंने कहा—"बल्कि यों कहो कि देखने वाला "रेशांखतमी" होकर रह जाता है खैर आज तुम अवसर पाकर उससे दो बातें कर ही लो।"

अपने एक हाथ को दूसरे हाथ से मसलते हुए बोले—"यार मैं क्या बात करूँगा उससे······कुछ बताओ तो सही कि शुरू किस तरह करूँ।"

मैंने कहा—"पहले कहना "अस्सलामुअलेकुम" फिर कहना कि आपकी खैरियत खुदावंद करीम से नेक मतलूब हूँ······एहमक कहीं के—"

रियाज बोले—"नही मेरा मतलब यह है कि मैं बिना झिझक कह दूँ कि यह आंख मिचौली कब तक चलेगी।"

मैंने कहा—"बिल्कुल उचित प्रोग्राम है। पर तुम खुद तजरबेकार और इस मैदान के घिसे-पीटे खिलाडी हो, मुझ से चाहते हो कि मैं लुकमान हकीम

बनकर तुम्हें पाठ पढ़ाऊँ ।"

रियाज ने आमादा होते हुए हिचकिचाकर कहा—"मगर इस जल्दबाजी की जरूरत क्या है ।"

मैंने कहा—"यह बात तो मैं इसलिए न कहना था कि तुम्हें दुःख होगा, अब साफ सुनना चाहते हो तो सुनो कि जल्दबाजी की जरूरत इसलिए है कि मियाँ अंजुम की नियत में मुझे कुछ तिनके नजर आ रहे हैं और वह शीरीं को अपनी आशाओं का केन्द्र बना चुके हैं ।"

रियाज ने चिन्तित होकर कहा —"अच्छा, यानी······तो क्या शीरीं को भी इसकी खबर हो चुकी है ?"

मैंने कहा—"अभी तो नहीं हुई, हाँ आपकी इस हिचकिचाहट के कारण हो ही जाएगी । निश्चित बात है कि यदि अंजुम मुकाबले पर आ गया तो आपकी कामयाबी शायद आसान न रहे । इसलिए कि वह कुंवारा है और यह उसे अपने लिये बिलकुल आजाद पाएगी ।"

रियाज ने बड़ी गम्भीरता से कहा—"तुम्हारी राय बिलकुल ठीक है । मुझे देर न करनी चाहिए । मैं आज अवसर मिलते ही उससे यह बातें किये लेता हूँ ।"

और यह अवसर भी मैंने थोड़ी देर बाद प्राप्त कर दिया । इसलिए कि नाहीद भाभी और अंजुम को पाईं बाग की ओर भेजकर मैंने रियाज से कहा जाओ किस्मत से इस समय वह बिलकुल अकेली है । नाहीद भाभी अंजुम के साथ कहीं चली गई हैं ।

रियाज बड़ी फुर्ती से उठे और उस बरामदे में जा पहुंचे जहाँ शीरीं तनहा बैठी सुईटर बुन रही थी । इधर मैं भी खाने के कमरे से होता हुआ उस बेडरूम में पहुँच गया जहाँ से उन दोनों की बातें आसानी से सुन सकता था । रियाज ने जाते ही कहा—"अरे आप तनहा बैठी हैं यहाँ ? और सब कहाँ गए ?"

शीरीं बोली—"चुंकि मैं उनके साथ नहीं गई इसलिए यकीन से नहीं कह सकती कि वह दोनों कहाँ गए हैं ।"

रियाज ने कहा—"खैर मैं इस तनहाई को उपयोगी बनाने के लिए आप से एक सवाल करना चाहता हूँ। आप मेरी निगाहों का भेद तो जान ही चुकी होंगी और मैं भी आपकी भावना को काफी तौर पर परख चुकी हूँ। अब सवाल यह है कि इन हालात में यह आँख मिचोली कब तक चलेगी।"

शीरीं ने बड़ी गम्भीरता से रियाज को देखते हुए कहा—"अच्छा किया आपने यह ख्याल खुद मुझ से कर लिया वर्ना मैं आप से यह पूछना चाहती थी कि आखिर एक ऐसी गुत्थी आप क्यों उलझाते जा रहे हैं जिसके सुलझाने की कोई सम्भावना नहीं।"

रियाज बोले—"कोई गुत्थी नहीं है और न कोई उलझन है, बस आपके हाँ करने की देर है। फिर देखिये कि मैं क्या करता हूँ। आप नाहीद को सबसे बड़ी रुकावट समझती होंगी। मगर मैं उसे अपने और आपके बीच से हटा भी सकता हूँ।"

शीरीं ने कहा—"मुमकिन है आप पति होकर उसके साथ यह विश्वास-घात कर जाएँ पर मैं उसकी सहेली होकर उसके साथ वह गद्दारी नहीं कर सकती जो आपके विश्वसनीय मित्र आपसे साथ कर रहे हैं और आपकी आँखों पर ऐसे पर्दे पड़े हुए हैं कि आपको कुछ दिखाई नहीं देता—"

रियाज ने हैरत से पूछा—"मैं समझा नहीं आप क्या कर रही हैं! कौन विश्वसनीय मित्र और कैसे पर्दे, कुछ पल्ले नहीं पड़ा मेरे……"

शीरीं बोली—"अंजुम साहब आपके दोस्त हैं ना, बड़े गहरे दोस्त!—अगर मैं यह कहूँ कि वह आपकी पीठ में छुरा घोंप रहे हैं तो अनुचित न होगा।"

रियाज ने चिन्तित होकर कहा—"आप कहती हैं तो सच ही कहती हैं जबकि है यह अनहोनी बात। अंजुम के बारे में भूलकर भी यह विचार नहीं कर सकता।"

शीरीं बोली—"अल्ला-हो-अकबर! कितना विश्वास है। मगर जनाब मैं इस प्रकार का सलूक नाहीद के साथ नहीं कर सकती जो यह अंजुम साहब आपके साथ कर रहे हैं। अगर आप नहीं जानते कि आपके इसी घर में क्या

खेल खेला जा रहा है और इस खेल में दाँव पर आपकी इज्जत लगी हुई है तो जरा अपने पाईं बाग तक तकलीफ कीजिये और देख लीजिए अपनी पतिव्रता बीवी और अपने विश्वासनीय मित्र को कि किस तरह एक-दूसरे के हो जाने का वादा कर रहे हैं।"

रियाज तड़प कर खड़ा हो गया—"यह आप क्या कह रही है ?"

शीरी ने बड़े सतोष से कहा—"हाथ कंगन को आर्सी क्या है जो कुछ आप देख सकते हैं उसे सुनने में क्यों समय खराब कर रहे हैं।"

रियाज पर तो जैसे पागलपन का दौरा सा पड़ गया। वह झपट कर अपने कमरे में गया और क्षण भर में बन्दूक लिये वापस आया। इस बीच में मैं बाहर आ चुका था। मैंने उसके तेवर देखकर कहा—"क्या आत्महत्या का इरादा है ? पागल तो नहीं हो गए हो ?"

रियाज बोले—"मैं दोनों को मौत की नींद सुलाकर आत्महत्या करूँगा। तुम नहीं जानते इस घर में क्या हो रहा है। वह तुम्हारा अंजुम नाहीद के साथ रंगरलियां कर रहा है।"

मैं ने बन्दूक उसके हाथ से छीन ली—"पागल इंसान ! उन दोनों ने तुम्हारा रास्ता खुद ही साफ कर दिया। जो चीज तुम्हारे प्रोग्राम में आड़े थी उसे खुद ही दूर हो गई। तुम्हें तो शुक्र करना चाहिए······"

रियाज ने झल्लाकर कहा—"नहीं यह नहीं हो सकता, मेरी गैरत इसे गवारा नहीं कर सकती। मैं गोली मार दूँगा दोनों को।"

बन्दूक तो मैं छीन ही चुका था, मगर वह जोश में पाईं बाग की ओर बढ़ता ही गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे था कि कहीं सचमुच कुछ कर न बैठे। एक जगह पहुँचकर मैंने उसे रोका और धीरे से कहा—पहले चुपचाप सुन लो कि दोनों में बात क्या हो रही है।"रियाज मेरे कहने पर ठिठक गया और दबे पाँव आगे बढ़कर एक झाड़ी की आड़ में हम दोनों छुप गए। यहां से नाहीद भाभी और अंजुम दोनों साफ दिखाई दे रहे थे और उनकी आवाज भी पूरी तरह सुनी जा सकती थी। नाहीद भाभी अंजुम से कह रही थीं—"खुदा करे

तुम्हारी मुहब्बत हमेशा इसी तरह जगमगाती रहे जिस तरह अंगूठी और खुदा करे इस मुहब्बत में इतनी ही सच्चाई हो जितनी उस हीरे में ... मैं तो हीरे का पत्थर होना भी देख चुकी हूं और यह अन्दाजा भी लगा चुकी हूँ कि हीरा कामयाब मुहब्बत के लिए अगर अमूल्य उपहार है तो नाकाब मुहब्बत के लिए घातक विष भी है।"

अंजुम ने कहा—"मगर मेरी मुहब्बत ऐसी हरजाई नहीं हो सकती। खुदा को हाजिर-नाजिर जान कर सच कहता हूँ कि किसी मुहब्बत-भरे दिल को दुखाने से पहले मैं मर जाना पसन्द करूँगा।"

रियाज मेरा हाथ झटक कर बिजली की तरह कौंदा और बादल की तरह कड़क कर बोला—"इस मौत का तुम्हे ज्यादा इन्तजार न करना पड़ेगा वह तुम्हारे लिए आ पहुंची है। अब मुहब्बत का यह बन्धन तुम दोनो उस दुनिया में जोड़ना जहाँ मैं तुम्हे रवाना कर रहा हूँ।"

उसने मेरे हाथ मे बन्दूक छीनी और फायर कर दिया। मगर जवाब में अंजुम की चीख नहीं बल्कि कहकहा सुनने को मिला और अंजुम तो अंजुम नाहीद भाभी को भी वह हँसता हुआ देखकर वह चकराकर रह गया। उसे क्या मालूम था कि मैने उससे बन्दूक छीन कर कारतूस निकाल लिये थे। वह अभी फटी-फटी नजरो से मुझे देख ही रहा था कि एक तरफ से शीरीं ने आकर अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा—"मुहब्बत मुझ से है और यकीन दिला रहे है आप नाहीद को।"

अंजुम बोला—"इसलिए कि तुम्हे तो पहले ही यकीन है मगर यह म... की बेवफाई से बहुत भयभीत है।"

शीरीं ने कहा—"लाओ मेरी अंगूठी मुझे पहनाओ।"

नाहीद ने आगे बढ़कर रियाज से कहा—"मैंने कहा ऐसी अंगूठी मेरे लिए भी लाओ ना—"

रियाज की समझ में कुछ नहीं आ रहा था वह पहले एक बेमा... हँस रहा था आखिर पैर पटकता हुआ चला गया। दूर तक हम सब के कहकहे उसका पीछा करते रहे।